Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation Chennai

प्रताप नारायण श्री वास्तव

# वन्दिता

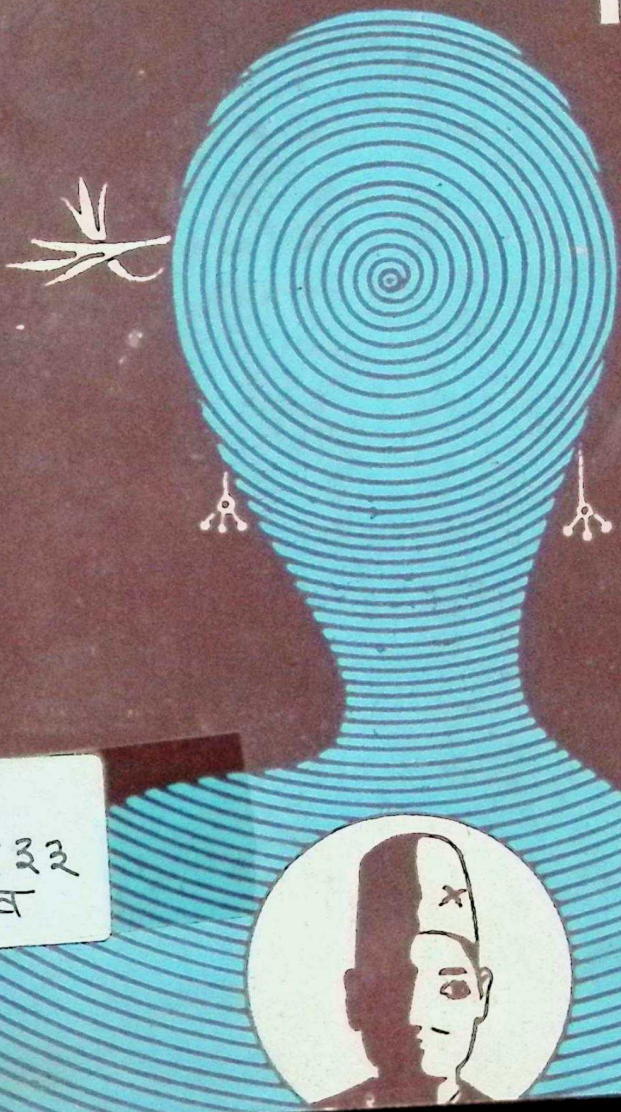

२१.४३३
८६व

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# वंदिता

प्रतापनारायण श्रीवास्तव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

## प्रतापनारायण श्रीवास्तव

स्वर्गीय श्रीवास्तव जी संभ्रान्त कायस्थ परिवार में जन्मे प्रेमचन्द युग के संभवतः सबसे सशक्त कथाकार रहे हैं। अपने सामाजिक उपन्यासों के लिए उन्होंने प्रेमचन्द की भाँति व्यापक भूमि नहीं चुनी है, बल्कि समाज का जो वर्ग उनका अत्यधिक जाना पहचाना था अथवा जिस वर्ग से उनका सीधा संपर्क रहा, उसे ही उन्होंने अपने उपन्यासों का विषय बनाया है। प्रस्तुत उपन्यास श्रीवास्तवजी का ऐतिहासिक उपन्यास है।

विदा, विजय, विकास, बयालीस, विसर्जन, बेकसी का मजार आदि बहुचर्चित एवं बहुप्रशंसित रचनाएँ हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रचारक बुक क्लब
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो० बा० १०६, पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# वंदिता

Digitized by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भारत के प्रथम बुक क्लब

प्रचारक बुक क्लब

हिन्दी प्रचारक संस्थान

पो. बा. १०६, पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१ के लिए

विजय प्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित तथा

न्यू कमला मुद्रण वाराणसी में मुद्रित

सन् १९८१

---

Pratap Narayan Srivastava

VANDITA

Novel

मूल्य १०.००

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

: १ :

अस्ताचल चूड़ावलम्बी सूर्य की सुनहली किरणें प्रत्येक वस्तु को अपने असली आकार से कई गुना लम्बी छाया में परिवर्तित कर रही थीं। सहज मन्थर गति से चलते हुए उस घुड़सवार की परछाँई भी उत्तरोत्तर लम्बी होती जा रही थी। घोड़े और सवार की सम्मिलित छाया एक अद्भुत आकार की सृष्टि बना रही थी। घोड़ा, जो एक पहाड़ी टट्टू था, इस समय बृहत्काय हो रहा था। उसकी छोटी-छोटी टाँगें विशाल स्तंभों का भ्रम पैदा कर रही थीं और सवार की आकृति पहाड़ी के अञ्चल में दूर-दूर तक फैले हुए साल वृक्षों की झुरमुटों में खोई जा रही थी। चारों ओर से संध्या की कालिमा शनैः शनैः दून की पहाड़ियों को अपने निष्प्रभ अञ्चल में छिपाने के लिए अग्रसर होने को तैयार हो रही थी। पक्षियों का कलरव अपने-अपने नीड़ों में उनके प्रवेश करने के पहले, कुछ अधिक प्रखर होकर सवार की चिन्तित मुद्रा में कोई प्रभाव डालने में असमर्थ हो रहा था।

उस धूमिल छाया में सवार का चिन्तामग्न मुख उसके मस्तिष्क में उमड़ती हुई विचारावलि को क्षण-क्षण में चित्रित करने लगा। उसने एक दीर्घ निश्वास लेकर कहा—"अब फिरंगियों से युद्ध करना ही होगा। वे निरन्तर 'युद्धं देहि-युद्धं देहि' के चीत्कार से हम नैपालियों को रणभूमि में उतरने के लिए बाध्य कर रहे हैं। उनकी चुनौती का सामना करना ही पड़ेगा। इन विदेशियों ने जिस कूटनीति, विश्वासघात और छल-प्रपंच का सहारा लेकर मुगल साम्राज्य को शनैः शनैः हड़प लिया, उसी तरह वे वीर-प्रसूता नैपाल की भूमि को अपने अधीन करने का स्वप्न देखने लगे हैं, परन्तु हम जीते जी ऐसा नहीं होने देंगे। फिरंगी [illegible] की जाति

Digitized by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नहीं है। भारतीयों से उन्हें पग-पग पर हराया है, किन्तु आपसी ईर्ष्या, द्रोह और वैमनस्य का लाभ उठाकर भाई को भाई से लड़ाया, और उन्हीं के बल बूते पर उत्तरी भारत को अपने अधीन कर लिया। कहने को पंजाब स्वतंत्र है, और शायद जब तक महाराजा रणजीतसिंह जीवित हैं तब तक वह स्वतन्त्र रह सकेगा। क्या ही अच्छा हो यदि पंजाब और नैपाल सम्मिलित होकर उनका मुकाबला करें, और तब परिस्थिति बदल सकती है, और इन विश्वासघाती फिरंगियों को उनके देश खदेड़ा जा सकता है। किन्तु क्या ऐसा होना सम्भव है? फिरंगी, व्यापारिक संधियों के बहाने अपने गुप्तचरों का प्रवेश कराते हैं, और वे राजा तथा सामन्तों में फूट के बीज बो देते हैं। भाई से भाई को लड़ा कर वे पंच बनते हैं, तथा बन्दरी-न्याय से धीरे-धीरे वे समस्त राज्य को हड़प जाते हैं। ऐसी ही भूल हमसे भी एक बार हो चुकी है। सन् १७९२ में ईस्ट इंडिया कम्पनी के तत्कालीन शासक लार्ड कार्नवालिस ने नैपाल से व्यापारिक संधि करने का प्रस्ताव किया, और दुर्भाग्यवश नैपाल नरेश ने उसे स्वीकार कर लिया। परिणामस्वरूप कम्पनी सरकार का गुमाश्ता कप्तान कर्क पैट्रिक वाणिज्य दूत बन कर हमारे देश में रहने के लिए आ गया। उसने आते ही अपना असली रूप दिखाना आरम्भ कर दिया। भाई-भाई में फूट का बीजारोपण करने लगा। नैपाल की जनता ने उसकी असलियत जानकर उसके काठमांडू में रहने का उग्र विरोध किया, जिससे लाचार होकर महाराजा को उसे विदा कर देना पड़ा। यदि कहीं वह कुछ दिनों और रह जाता, नैपालियों की शक्ति, जो अब उनसे लोहा लेने को सन्नद्ध है, छिन्न-भिन्न होकर बिखर जाती, तथा हमारी पुण्य-भूमि पर उनका अधिकार हो जाता।"

अश्वारोही ने पुनः एक लम्बी साँस लेकर अपने गन्तव्य मार्ग की ओर देखा तथा अन्दाजा लेना चाहा कि अभी उसे कितनी दूरी तय करना अवशेष है। पथ बड़ा ऊबड़-खाबड़ था। पहाड़ी क्षेत्र पर उगे हुए नाना प्रकार के कँटीले पौधे पग-पग पर पथिकों के सामने आगे बढ़ने की समस्या उत्पन्न करते थे। परन्तु यह अश्वारोही उन बाधाओं से लड़ता-भिड़ता

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निरन्तर आगे बढ़ने में संलग्न था। विचार पुनः उसके मस्तिष्क में मँडराने लगे। वह सोचने लगा—"जिस प्रकार मैं इन कँटीले पौधों को रौंदता आगे बढ़ रहा हूँ, उसी प्रकार हमारी वीर-वाहिनी फिरंगियों को पदाक्रान्त करती हुई आगे बढ़ेगी। नैपाल के रणबाँकुरों की भुजाली अनेक दिनों प्यासी रहकर अब इन विदेशियों के रक्त-पान से तृप्त होगी! हमारे महाराजाधिराज गीर्वाणयुद्ध विक्रम शाह तथा उनके सेनापति एवं प्रधान मंत्री भीमसेन थापा इन फिरंगियों की कुचालों को अच्छी तरह समझते हैं। उनका प्रयत्न है कि भारतीय राजाओं के साथ मिल एक संयुक्त मोर्चा बना, इन पर चारों ओर से आक्रमण कर भारत के बाहर निकाल दें। इसी अभिप्राय से उन्होंने अपने-राजदूतों को पंजाब, महाराष्ट्र, अवध, हैदराबाद आदि देशों में भेजा, परन्तु ये सब उनके चंगुल में फँसे हुए हैं, तथा आपसी द्रोह, वैमनस्य और ईर्ष्या से इतने ओत-प्रोत हैं कि हमारी बातें उन्हें नहीं सुहातीं और न एक साथ मिलकर काम करने की सोचते हैं। चाचा भीमसेन जी ने मुझे पंजाब भेजा था, किन्तु क्या मुझे सफलता मिली? हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी राजाओं का पक्ष लेकर नैपाल को ही बुरा बनाने लगे। फिरंगियों का जादू उसके सिर पर चढ़कर बोल रहा था। पंजाबी दीर्घकाय अवश्य होते हैं—वे भी जन्मजात वीर होते हैं, परन्तु दूरगामी योजनाओं पर ध्यान देने का कष्ट नहीं करते। वे नैपालियों को बचकाना समझ कर घृणा भी करते हैं। उन्हें हमारे शौर्य तथा साहस पर तनिक विश्वास नहीं है। रणजीतसिंह जी एक महावीर सेनानी हैं। उन्होंने अपनी सैन्य-शक्ति में आशातीत वृद्धि की है—तथा उसको फिरंगियों की युद्ध-पद्धति से शिक्षित भी किया है। पंजाब और नैपाल की शक्तियाँ एकाकार होकर इन धूर्त फिरंगियों को कम-से-कम उत्तरी भारत से तो खदेड़ ही सकती हैं—परन्तु युद्ध के पहले ही हिस्सा-बाँट की हम सोच ही नहीं सकते, और इसी की आड़ लेकर उन्होंने हमारे प्रस्ताव को ठुकरा दिया। शायद फिरंगीयों के गुप्तचरों को इसकी सूचना मिल गई और उन्होंने किसी यत्न से हमारी वार्ता भंग करवा दी। मेरी बात पर उन्हें

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विश्वास न हुआ। वे इनको अजेय समझते हैं; किन्तु हम नैपाली उनको भुनगा समझ कर अवश्य पीस डालेंगे। फिरंगियों को अपनी तोपों तथा बन्दूकों पर भरोसा है, परन्तु हमारी भुजालियों का जौहर उन्होंने नहीं देखा। जिस दिन वे इनकी रक्त-लिप्सा देख लेंगे, उस दिन हमारा शौर्य देखकर चकित रह जायेंगे। इसमें संदेह नहीं कि नैपाली छोटे डीलडौल के हैं--किन्तु क्या वे जानते हैं कि इन छोटे शरीरों में कितनी अग्नि भरी हुई है। वह पशुपतिनाथ के पाशुपत अस्त्र की अग्नि है जो बुझना नहीं जानती, और शत्रुओं की सेनाओं को जलाकर क्षार कर देती है। जिस देश के निवासियों की रक्षा स्वयं पशुपतिनाथ करते हों--उसका बाल बाँका करने वालों का जन्म न हुआ और न कभी होगा। अजेय स्वामी को अपने अनुचरों को भी अजेय बनाना पड़ता है, नहीं तो उसकी अजेयता किस प्रकार सिद्ध होगी? नैपाल इन फिरंगियों से कभी पराजित होकर पदाक्रान्त नहीं होगा। हम अवश्य विजयी होंगे और इनका दर्प चूर-चूर करेंगे।"

इसी समय एक हरिणी अपने शावक के साथ भागती हुई निकल गई। अश्वारोही अपने वाहन के साथ चौंक पड़ा और सूखे पत्तों की खड़खड़ाहट उस भयानक निस्तब्धता को कम्पित करने लगी। अबतक पक्षियों का कल-रव शान्त हो चुका था और संध्या तारकों के दीप-पुञ्जों के साथ राकेश की आरती उतारने के लिए कलूँगा दुर्ग के प्राचीर पर उतर आई थी। आकाश को बीनों की भाँति छूने का प्रयत्न करते हुए साल के वृक्षारण्य में रजनी झुरमुटों से झाँक रही थी तथा अपनी सहेली सन्ध्या की बाट जोह रही थी। इसी समय चार मुख बाँधे जवानों ने अपने भालों की नोकों से घोड़े और सवार को रोकते हुए नैपाली भाषा में आदेश दिया--"ठहरो।"

अश्वारोही ठहर गया और घोड़ा भी वहीं पथरा गया, किन्तु चपला की गति से उसने लगाम छोड़कर अपनी दोनों जेबों से दो पिस्तौलें निकाल कर उनमें से दो को छापते हुए नैपाली भाषा में पूछा--"तुम लोग कौन हो? ऊपर हाथ उठाओ।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भालों को छोड़ वे दौड़कर उसके चरणों से लिपट गए और उसी भाषा में बोले—"क्षमा, क्षमा महाराजा। हम समझे कि फिरंगियों का कोई जासूस है।"

और उन्होंने अपने मुँह खोल डाले।

अश्वारोही ने चकित होकर कहा—"मानबहादुर, ये लोग तुम्हारे आदमी हैं?"

"आज्ञा, महाराजा।"

"यह पिस्तौल लो, अपनी कारगुजारी का पुरस्कार।"

मानबहादुर ने पिस्तौल लेकर उसके चरण स्पर्श किये।

अश्वारोही उतर पड़ा और उनके साथ-साथ चलने लगा। उसके घोड़े की लगाम मानबहादुर के एक सैनिक ने लपक कर पकड़ ली।

मानबहादुर ने पिस्तौल अपने कमरबन्द में खोंसते हुए पूछा—'महाराज कहाँ से पधार रहे हैं? काठमान्डू से या महाराज श्री अमरसिंह के पास से।"

"दोनों ही जगहों से।"

"क्या हुक्म हासिल हुआ? इधर फिरंगियों का जोर बढ़ गया है। जासूसों ने खबर दी है कि सहारनपुर में उनकी बड़ी सेना इकठ्ठी हो रही है।"

"यहाँ—सहारनपुर में ही क्यों? उनकी योजना चारों ओर से हमारी पवित्र भूमि पर आक्रमण करने की है।"

"अच्छा!"

कुछ देर पहले का अश्वारोही चुप होकर कुछ सोचने लगा।

मानबहादुर भी कभी उनकी ओर, कभी भूमि की ओर देखकर उनका अनुसरण करने लगा।

उसने पूछा—"मानबहादुर, दुर्ग के क्या हाल हैं? कुछ गोला बारूद है?"

"महाराज, बहुत थोड़ा है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"हमारे आदमी कितने हैं—कितने सैनिक और कितने गृहस्थ ?"

"सैनिक तीन सौ और उनकी पत्नियाँ कुल छः सौ। बाल बच्चों को मिलाकर एक सौ और।"

"खाने की सामग्री ?"

"तीन महीनों की यथेष्ट है और खींचे-ताने चार महीनों की।"

"तुम आज कैसे आये ?"

"जब से सहारनपुर में फिरंगियों को इकट्ठा होते सुना है तब से गश्त रात-दिन की कर दी है और सत्तर-सत्तर सैनिक दुर्ग के चारों ओर पहरा देते हैं।"

"यह प्रबन्ध उत्तम है।"

"कोई पकड़ा गया ?"

"जी हाँ। एक पकड़ा गया है। वह कोई पहाड़ी है। उसी की जबानी बहुत हाल मालूम हुआ है।"

"क्या ?"

"फिरंगियों के लाट ने अवध के नवाब गाजीउद्दीन हैदर से दो करोड़ रुपए ऐंठ कर लड़ाई के लिए खर्च जुटा लिया है।"

"हूँ।"

"कलूँगा पर आक्रमण करने के लिए सेना इकट्ठा की जा रही है। दून और आस-पास के गाँवों से रसद जबरिया ली जा रही है।"

"हूँ!"

"छोटी तोपें आ गई हैं, बड़ी दिल्ली से आ रही हैं।"

इसके उत्तर में भी उसने केवल कहा—"हूँ।"

"हमने भी दुर्ग की मरम्मत शुरू कर दी है। दोहरी दीवाल बनवा रहे हैं। सामने की ओर सिंहद्वार के आस-पास गहरी खाइयाँ खोदी जा रही हैं।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"ठीक है, किन्तु वे तोपों की मार के सामने कितने दिन ठहर सकेंगी ?"

"महाराज, दुर्ग की रक्षा पत्थरों की दीवालें नहीं, वरन् हमारे शौर्य की दीवालें करेंगी।"

"यह भी तुम ठीक कहते हो। देश की रक्षा आयुधों से नहीं, बल्कि अदम्य साहस तथा लगन से होती है परन्तु आयुध भी हमारे सहायक होते हैं।"

"महाराज, हमने सैनिकों की पत्नियों को भी रण-शिक्षा देना आरम्भ कर दिया है।"

"किन्तु उनके बच्चे हैं।"

"गोदवाले बच्चों के लिए एक भुईंघरा खोद दिया है और दूसरे बड़े लड़कों को भी छोटे-छोटे काम करने की शिक्षा दी जा रही है।"

"स्त्रियों का निशाना कैसा है ?"

"वे हमसे किसी प्रकार कम नहीं हैं। केवल भुजाली चलाने में कमजोर हैं।"

भुजाली चलाने के लिए हमी लोग पर्याप्त हैं। फिरंगी तोपों और बन्दूकों के बल से लड़ते हैं। उनसे लोहा लेने के लिए हमें पक्के निशानेबाज चाहिए। हमारी एक गोली भी व्यर्थ न जानी चाहिए।"

"पशुपतिनाथ की कृपा से ऐसा ही होगा।"

"ठीक है, हमें केवल उनकी ही कृपा का भरोसा है। शक्ति के स्रोत तो वही हैं।"—कहते हुए उसने ईशान कोण की दिशा में प्रणाम किया।

"महाराज के पधारने से हमारी शक्ति दो गुनी हो जायेगी। इन फिरंगियों को इस बार मजा चखाना है। सारन, बेतिया की जमीन उनसे छुड़ानी है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"बेतिया और गोरखपुर ही नहीं, बल्कि हमें उत्तरी भारत से उन्हें मार भगाना है। अभी तक फिरंगी आपस में लड़ाकर अपना अधिकार जमाते रहे हैं, किन्तु नैपालियों में वे फूट पैदा नहीं कर सकते। नैपाल के सामन्त और जनता एक मन से हमारे साथ हैं।"

"जी हाँ महाराज। नैपाल का बच्चा-बच्चा खून का प्यासा हो रहा है।"

"कमी केवल इतनी है कि हम अकेले हैं। यदि महाराजा भीमसेन की योजना सफल हो जाती तब इन फिरंगियों को भगाते देर नहीं लगती।"

"वह योजना क्या थी महाराज ?"

"यही कि पंजाब के महाराज रणजीतसिंह, अवध के नवाब, बिहार के राजपूत, हिमांचल के जागीरदार सब मिलकर फिरंगियों के विरुद्ध जम कर खड़े हो जावें तो इन डकैतों को ठिकाना कहीं नहीं मिलेगा। मरहठों की शक्ति आपस में लड़कर यद्यपि क्षीण हो गई है, परन्तु वे अब भी यदि पारस्परिक द्वेष मिटा दें और पेशवा अथवा किसी अन्य राजा को अपना नेता चुन कर अपनी बिखरी हुई शक्तियों का एकीकरण कर लें, मैसूर के हैदरअली के वंशज तथा निजाम में सुलह हो जाय यानी इस देश के सभी राजा-महाराजा अपने को भारतीय समझें तथा फिरंगियों को विदेशी जान-कर उनका मुकाबला करें, तब इनको सात समन्दर पार अपने देश को भागना ही पड़ेगा। परन्तु ..।"

एक दीर्घ निश्वास ने उसकी मनोव्यवस्था को झंकृत कर दिया।

"क्या वह योजना असफल हो गई ?"

"हाँ।" और पुनः उसके मुख से नैराश्य का निश्वास निकल गया। थोड़ी देर बाद चुप रहकर उसने फिर कहा—"शायद पशुपतिनाथ की इच्छा है कि इन फिरंगियों को पराजित करने का श्रेय हम नैपालियों को ही मिले।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"हाँ महाराज, यही सत्य है। हमारी विजय के साथ वे दूसरे राजे भी हमारे साथ आकर मिल जायँगे जो अभी उनका साथ दे रहे हैं।"

"हमारा साथ न दें, किन्तु हमसे दुश्मनी भी तो न करें। पंजाब का रणजीतसिंह हमसे शत्रुता कर रहा है और अवध का नवाब गाजीउद्दीन हैदर अपने फिरंगी भाई के साथ विलास मग्न है। देश की परवाह किसी को नहीं है।"

अब तक वे साल वृक्षों की घनी छाया से निकल कर दुर्ग के प्राचीर के पास पहुँच गये थे। सिंह-द्वार पर अनेक सशस्त्र सैनिक पहरा दे रहे थे। मानवहादुर ने आगे बढ़कर सिंहनाद करते हुए कहा—"महाराज बलभद्र सिंह थापा की जय!"

वहाँ पर उपस्थित सभी सैनिकों ने जय-जयकार की, और जब उसकी प्रतिध्वनि दुर्ग को भेदकर उस पार तक पहुँची, तब समस्त कलूँगा दुर्ग उनकी जय-जयकार करने लगा।

सबको विदित हो गया कि बलभद्र सिंह थापा कलूँगा दुर्ग की रक्षा के लिए आ गये।

: २ :

चार अक्टूबर सन् १८१३ को म्वायरा के अर्ल को, जो भारतीय इतिहास में लार्ड हेस्टिंग्स के नाम से प्रख्यात है, ईस्ट इण्डिया कम्पनी की ओर से ब्रिटिश भारत का गवर्नर जेनरल नियुक्त किया गया। उस समय कम्पनी की आर्थिक दशा बड़ी शोचनीय थी। यद्यपि उसके पूर्ववर्ती ब्रिटिश शासक भारत के एक बड़े भूभाग पर अपना अधिकार जमाने में सफल हो गये थे, और अमानुषिक जोर-जुल्म से वे भू-राजस्व की ओट में भारतीय प्रजा को लूट-लूट कर अपना घर भर रहे थे, तथा उनका कभी न भरने-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वाला कोष मानव के पेट की भाँति सदा खाली रहता था। क्लाइव, वारेन-हेस्टिंग्स, वेलेजली आदि ने बड़ी निर्दयता से सिराजुद्दौला, मीरजाफर, मीरकासिम, अवध की वेगमों, शाहआलम आदि को दिन दहाड़े लूट कर अपने तथा ब्रिटेन के बैंक आफ इंगलैण्ड को समृद्धिशाली बनाया था और भूखी-नंगी इंगलैण्ड की जनता का आर्थिक स्तर ऊँचा उठाया था। प्रजा-रंजन की भावना से ब्रिटिश राज के सभी शासक सदैव रहित रहे। वे भारत को सोने का अंडा देने वाली मुर्गी समझते रहे और उसको जीवित रखने के लिए जितने दाना पानी की जरूरत समझते थे बस उतना ही वे प्रबन्ध करते थे। ब्रिटिश शासकों ने कभी भारतीयों को उच्च स्तर पर शासन-प्रबन्ध में शामिल नहीं किया और अपनी भाषा के द्वारा अपनी संस्कृति भारतीय जन मानस में श्रेष्ठ बताकर लादते रहे। उन्होंने कुटिल कुचक्रों द्वारा, नाना प्रकार के झूठे बहानों से भारत की सत्ता हथियाई और यह नोचा-खसोटी सन् १७५७ तक नहीं मिटी। उसके बाद जो देशी राजे महराजे बचे, वे वायसरायों की जेबखर्च का पैसा जुटाने के साधनमात्र बन गए। रेजीडेन्ट तथा चीफ मिनिस्टर के रूप में वे देशी शासकों के गले की फाँसी बने, जिससे फन्दे का खींचना सदैव उनके हाथों में रहा। जब जहाँ कोई देशी राजा राष्ट्रीय विचारों का हुआ तुरन्त ही उसे किसी न किसी बहाने राज्यच्युत कर दिया। बहाने लेकर आक्रमण करना ब्रिटिश शासकों की अपनी नीति रही है। सत्य से पराङ्मुख जितना ब्रिटेन का निवासी और शासक था तथा है, उतना संसार के किसी भू-भाग का निवासी या शासक न कभी था और न है। सत्य के आवरण में असत्य को प्रतिष्ठित करना ब्रिटिश राजनीति की परम्परा रही है और शायद सदैव रहेगी। उनकी प्रत्येक गति किसी न किसी अनीति को न्यायविहित सिद्ध करने में तत्पर रहती थी और आज दिन तक है। अस्तु।

उत्तरी भारत में अभी तक दो प्रदेश ऐसे थे जिन पर उनका शासन स्थापित नहीं हुआ था, वे थे पंजाब और नैपाल। पंजाब उस समय महाराजा रणजीतसिंह से शासित था, जो फिरंगियों से कूटनीति, राजनीति तथा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

युद्ध नीति में किसी प्रकार कम नहीं थे, और उन्होंने इनको सतलज के इस पार रखा। इस नीति को वह दैन्य अथवा मैत्री के ढोंग से परिचालित नहीं करते थे, बल्कि शिक्षित सेना से उसका पालन करवाते थे। हरीसिंह नलवा, गुलाब सिंह आदि सेनापतियों से फिरंगी उतने ही संत्रस्त रहते थे जितने उनके अन्य शत्रु। मन ही मन उनकी शक्ति से इतना घबड़ाते थे कि वे मैत्री के अतिरिक्त शत्रुता की सोच नहीं सकते थे। वे यद्यपि ललचाई आँखों से पंजाब की उर्वरा भूमि को, जो सब प्रकार से फ्रांस के तुल्य थी, देख रहे थे, तथापि उनको उस पर हाथ डालने का साहस नहीं होता था। जिस प्रकार गृद्ध किसी घायल प्राणी के मरने की राह देखता है, उसी प्रकार ये फिरंगी भी उनके निधन की प्रतीक्षा कर रहे थे। स्वयं महाराजा रणजीतसिंह उनकी निकृष्ट भावना से अपरिचित नहीं थे और उसका प्रबन्ध भी उन्होंने किया, परन्तु सरदारों और नारियों के षड्यन्त्रों से वह अपने राज्य की रक्षा करने में समर्थ नहीं हुए, और उनके बाद ही भारत की भाग्यलक्ष्मी रूठ कर विदेश चली गई। ब्रिटिश शासक कभी षड्यंत्र और कुचक्र से खाली नहीं रहे। उनके दूत चुपके-चुपके अपना काम करते रहे तथा सरदारों का मन बिगाड़ते रहे, जिसका परिणाम जो हुआ वह इतिहास की कहानी है।

नैपाल का स्वतन्त्र राज्य उनका दूसरा काँटा था। लगभग सात सौ मील दूर तक फैला हिमालय के अञ्चल की छाया में शयन करता हुआ नैपाल अभूतपूर्व वीरों की खान थी। महाराजाधिराज पृथ्वीनारायणसिंह ने आस-पास के छोटे-छोटे स्वतन्त्र जागीरदारों को पराजित कर एक शृंखलाबद्ध राज्य की नींव डाली थी। काठमाण्डू को राजधानी-पद प्राप्त हुआ और चर-अचर के स्वामी पशुपतिनाथ की प्रतिमा स्थापित कर एक सुदृढ़ राज्य उन्होंने स्थापित किया।

महाराजाधिराज पृथ्वीनारायणसिंह १७७४ ई० में सिंह से युद्ध करते समय मारे गए। उन्होंने अपने पुत्र सिंह प्रताप शाह के शासन के लिए कासकी, कृष्णा गण्डकी, सप्त गण्डकी, रिसिंग, मीरकोट, गढ़ों कोट, पर्यूं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धुवाकोट, अरुण नदी तथा पूर्व में सिक्किम राज्य तक का भू-भाग छोड़ा। महाराजाधिराज सिंह प्रताप शाह ने मोरङ्ग देश को भी जीत लिया। वे अपने पिता के पदांकों पर चलने वाले थे तथा सिक्किम को अपनी सीमा में मिला लेने की अभिलाषा अपने पिता की भाँति रखते थे और उसे लेकर पितृ ऋण चुकाना चाहते थे, किन्तु उनकी अल्प वयस में मृत्यु इस कार्य में बाधक हुई और एक वर्ष कुछ महीने राज्य कर वह भी काल कवलित हुए।

इनके पुत्र रणबहादुरशाह अभी नाबालिग थे। इसलिए उनकी माता—राजमाता राजेन्द्रलक्ष्मी ने राज्य-संचालन किया तथा चाचा बहादुरशाह को संरक्षक बनाए रखा, किन्तु जब उनकी ईमानदारी में अन्तर देखा, उन्होंने उसे बेतिया भगा दिया। दुर्भाग्य से वह सन् १७८६ ई० में केवल दस वर्ष राज्य कर मर गयीं।

उनके बाद रणबहादुरशाह ने शासन की बागडोर अपने चाचा बहादुर शाह को बुलवा कर सौंपी। बहादुरशाह ने अनेक प्रदेशों को अपने राज्य में मिला लिया। सिक्किम को विजय करने की आकांक्षा से वह भी मुक्त नहीं रहे, तथा १७८८ में सैनिक आक्रमण कर उसके दक्षिण-पश्चिम भाग पर अधिकार कर लिया। सिक्किम तब तिब्बत और चीन की शरण में गया और फिर उन्होंने तिब्बत को भी पराजित किया तथा चीन के साथ पृथक् संधि कर तिब्बत को संधि करने के लिए विवश किया। इनके राज्य-काल में एक विशेष घटना यह घटी कि कर्क पैट्रिक नामक ब्रिटिश राजदूत काठमाण्डू में आ गया, परन्तु जब उसके रहने का विरोध जनता तथा सरदारों ने किया तब उसे जाना पड़ा, किन्तु कहावत के अनुसार 'डाइन ने घर देख लिया था'। नैपाल की भूमि का एक विहंगम पैमायश वह कर गया तथा अभेद्य नैपाल में सेंध लग गया। सन् १७९५ ई० में रणबहादुर शाह ने वयस्कता प्राप्त की तथा राज्यभार ग्रहण किया। राज्य सूत्र पकड़ते ही अपने चाचा बहादुरशाह को कैद में डाल दिया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस राजा का राज्यकाल अनेक आपत्तियों का क्रीड़ा-प्राङ्गण रहा। युवा राजा का प्रेम एक मैथिल ब्राह्मण की कन्या से हो गया, जिसे राज-रानी बनाते हुए यह वचन दिया कि उसका गर्भ-जात बालक राजगद्दी का अधिकारी हगा। प्रजा इस असंगत कार्य के विरुद्ध बगावत कर उठी, और इसी बीच मैथिल रानी के पुत्र उत्पन्न हो गया, जिसे किसी गोत्र-वंशीय निर्धन के बालक से बदल कर राज-रक्त की अक्षुण्णता बनाए रखी गई। कुछ दिनों के बाद मैथिल रानी ने गहरी चेचक से मुख विकृत हो जाने पर आत्महत्या कर ली। रणबहादुर शाह उसके वियोग में पागल हो गये तथा पाटवी रानी के पुत्र तथा संबंधियों की हत्या करवा दी। इससे क्रुद्ध होकर प्रजा ने उसी 'बदले हुए बालक' को गीर्वाण शाह के नाम से राजगद्दी पर बैठाकर रणबहादुरशाह को देश-निकाला दे दिया। बनारस आकर रणबहादुरसाह पुनः प्रेम-पाश में फँस गए और ईस्ट इण्डिया कंपनी की सरकार से नैपाल का राज्य प्राप्त करने में सहायता माँगी। कूटनीतिज्ञ तथा कुटिल सैनिक लार्ड वेलेजली ने इससे लाभ उठाया तथा उसे नैपाल का शासन दिलवाने में सहायता का आश्वासन दिया। रणबहादुर शाह बालक गोर्वाण शाह को किसी दूर स्थान में भेज कर स्वयं राज्य-संचालन करने लगा। सन् १८०७ ई० में गीर्वाण शाह ने राज्य की बागडोर अपने हाथ में ली और मंत्री भीमसेन के परामर्श से अनेक परिवर्त्तन तथा सुधार किए। मंत्री भीमसेन कुशल राजनीतिज्ञ तथा दूरद्रष्टा थे। राजा तथा मंत्री में इतना मतैक्य था कि नैपाल थोड़े ही दिनों में सुसंस्कृत एवं सैन्य शक्ति से दृढ़ हो गया। किन्तु इसी बीच शनि की कुपित दृष्टि पड़ी और युद्ध के बादल मँडराने लगे।

नैपाल राज्य के कुछ गाँव बेतिया, सारन और बुटवल जिलों में थे, जिन पर लोलुप फिरंगियों की दृष्टि पड़ी तथा उन पर अधिकार कर लिया। फिरंगी तो नैपाल हड़पने के लिए तैयार हो रहे थे—समझौते की सब वार्त्ताएँ भंग कर दीं और इसी बीच लार्ड म्वायरा अथवा लार्ड हेस्टिंग्स के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आ जाने से युद्ध के बाजे बजने लगे। युद्ध के लिए द्रव्य की आवश्यकता थी। फिरंगियों ने कभी अपनी गाँठों के पैसों से भारत में युद्ध नहीं किए। वे सदैव 'मियाँ को जूती मियाँ के सर' वाली कहावत अक्षरशः चरितार्थ करते थे। सबसे मोटी और सबसे तायदाद में ज्यादा अण्डे देनेवाली मुर्गी थी अवध की नवाबी। लार्ड म्वायरा ने नवाब गाजीउद्दीन हैदर से नैपाल-युद्ध के लिए दो करोड़ कान पकड़ कर गिनवा लिए।

हेस्टिंग्स ने नैपालियों और राजा रणजीतसिंह को लड़वा दिया। अमर-सिंह थापा, भीमसेन थापा का भाई, नैपाल का एक कुशल सैनिक था, जिसे नैपाल नरेश ने हिमांचल प्रदेश के पहाड़ी राजाओं के विद्रोह को शांत करने के लिए नियुक्त किया था। इन पहाड़ी राजाओं ने पंजाब से सहायता माँगी और फिर ईस्ट-इण्डिया कम्पनी से। कम्पनी ने महाराजा रणजोतसिंह को उनकी सहायता करने को उकसाया तथा समय आने पर उनका साथ देने का आश्वासन दिया। इससे नैपालियों और महाराजा रणजीतसिंह में अनबन हो गई और अंग्रेजों का मनोरथ सिद्ध हो गया।

चारों ओर से नैपाल को अकेला कर हेस्टिंग्स ने पूरी ताकत से उसपर चार दिशाओं से आक्रमण करने की योजना बनाई। ऐसी बड़ी योजना बनाने के कारण पर प्रसिद्ध इतिहासकार हेनरी बेवरीज अपनी पुस्तक 'ए काम्प्रीहेनसिव हिस्ट्री आफ इण्डिया' की वाल्यूम तृतीय के पृष्ठ १० पर हेस्टिंग्स के पत्र का हवाला देते हुए लिखते हैं---"We have hither to but hunted deer; if we engage in this war we must prepare to fight tigers."अर्थात् अभी तक हमने हिरनों का शिकार किया है और यदि हमें यह युद्ध ( नैपाल के साथ ) लड़ना है तब हमें सिंहों के शिकार के समान तैयारी करनी होगी। इससे स्पष्ट हो जाता है कि अंग्रेज सरकार नैपालियों की वीरता से भलीभाँति परिचित थी और उनसे लड़ने के लिए सबसे ज्यादा तैयारी उसने की।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## : ३ :

सहारनपुर के उत्तर-पश्चिम में एक विस्तृत मैदान था जिसमें सैकड़ों तम्बू लगे थे और वह विदेशी सैनिकों से भरा था। उससे थोड़ी दूर फूस तथा खपरों से ढकी बारिकें थीं जिनमें फिरंगी सैनिकों का आवास था। उन बारिकों से सटा हुआ एक छोटा बँगला था जिसमें नैपाल से लड़ने वाली दूसरी सेना का अध्यक्ष मेजर जेनरल जिलेस्पी का वास था। जिलेस्पी एक लम्बे कद और छरहरे शरीर का चुस्त तथा फुर्तीला जवान था। उसके अंग-अंग से स्फूर्ति टपकी पड़ती थी। उसमें असीम साहस और दुर्दमनीय बाधाओं से जूझने का चाव था। उसका कपाल चौड़ा, नाक लम्बी और आँखें चमकीली थीं। बाल घुँघराले लाल रंग के थे। उसकी चाल तेज थी और जब वह साधारण रूप से चलता था तो ऐसा प्रतीत होता था कि वह दौड़ रहा है। उसे अपनी शक्ति पर पूर्ण विश्वास था, और आज तक वह कभी पराजित नहीं हुआ था। वह डरपोक सैनिकों को भी जूझने के लिए उत्तेजित करने की कला से भिज्ञ था, और प्रायः मोर्चे में अन्य अफसरों की भाँति केवल आज्ञा देना नहीं जानता था, बल्कि स्वयं प्रविष्ट होकर लड़ने के लिए अग्रणी रहता था। युद्ध से उसे प्रेम था, और उसके लिए वह सदैव लालायित रहता था। अपने बाल्यकाल में वह एक नटखट विद्यार्थी था जिसके कारण उसे सदैव लाञ्छित किया जाता था। युवा होने पर भी इस प्रवृत्ति में कोई अन्तर न आया, बल्कि मुहल्ले के लोग आतंकित रहते थे। उसकी कुटिलताओं से परेशान होकर उसके माता पिता ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी में नौकरी दिलवा दी। उन दिनों ईस्ट इण्डिया कम्पनी को ब्रिटिश सैनिकों की बड़ी आवश्यकता थी, इसलिए उसे आदर के साथ लेकर भारतीय महासागर के द्वीप-समूह में भेज दिया। जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, आदि द्वीपों के जंगलों में उसने कई लड़ाइयाँ जीतीं जिससे उसकी उन्नति उत्तरोत्तर होती गई। उसके शौर्य की प्रशंसा सर्वत्र होने लगी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डायरेक्टर उसके कार्य से परम सन्तुष्ट तथा प्रसन्न थे। इसी बीच उसका

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मनोमालिन्य जावा के गवर्नर से हो गया और उसने अपना इस्तीफा पेश कर दिया। किन्तु कम्पनी के डायरेक्टर उसकी सेवाओं को खोना नहीं चाहते थे, इसलिए उसे भारत भेज दिया जहाँ लार्ड वेलेजली को ऐसे युद्ध-विशारदों की परम आवश्यकता थी। वेलेजली ने उसको अत्यन्त आदर के साथ मेजर जेनरेल का पद देकर मध्यवर्ती सेना की कमान सौंप दी। भारत में भी उसने अपने शौर्य का यथेष्ट परिचय दिया, जिससे वह फिरंगी सेना-पतियों में एक मुख्य सेनानी गिना जाने लगा। जब लार्ड हेस्टिंग्स आए तब वह भी उससे प्रभावित हुए और नैपाल से लड़ने के लिए चार सेनाध्यक्षों में उसको भी सम्मिलित कर लिया।

अक्टूबर मास का प्रारम्भ था। प्रातःकाल गुलाबी ठंड पड़ने लगी थी। प्रायः यह समय भारत में युद्ध में प्रवृत्त होने के लिए उपयुक्त समझा जाता था, तथा जब किसी नये युद्ध का सूत्रपात होता तब इसी महीने से किया जाता था। मेजर जेनरल जिलेस्पी दून घाटी का नकशा मेज पर रख अपनी यौद्धिक योजना बनाने में संलग्न था। इसी बीच उसके मुसलिम अरदली गफूर ने आकर कहा—"हुजूर दिल्ली से एक साहब मुलाकात माँगता है।" जिलेस्पी का ध्यान भंग होने पर उसे कुछ चिड़चिड़ाहट हुई और कहा—"बोलो अभी वक्त नहीं है।" वह पुनः ध्यानस्थ हो गया। अरदली बाहर चला गया। थोड़ी देर बाद एक लिफाफा लिए हुए पुनः आया, और उसे मेज पर रख कर जाने लगा। जिलेस्पी की दृष्टि उस लिफाफे पर अंकित गवर्नर जेनरल की मुद्रा पर पड़ी। उसने उसे तुरन्त उठाते हुए कहा—"पहले क्यों नहीं बोला कि लाट साहब का एलची आया है।"

अरदली उसके भड़कीले स्वभाव से परिचित था, उसने कोई उत्तर नहीं दिया। जिलेस्पी सील तोड़कर पत्र पढ़ने लगा। पढ़ते-पढ़ते उसकी त्यौरियाँ चढ़ने लगीं। पत्र पढ़ने के बाद वह बुदबुदाया—"मुझे किसी सहायता की जरूरत नहीं है।" फिर अरदली से कहा—"साहब को बोलो। हम मुलाकात नहीं देगा।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अरदली जाने लगा। अभी द्वार पर पहुँचा ही था कि उसने उसे बुला कर फिर कहा—"अच्छा कोई हर्ज नहीं, हम मुलाकात देगा। उसको ले आओ, उसके पहले एक कुरसी इधर डाल दो।"

अरदली कुरसी लेकर आ रहा था कि उसका पैर चारपाई से टकरा गया, जिससे वह गिरते-गिरते बचा। आवाज सुनकर उसका ध्यान उधर गया, और उसने बाण सी क्षिप्रगति से झपट कर ठोकर मारते हुए कहा—"इण्डियन डाग, देख कर नहीं चलता।"

अरदली की तिल्ली फट गई और खून पनाले बहने लगे।

जिलेस्पी की दृष्टि उस रक्त पर नहीं पड़ी। ठोकर के साथ अरदली के न उठने के कारण वह कुपित हो गया, जिसके परिणामस्वरूप उसने दो-तीन ठोकरें उसके पेट में मारीं, जिससे तड़पती हुई जान आजाब से छूट गई।

जब अरदली तब भी न उठा, तब बहते हुए रक्त पर उसकी दृष्टि गई और वह विस्फारित दृष्टि से अरदली के शव को देखने लगा।

उसने पागलों को भाँति चिल्लाते हुए कहा—"कोई है?"

खानसामा उधर से जा रहा था। साहब की चिल्लाहट सुनकर वह भीतर आकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

उसने धीमे स्वर में कहा—"हमारा अरदली मरकर पड़ा है। इसको होश में लाओ।"

खानसामा ठिठक कर खड़ा हो गया और भीत दृष्टि से जेनरल साहब की ओर देखने लगा।

"क्या देखता है, उठाता क्यों नहीं?" जेनरल साहब गरज पड़े।

खानसामा उसकी पथराई आँखें देखते हुए भीत स्वर से चिल्ला उठा—"हुजूर, यह तो मर गया।"

"क्या बकता है?"

"हुजूर सच कहता हूँ कि अरदली मर गया है। उसकी तिल्ली फट गई है।" फिर स्वगत कहा—"तुम्हारी नौकरी का यही प्रसाद है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जिलेस्पी ने दो छलाँग में पहुँच कर कहा—"मर गया ? क्या बोलता है ?" फिर वह उसे जूते की नोक से उलटने-पुलटने लगा।

"जाओ, डाक्टर को बोलो।"

वह फिर अपनी कुरसी पर आकर बैठ गया।

खानसामा अपने साथ डाक्टर को लिए आ गया। वह भी एक फिरंगी था।

जिलेस्पी ने उपेक्षित दृष्टि से देखते हुए कहा—"डाक्टर, अपनी रिपोर्ट पेश करो। जाओ, देखो।"

डाक्टर जाकर अरदली की शव-परीक्षा करने लगा।

पत्र को जिलेस्पी ने पहले सरसरी तौर पर पढ़ा था, अब उसे उठाकर पुनः पढ़ने लगा।

डाक्टर परीक्षा कर चला गया। उसने चार मेहतरों को अरदली के दफनाने का आदेश दिया। फिर रिपोर्ट लिखने के लिए अपने कैम्प में गया।

जिलेस्पी पत्र पढ़कर कुछ चिन्तित दीखने लगा।

उसने स्वगत कहा—"जब गवर्नर जेनरल खुद गारन्टी करता है, तब कोई उपाय नहीं है। मैं इतने आदमियों की भीड़ लेकर नहीं जाना चाहता। मेरी इच्छा थी कि मैं अपनी आधी सेना वापस कर दूँ। अब इन आदमियों की भीड़ भी आ गई है, उसको कैसे खपाया जाय ? जिस पर तुर्रा यह कि इनमें अधिकांश नियमित सैनिक नहीं हैं। फ्रेडिरिक यंग कौन है ? कभी सुना नहीं। अरे, मैंने अभी तक उसे बुलाया नहीं। इस अरदली कुत्ते ने गड़बड़ कर दिया।"

जिलेस्पी ने आतंकित खानसामा को आदेश दिया—"बाहर जाकर साहब को सलाम बोलो।"

खानसामा आदेश पालन करने के लिए चला गया। जेनरल उठकर कमरे में चिन्तित मुद्रा से टहलने लगा।

थोड़ी देर बाद खानसामा के पीछे-पीछे एक अंग्रेज ने प्रवेश किया,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जो देखने में जिलेस्पी से अधिक सौम्य और खानदानी प्रतीत होता था। उसने अभिवादन करते हुए कहा—"दिल्ली रेजिडेन्ट के प्रथम सहायक मिस्टर विलिमय फ्रेज़र ने अपनी शुभ कामनाएँ भेजी हैं।"

जिलेस्पी साधारण शिष्टाचार करना नहीं जानता था। उसने उसे बैठने का संकेत नहीं किया, और बोला—"आप कितने सिपाही लेकर आए हैं; आप ही लेफ्टिनेन्ट फ्रेडरिक यंग हैं ?"

"जी हाँ ! सात हजार सिपाही मेरे साथ आये हैं।'

"उनमें से नियमित कितने हैं ?"

"पहले बरखास्त किये हुए सैनिकों में से हैं। यही नियम चलता आ रहा है। लड़ाई के समय वे बुला लिए जाते हैं और उसकी समाप्ति पर बर्खास्त कर दिये जाते हैं।"

' वे बहादुर हैं ? सैनिक नियमों से परिचित हैं ?"

"जी हाँ। प्रायः सब कई लड़ाइयाँ लड़ चुके हैं। मिस्टर फ्रेजर ने इनको चुना है।"

"इनकी कमान आप करेंगे ?"

"यदि आपकी अनुमति होगी।"

"आपको लड़ाई का अनुभव है ?"

"नैपोलियन के विरुद्ध कई बार लड़ा हूँ।"

"इस गरम देश में कभी नहीं लड़े।"

"जी नहीं, मैं अभी सीधा इंगलैण्ड से आ रहा हूँ।"

"आप गवर्गर जेनरल का कोई पत्र लाये हैं ?"

"जी हाँ। मिस्टर फ्रेज़र ने उसका जिक्र अपने पत्र में किया होगा। यह लीजिए।" कहते हुए उसने पत्र दे दिया।

पत्र पढ़कर कहा—"गवर्नर जेनरल आपकी तारीफ करता है।"

आगन्तुक ने कोई उत्तर नहीं दिया, किन्तु दृष्टि से विदित हुआ कि वह सन्तुष्ट है। "आप विलायत में लेफ्टिनेन्ट कैप्टन रहा है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"जी हाँ ! गवर्नर जेनरल ने अभी दूसरा पद प्रदान नहीं किया। इस लड़ाई में कारगुजारी देखकर कोई अन्य निश्चय करेंगे।"

"पहाड़ी लड़ाइयों की रीति-नीति से आप परिचित हैं ?"

"जी हाँ थोड़ा-बहुत ज्ञान है।"

"आप की सेना को मुहिम पर पहले भेजा जायगा।"

"मैं तैयार हूँ।"

"अच्छा अभी जाइए, मैं इस पर विचार करूँगा।" फिर खानसामा से कहा—"साहब को फौज का पड़ाव डालने का इन्तजाम करने को और एक खेमा साहब के रहने के लिए खड़ा करवा दो।"

खानसामा के साथ आगन्तुक चला गया। जिलेस्पी कमरे में टहलने लगा। कुछ देर बाद डाक्टर ने प्रवेश कर सैल्यूट दिया और अरदली की शवपरीक्षा की रिपोर्ट पेश कर दी।

रिपोर्ट बहुत संक्षिप्त थी—केवल इतनी कि "अरदली गफूर मोहम्मद के गिरने से तिल्ली फट गई, और वह अभागा मर गया।"

जिलेस्पी ने पढ़ कर मस्तक पर बिना एक शिकन लाए हस्ताक्षर कर दिया। इस प्रकार एक भारतीय की सद्गति हो गई। उसके परिवारवालों ने भी नहीं जाना कि कब और कैसे उसकी मृत्यु हुई। फिरंगियों का ऐसा ही रवैया था।

●

: ४ :

बलभद्र सिंह थापा के आ जाने से कलूँगा दुर्ग के सैनिकों में नव-जीवन का संचार हुआ, और अदम्य साहस उत्पन्न हो गया। दुर्ग का प्रत्येक सैनिक नवोत्साह से उसकी रक्षा-प्रबन्ध में जी-जान से जुट गया। उसके अस्त्रागार में पुराने, टूटे और जंग खाए जितने शस्त्र मिले, उन्हें दुरुस्त किया जाने लगा। बन्दूकें बहुत कम संख्या में थीं और वे भी पुरानी किस्म की जिनके भरने में समय लगता था। तोपों का बिल्कुल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अभाव था। छोटी से छोटी एक तोप भी नहीं थी। भाले और तलवारें पर्याप्त संख्या में थीं, तथा नैपालियों के जातीय अस्त्र खुखुड़ियों का अम्बार लगा था, जिस पर सान धरी जा रही थी। नारियाँ भी पुरुषों की भाँति युद्धास्त्रों की मरम्मत में दत्तचित्त थीं। सब ओर नर-नारी इस प्रकार विविध रक्षात्मक कार्यों में जुटे थे जैसे किसी बड़े विवाह की तैयारी में लोग जुट जाते हैं।

बलभद्र सिंह के आने के दूसरे दिन सैनिकों की बैठक बुलाई गई। उसमें सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि फिरंगियों से युद्ध ही किया जाय। दुर्ग किसी हालत में जीते जी नहीं छोड़ा जायगा। सात अनुभवी वृद्ध सैनिकों की युद्ध-समिति बनाई गई और उसे दुर्ग की रक्षा का भार सौंपा गया। मानबहादुर को बलभद्र सिंह ने अपना मुख्य सहायक बनाया।

कुलूँगा अथवा कलूँगा कोई बड़ा प्रसिद्ध गढ़ नहीं था। गढ़ शब्द का उसके लिए व्यवहार करना अतिशयोक्ति होगी। देहरा नगर से उत्तर-पूर्व साढ़े तीन या पौने चार मील दूर एक छोटी पहाड़ी थी, जिसकी ऊँचाई लगभग छः सौ फीट थी। नाला पानी नामक पहाड़ी शृँखला के दक्षिणी-पश्चिमी किनारे पर वह अवस्थित थी। वह पृथ्वी पर एक पत्थर की दीवाल की भाँति खड़ी थी। उसके चारों ओर साल वृक्षों का घना जंगल था, जिसको भेदना एक कठिन कार्य था। पहाड़ी के ऊपर एक आधे मील का लम्बा पठार था जिसकी समतल भूमि दुर्ग बनाने के लिए अनुकूल थी। बहुत प्राचीन काल में वहाँ एक छोटा दुर्ग किसी राजा ने बनाया था। गोरखों का राज्य होने के बाद इस टूटे गढ़ की मरम्मत की गई और चूँकि यह गढ़वाल में प्रवेश करने के द्वार पर स्थित था इसलिए वहाँ तीन सौ के लगभग सैनिकों का पड़ाव स्थापित कर दिया गया था। बड़ी-बड़ी शिलाओं तथा पत्थर के ढोकों से उन्होंने दीवाल बनाकर उसकी रक्षा का प्रबन्ध किया था। दीवालों से घिर जाने के बाद उसमें सैनिकों के वास तथा अस्त्रागार आदि बनाए गए और बीच का प्राङ्गण सैनिक शिक्षा के लिए खाली छोड़ दिया गया। नैपाल के प्रसिद्ध सेनाध्यक्ष अमर सिंह थापा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ने कुछ दिनों पहले उसका निरीक्षण किया था, तथा कुछ सैनिक सामान भी रक्षा के लिए भेज दिया था। वह उसे और अधिक दृढ़ बनाना चाहते थे, परन्तु हिमालय प्रदेश के राजाओं के साथ युद्ध में रत रहने से इसकी रक्षा के लिए अधिक प्रबन्ध नहीं कर सके। जब लार्ड हेस्टिंग्स ने बाकायदा युद्ध की चुनौती दे दी, तब उन्होंने अपने एक सैनिक भाई बलभद्रसिंह को कलूँगा की रक्षा और फिरंगियों को अटकाए रखने का आदेश देकर भेज दिया।

बलभद्र सिंह बड़े कुशल सेनानी और अद्भुत शौर्य के व्यक्ति थे। अनेक युद्धों में उन्होंने अपनी वीरता दिखाई थी, जिससे वह अमरसिंह थापा के बहुत प्रिय तथा विश्वासपात्र हो गए थे। उनकी दूरदर्शिता के भी वह कायल थे, और वह उनका परामर्श लिए बिना कोई सैनिक योजना नहीं बनाते थे। नैपाल के प्रधान मंत्री तथा सेनापति भीमसेन थापा के भी वह विश्वासभाजन थे। उन्होंने उनको महाराजाधिराज गीर्वाण युद्ध विक्रम शाह से अनुशंसा कर खिलअत और सोने के आभूषण दिलवाए थे। अमर सिंह ने कलूँगा में बलभद्र सिंह की नियुक्ति की सूचना प्रधान मंत्री को भेज दी थी और उसकी स्वीकृति भी आ गई थी।

कलूँगा की नारियों में भी युद्ध के प्रति विशेष उत्साह था। वे पुरुषों की भाँति दुर्ग की रक्षा-प्राचीर बनवाने में कन्धे से कन्धा भिड़ा कर सहायता दे रही थीं। जब वे जोशीले गीत गाती हुई काम में संलग्न रहतीं, तब ऐसा प्रतीत होता कि वाणी मुखर होकर सैनिकों को शत्रुओं के विनाश के लिए उत्साहित कर रही है। इनमें पार्वती नामक नवयौवना सबसे अधिक फुर्तीली और कार्य कुशल थी। वह चपला की चपलता से यत्र-यत्र सर्वत्र स्वयं काम करती तथा अन्यों को भी उत्साहित करती फिरती थी। वह मानबहादुर की वाग्दत्ता थी। पार्वती के पिता सुमेर सिंह की मृत्यु सर्पदंश से एक वर्ष पहले हुई थी। मानबहादुर के पहले वही गढ़ का रक्षक था। मानबहादुर कुलीन क्षत्रिय था। उसके पिता नैपाल राज्य की सेना में उच्च अधिकारी थे। सुमेर सिंह ने पार्वती की बाल्यावस्था में ही मान-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बहादुर के साथ सगाई कर दी थी। सुमेर सिंह की मृत्यु के बाद अमरसिंह ने बलभद्र सिंह की सलाह से मानबहादुर सिंह को उस दुर्ग का रक्षक नियुक्त किया, इस विचार से कि जिसमें सुमेर सिंह की विधवा बिल्कुल बेसहारे न हो जाय।

दोपहर का समय था। अक्टूबर मास के सूर्य में अब भी प्रखरता थी, जो ग्रीष्मऋतु से किसी भाँति कम न थी। पत्थर तप कर अग्नि-पुञ्ज के समान जल रहे थे। उसको छूने में ही हाथ जलने लगते थे। पार्वती बड़ी तत्परता से दीवाल चुन रही थी। सहसा उसकी ऊँगली पत्थर का ढोका रखते समय कुचल गई। उस समय उसे काम करने से जोश में कुछ पीड़ा न हुई, परन्तु थोड़ी देर बाद मिट्टी-चूने के खारेपन से वह दर्द करने लगी। उसमें पन-कपड़ा बाँधने के लिए वह एक चीथड़े की तलाश में अपना कार्य-भार एक समवयस्क सखी को देकर जाने लगी। उधर मानबहादुर दूसरी ओर से दीवाल बना रहा था। कभी-कभी मानबहादुर तथा पार्वती की दृष्टियाँ मिल जातीं, और दोनों के हृदय स्पन्दित होने लगते। पार्वती वहाँ से टल जाना चाहती थी। उँगली कचर जाने से उसको अच्छा बहाना मिल गया, और जब वह जाने लगी तब उसकी सखी गौरी ने ठठोली करते हुए कहा—"कहाँ जा रही है, तेरे मंगेतर का कैसे मन लगेगा?" पार्वती ने झिड़की भरे स्वर में उत्तर दिया—"तुझे हमेशा ठठोली सूझती है। यह काम का समय है, हास-परिहास का नहीं।"

"बहुत न उड़ो। मैं क्या दोनों का आँख लड़ाना देख नहीं रही थी?"

"तू मुझे बहुत परेशान करने लगी है।"

"तब जाकर अपने सगे से कह दे।"

"क्या बकती है, कौन किसका सगा है?"

"वही जो उधर काम करते हुए बार-बार तेरी ओर देखते हैं।"

"मर कलमुँही। मेरी तो उँगली कचर कर भरता हो गई है और तुझे....।"

"जब इधर-उधर आँखें लड़ाओगी तब उँगली कुचलेगी ही। तू कहीं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मत जा। अपनी ओढ़नी से एक चिट फाड़कर तेरे पन कपड़ा बाँधे देती हूँ।"

"रहने दे अपनी ओढ़नी फाड़ने को। यदि ओढ़नी फाड़ना होता तो क्या मेरे पास नहीं है।"

"अरे तेरी ओढ़नी में दाग लग जायगा तो तेरा....।"

वाक्य पूरा होने के पहले ही पार्वती वहाँ से चल दी। गौरी हँसती हुई काम में पुनः लग गई।

इधर जब मानवहादुर ने उस ओर दृष्टि घुमाई तो उसने पार्वती को वहाँ नहीं देखा। इधर-उधर देखा, परन्तु वह नहीं दिखाई दी। अकेले गौरी से काम उतनी शीघ्रता से नहीं हो रहा था, जितना जुट्टी से होता था।

मानबहादुर ने अपना काम छोड़ कर धीरे-धीरे अन्य व्यक्तियों के काम का निरीक्षण करते हुए गौरी से आकर पूछा—"तू अकेले कैसे काम कर रही है, तेरी जुट्टी कहाँ है ?"

"मैं क्या जानूँ"–उसने बिहँसती आँखों से उत्तर दिया।

"बिना कुछ बताए तेरी साथिन चली गई ?"

"कहती थी कि किसी चीथड़े की तलाश में जा रही हूँ।"

"चीथड़े की तलाश में क्यों ?"

"मैं इन सब 'क्यों' का उत्तर नहीं जानती।"

"बेअदबी मत कर, जो पूछता हूँ उसका जवाब दे।"

"कहती थी कि उँगली कुचल गई है।"

"उँगली कुचल गई है—कैसे ?" स्वर से चिन्ता झाँकने लगी।

"महाराज, मैं इन सब प्रश्नों का उत्तर कैसे दे सकती हूँ। वह इधर गई है, आप भी उधर जाकर उससे जवाब-तलब कीजिए।"

"अरे, क्या बिना कहे चली गई है। जानती नहीं कि बिना आज्ञा लिए काम छोड़कर जाने से दंड मिलता है।"

"जानती हूँ महाराज, परन्तु उसे दंड का भय नहीं है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"यह तू कैसे जानती है ?"

"बिल्कुल साफ बात है। अगर उसे दंड का भय होता तब आपसे पूछकर न जाती ?"

"मुझसे नहीं तुझसे।"

"महाराज दंड देने की सामर्थ्य आप में है, मुझमें नहीं।"

"तू बड़ी चालाक है।"

गौरी ने कोई उत्तर नहीं दिया। मानबहादुर खीझकर अपने स्थान पर लौटने लगा। उसके कुछ दूर जाने के बाद गौरी ने कुछ जोर से कहा—"हाँ महाराज याद आया, वह कहती थी कि पन-कपड़ा बाँधने के लिए चीथड़े की खोज में जाती हूँ। मैंने अपनी ओढ़नी फाड़कर चिट निकालने को कहा, लेकिन वह गुस्से में भरी चली गई।"

मानबहादुर लौट आया था। उसने पूछा—"इसमें गुस्सा होने की क्या बात थी ?"

"महाराज, सब प्रश्न आप मुझसे ही पूछ डालेंगे, उससे कुछ न पूछेंगे ?"

इसी बीच पार्वती आती हुई दिखाई पड़ी। मानबहादुर जाने लगा।

गौरी ने अपनी हँसी दबाते हुए कहा—"महाराज, अब वह आ रही है, अपने सब सवाल उससे पूछ लीजिए।"

मानबहादुर ने जाते-जाते कहा—"ठीक है, वह काम पर वापिस आ गई, इसलिए अब पूछने की कोई आवश्यकता नहीं।"

इतना कह कर वह तेजी से अपनी जगह पर चला गया।

पार्वती के आते ही गौरी ने कहा—"तुम जब कहीं जाती हो महाराज से पूछकर क्यों नहीं जाती ? वह आकर मुझसे सवाल-जवाब करते हैं। मैंने क्या तेरी ओर से जवाब देने की नौकरी लिखाई है ?"

"मुँहझौंसी, मैं चली गई और अकेले में बुलाकर बातें करने लगी।"

"मैं तो दोहरी मार से मरी। इधर मर्द आकर त्यौरियाँ चढ़ाकर पूछे, मेरे 'वह' कहाँ गई, कैसे उँगली कुचली, तूने क्यों नहीं अपनी ओढ़नी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फाड़कर पन-कपड़ा बाँध दिया, और बाद में तू आकर मुझे मुँहझौंसी बना कर पाप लगावे। मैं आज तेरी माँ से शिकायत करूँगी।"

"मैं भी शिकायत करूँगी कि तू चोर की तरह पराए धनको रोती है।"

"तू एक बार नहीं, सौ बार शिकायत करना। महाराज मेरी सफाई देंगे कि मैंने उन्हें बुलाया था या क्षण भर के लिए आँखों से ओझल होते ही वह स्वयं दौड़ कर आए और मुझसे सवाल जवाब करने लगे थे।"

इसी समय बलभद्रसिंह दीवाल का निरीक्षण करते हुए उधर आ गए। उनको देखकर सब लोग प्रसन्न होकर एक साथ बोल उठे—"महाराज बलभद्रसिंह की जय!"

हृदय से निकले हुए जय-जयकार में ऐसी मादकता होती है जो कठिन से कठिन व्यक्ति का मन मोह लेती है। छोटे-बड़े सब बार-बार उनका जयनाद करने लगे। गौरी और पार्वती अपना हास-परिहास भूल गईं, दोनों सबके सुर में सुर मिलाकर जय जयकार करने लगीं।

●

## : ५ :

कलूँगा दुर्ग की शासन समिति की बैठक बुलाई गई थी। महाराज बलभद्रसिंह सभापति के स्थान पर बैठे थे। युद्ध समिति के सात सदस्य और मंत्रिपरिषद् के सब सदस्य दाहिनी ओर की पंक्ति में बैठे थे तथा बाईं ओर नागरिक एवं उनकी पत्नियाँ। जेनरल जिलेस्पी की अन्तिम चेतावनी आयी थी कि दुर्ग छोड़ो या युद्ध करो।

महाराज बलभद्रसिंह ने खड़े होकर एक छोटी भूमिका के बाद जेनरल जिलेस्पी के नायब कर्नल माबी का पत्र पढ़ कर सुनाया तथा गोरखाली में उसका अनुवाद किया। उनके अभिमत के लिए जब वह ठहरे, तब गगन-भेदी समवेत स्वर से उन्होंने उत्तर दिया—"हम लड़ेंगे, और शत्रु का विनाश करेंगे, चाहे वे जितने शक्तिशाली हों। हम गढ़ नहीं छोड़ेंगे।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तुमुल नाद शान्त होने पर बलभद्रसिंह ने भी कहा—"हम गढ़ नहीं छोड़ेंगे। हम यही उत्तर लिखकर जेनरल जिलेस्पी के नायब कर्नल माबी को भेज रहे हैं।"

उसी भाँति फिर उत्तर मिला—"अवश्य। हम किसी भाँति कलूँगा उन्हें नहीं देंगे।"

बलभद्रसिंह ने थोड़ी देर बाद कहा—"ठीक है, हमारा यह उत्तर हमारी जातीय परम्परा के अनुकूल है। किन्तु मेरा यह कर्त्तव्य है कि मैं सत्य परिस्थिति आपके सामने रख दूँ।"

युद्ध-समिति के एक प्रमुख सदस्य नाहर बहादुर जो फिरंगियों के विरुद्ध कई अन्य क्षेत्रों में युद्ध कर चुका था, बोला—"महाराज, हम सब परिस्थितियों से अच्छी तरह परिचित हैं। ये फिरंगी केवल लोहे के बल से कहीं बात समझते हैं—और कोई दूसरी तरह से कही बात उनकी समझ में नहीं पैठती। उनकी विस्तारवादी नीति है। उत्तरी भारत में केवल नैपाल ही एक प्रदेश है, जो उनके चंगुल से बाहर है। पंजाब का रणजीतसिंह तो उनका साथी तथा मित्र है और हमसे शत्रुता रखता है। अब फिरंगियों को देश के बाहर भगाने का भार केवल नैपाल को वहन करना होगा।"

कलूँगा निवासियों ने दृढ़ता के साथ उत्तर दिया—"हम यह भार उठाने के लिए तैयार हैं।"

बलभद्रसिंह ने कहा—"आपका साहस और शौर्य हमारी सदैव सहायता करता रहा है—और आगे भी उसी का सहारा है। परन्तु हमें यह जान लेना चाहिए कि शत्रु ने इस बार चार दिशाओं से चार चतुर सेनाध्यक्षों की कमान में चौंतीस-पैंतीस हजार चुने हुए लड़ैतों के साथ आक्रमण किया है। उनके पास बड़ी-बड़ी तोपें हैं और नई किस्म की बन्दूकें हैं। उनमें अच्छे निशानेबाज भी हैं। उनकी यह योजना है कि वे हमें चारों ओर से घेर कर चूहों की तरह मार डालें।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

युद्ध समिति के दूसरे सदस्य ने कहा—"हम उनकी कोई योजना सफल होने नहीं देंगे। नेपाल सदा से स्वतन्त्र रहा है और आगे भविष्य में भी रहेगा। फिरंगियों की बड़ी से बड़ी सेना हमें कभी झुका नहीं सकेगी। महाराज, यह सर्वविदित है कि पत्थर टूट जाता है, किन्तु वह किसी उपाय से लच नहीं सकता। हम पर्वतों के निवासी हैं—टूट सकते हैं किन्तु फिरंगियों की अधीनता स्वीकार नहीं कर सकते।"

बलभद्रसिंह ने प्रसन्नकंठ से कहा—"हमें आप से यही आशा है। इस समय हम नैपाल के प्रवेशद्वार के प्रहरी हैं। हमें शत्रु को यहाँ उस समय तक अटकाए रखना है, जबतक नैपाल अपनी बिखरी शक्तियों को एकत्रित कर इन फिरंगियों से लोहा लेने के लिए तैयार नहीं हो जाता। यद्यपि उनकी सेना ने देहरा नगर पर अपना अधिकार कर लिया है, और ऐसा हमने स्वेच्छा से होने दिया है, क्योंकि वहाँ हम उनसे लोहा नहीं ले सकते थे, तथापि हमारी शक्ति और इरादे में कोई अन्तर नहीं आया है। हमने कलूँगा को इसलिए अपना समर-केन्द्र बनाया है, क्योंकि यह एक मजबूत स्थान है, और तब जब दुर्ग के अतिरिक्त अन्य कोई दूसरा उपयुक्त गढ़ नहीं है, जहाँ हम उनसे लड़ते। यद्यपि हमारी संख्या फिरंगियों के मुकाबले में बहुत कम है लगभग बीसवें भाग के बराबर, क्योंकि हमारे जासूसों ने बताया है कि फिरंगियों के सैनिकों की संख्या लगभग बारह से चौदह हजार है, तथापि हमारा विश्वास है कि हमारे एक-एक जवान उनके बीस-बीस सिपाहियों को मौत के घाट लगाने में अवश्य सफल होंगे।"

सैनिकों ने दृढ़स्वर से कहा—"महाराज, हमारा एक-एक जवान बीस-बीस नहीं पचास-पचास फिरंगियों को मौत के घाट लगावेगा।"

कुछ देर बाद जब शोर-गुल बन्द हुआ तब बलभद्रसिंह ने फिर कहना आरम्भ किया—यह बात भी आप लोगों को जाननी चाहिए कि हमारे पास एक भी तोप नहीं है, और न वे प्राप्त की जा सकती हैं। हमारे पास पुरानी किस्म की बन्दूकें हैं—किन्तु सीसा और बारूद है, उनके बनाने का सामान भी है। हमें इनके बल से उनकी तोपों का मुकाबला करना है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यदि हम सम्मिलित होकर युद्ध करें तो उनकी तोपों को बेकार कर सकते हैं। युद्ध जीतने की पहली आवश्यकता होती है अनुशासन। यदि हम अनुशासित हैं तो वह हमें कदापि नहीं हरा सकता। जो स्थान जिसको दिया जाय, वह उसे उस समय तक नहीं छोड़े जबतक सेनापति आदेश नहीं देवे।

सैनिकों में से एक ने उठकर कहा—"हाँ महाराज, ऐसा ही होगा। हम अपने स्थान पर मर मिटेंगे, लेकिन उसे छोड़ेंगे नहीं।"

बलभद्रसिंह फिर बोलने लगे—"हमने कई स्थानों पर गहरी खाइयाँ अन्दर की तरफ खोदी हैं। सम्भवतः इन्हीं स्थानों पर शत्रु गोलाबारी करेगा—क्योंकि बाहर से इनको कमजोर दिखनेवाला बनाया है। जब शत्रु के गोलों से दीवाल विध्वंस होकर गिर पड़े तब वे उनके मार्ग से दुर्ग के भीतर घुसने की चेष्टा करेंगे। उस समय हमें उनका शिकार उसी भाँति करना है जिस प्रकार हिरनों का किया जाता है। यही हमारी खन्दकें उनके लिए कब्रें बन जावें।"

युद्ध समिति का सदस्य नाहरबहादुर बोल उठा—"हम नाहरों को हिरनों से क्या भय है?" यह कह कर वह अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरने लगा। उसने कुछ ऐसी भाव-भंगीमा बनाई जिससे सभी श्रोता हँस पड़े।"

बलभद्रसिंह पुनः बोले—"मैंने मानबहादुर को अपना मुख्य सहायक बनाया है। मेरे आने से पहले वह कलूँगा का दुर्गाधिपति था। यद्यपि कमान मैंने अपने हाथों में ले ली है, तथापि वह उसी पर स्थित रहेगा। उसका आदेश भी आप उसी प्रकार पालन करें जैसा मेरा करते हैं।"

सब ने प्रहृष्टमन से अपनी स्वीकृति दी। पार्वती के समीप गौरी बैठी थी। उसने एक हलकी चुटकी मारते हुए उसके कान में फुसफुसाया—"अब तो सैंया भए कोतवाल, डर काहे का।"

पार्वती ने चिहुँकते हुए कहा—"मर मुँहजली, तुझे हमेशा ठठोली सूझती है। यहाँ जीवन-मरण का प्रश्न हमारे सामने है, और तुझे सैंया बलमा की सूझ रही है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"मरण नहीं, जीवन का सुखद स्वप्न सामने है।" गौरी ने उत्तर दिया।

"चुप, वक-वक मत कर। सुन तो महाराज क्या कहते हैं।"

"बड़े महाराज तो अब बैठ गए हैं। अब दुर्ग की रक्षा का भार तेरे उनपर डालकर निश्चिन्त हो गए हैं। अब भई तू मेरी रानी है—तेरे हुक्म का पालन करना पड़ेगा।"

"अरे तू तो मेरे कान खाए जा रही है। अब तेरे पास कभीं नहीं बैठूँगी।"

यह कहकर वह उठने लगी। गौरी ने उसे पकड़ कर बैठाते हुए कहा—"अच्छा अब कुछ न बोलूँगा, तेरी सौंह।"

उधर बलभद्रसिंह के बाद मानबहादुर बोल रहा था—"भाइयों, यह युद्ध केवल पुरुषों का ही नहीं है—हमारी गोरखा नारियों को उसी तरह हाथ बटाना है, जैसे उन्होंने दुर्ग की प्राचीर बनाने में हमारा साथ दिया था। जो-जो नारी इस पुण्य-यज्ञ में भाग लेना चाहें वे अपने नाम मुझे लिखा दें। हमें अपने रक्षा-कार्य को कई भागों में विभक्त करना है, जो जिसके योग्य होगा उसे उस विभाग में काम करने का आदेश दिया जायगा। बोलिए, मैं लिख रहा हूँ।"

सबसे पहले उठकर खड़ी होनेवाली गौरी थी। उसने अपने स्थान से उठकर कहा—"महाराज, मेरा नाम लिखिए। मेरा नाम गौरी है। मैं बन्दूक चला सकती हूँ, और चाँदमारी में मुझे पुरस्कार मिला है।"

पार्वती मात खा गई थी। उसने वक्र दृष्टि से उसको निहारा, क्योंकि वह उसके द्वारा अपना नाम लिखवाना चाहती थी।

मानबहादुर ने नाम लिख लिया।

उसकी ओर से मुख फुलाए हुए पार्वती उठ खड़ी हुई, किन्तु कुछ क्षणों के लिए ठिठक गई, और फिर घिग्घी-सी बँध गई।

मानबहादुर ने पूछा—"क्या तुम्हारा नाम लिखा जाय?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पार्वती की चेतना जाग पड़ी। उसने हाँफती आवाज में उत्तर दिया—"हाँ।"

"तुम्हारा नाम?"

पार्वती सकपका गई। उसके मन ने कहा कि क्या मेरा नाम भी नहीं जानते?

उसने एक ही साँस में कह डाला, "पार्वती।"

"पिता का नाम?"

"सुमेर सिंह।" हकलाते हुए कहा।

"तुमने क्या शिक्षा पाई है?"

"बन्दूक चला सकती हो?"

"जी हाँ।"

"निशाना कैसा है?"

"मुझे सदैव प्रथम पुरस्कार मिला है।"

"अपना जातीय अस्त्र खुखड़ी चला सकती हो?"

"मेरा ख्याल है कि मैं चला सकती हूँ।"

"और तलवार?"

"वह भी"

"तीर कमान?"

"यह भी?"

"दौड़ सकती हो?"

"हाँ।"

"पहाड़ों पर चढ़ सकती हो?"

"अपने जीवन भर नैपाल्लन और गढ़वाल की पहाड़ियों पर दौड़ी हूँ।"

"यह सब किससे सीखा?"

"अपने पिता से।"

"अच्छा तुम्हारा नाम लिख लिया। गौरी और तुम एक साथ काम करोगी। एक दूसरे की पूरक रहोगी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बलभद्रसिंह ने सभास्थल से उठते हुए कहा—"मानबहादुर, यह काम करने के बाद मेरे पास आना, तब तक मैं दूसरे काम देखने जाता हूँ।"

बलभद्र सिंह चले गए। मानबहादुर दूसरे सैनिकों के नाम लिखने लगे।

●

: ६ :

जेनरल जिलेस्पी के द्वारा गफूर अरदली के मारे जाने की खबर अग्निकांड की भाँति सेना में फैल गई। भारतीय सिपाहियों की टोलियाँ अनेक प्रकार से इस हत्याकांड की विवेचना करने लगीं। यद्यपि खुलकर विरोध करने का साहस उनमें नहीं था तथापि उसकी चिनगारी धीरे-धीरे सुलगने लगी थी। वे भाड़े के सिपाही थे, और जीविका उपार्जन करने के अभिप्राय से फिरंगियों की सेना में भरती हुए थे। वे जानते थे कि उन्हें उनके जीवन और सुरक्षा की कोई परवाह नहीं है, बल्कि उनकी गणना बिल्लियों और कुत्तों की श्रेणी में की जाती है, परन्तु फिर भी मजबूरियाँ उन्हें फौज में भरती होने के लिए बाध्य करती थीं। वे फिरंगी सिपाहियों से मन-ही-मन घृणा करते थे। अंग्रेज भी इस बात को जानते थे, इसलिए वे सब उन पर क्रूर दृष्टि रखते थे। उनकी बारिकें अलग थीं तथा उनमें उन सभी सुख-सुविधाओं की कमी रहती जिनकी प्रचुरता अंग्रेज सैनिकों को प्राप्त रहती थी। तुच्छ से तुच्छ फिरंगी उनके बड़े-से-बड़े अफसर का अपमान करने में चूकता नहीं था। उनके लिए अदना-से-अदना तथा बुजदिल-से-बुजदिल सिपाही किसी अफसर से कम नहीं था, और उसको सम्मान सहित अभिवादन करना अनिवार्य था। इस नियम की अवहेलना पर अंग्रेज सिपाही जो दंड चाहते, देते थे, जिनके विरुद्ध कोई सुनवाई न होती थी। उनके जोवन का कोई मूल्य उनकी दृष्टि में नहीं था। रणक्षेत्र में घायल हो जाने पर भी उनकी चिन्ता फिरंगी सिपाहियों के बाद की जाती थी और जो घायल हो जाते थे उन्हें वहीं रणभूमि में मार दिया जाता था। सदैव भारतीय ही अपने साथियों के उपचार का

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रबन्ध करते। कभी किसी फिरंगी ने किसी भारतीय सैनिक की रणभूमि में युद्ध के पश्चात् किसी प्रकार की सहायता नहीं की। गफूर की मृत्यु जिस प्रकार हुई थी, वैसी मृत्यु बहुतायत से होती थी, उनकी कोई परवाह भी नही करता था, परन्तु इस मृत्यु ने एक हड़कम्प पैदा कर दिया। विद्रोह की चिनगारी सुलगने लगी जो धीरे-धीरे सन् १८५७ में प्रथम स्वातन्त्र्य युद्ध के रूप में भड़क उठी थी।

प्रायः रात्रि में ही सैनिकों को विचार-विनिमय का अवकाश मिलता था। उस दिन आलोचनाएँ-प्रत्यालोचनाएँ सर्वत्र होती रहीं। जहाँ दो-चार सिपाही मिल जाते, किसी न किसी रूप में फिरंगियों के निर्दय व्यवहार पर नुक्ताचीनो करते और कहीं-कहीं विद्रोह करने की बात भी चलाई जाती। इनमें से कितने ही स्वार्थलोलुप व्यक्ति थे। वे अंग्रेज अफसरों को खुश करने के लिए झूठी-सच खबरें सुनाया करते थे। यद्यपि उनको कोई अधिक लाभ नहीं होता था। परन्तु जो एक बार आदत बन जाती है वह हानि होने पर भी नहीं छूटती। फिरंगी अफसर ऐसे लोगों की सहायता से फौजी सिपाहियों को आपस में लड़ाया करते थे। मुस्लिम सिपाही प्रायः हिन्दू सिपाहियों से पृथक् रखे जाते थे। इसका प्रधान कारण था भोजन की व्यवस्था। मुसलिम सिपाहियों को भोजन एक अथवा दो-तीन लंगरों से मिलता था। उसमें कोई छुआ-छूत नहीं थी। अंग्रेज भी कभी-कभी उसमें खा लेते थे। अंग्रेजों के लंगर का सारा प्रबन्ध मुसलमान बावरची करते थे, इसलिए उनमें नैकट्य अधिक था। उनकी सेवा-चाकरी में प्रायः मुसलिम ही रखे जाते थे। इसके विपरीत हिन्दू सिपाहियों में बड़ी पृथक्ता थी। ब्राह्मणों का चौका अलग होता था, राजपूतों का भी उनकी ही भाँति पृथक् रहता था। शायद उसी समय 'आठ ब्राह्मण और नौ चूल्हे' की कहावत बनी है। किन्तु इतनी पृथक्ता होते हुए भी सम्मान के मामले में प्रायः एक हो जाते थे। उनमें भी कुछ लोग फिरंगियों का विश्वासभाजन बनने का प्रयत्न करते थे, किन्तु ऐसे व्यक्तियों का बहिष्कार किया जाता तथा गोपनीय बातें न उनके समक्ष

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

को जातीं और न उन्हें बताई जातीं। इतनी सतर्कता बरतने पर भी गुप्त खबरें पहुँच जाया करती थीं।

मेजर स्टीवेनसन नामक एक चतुर व्यक्ति गुप्तचर-विभाग का संचालक था। वह भारत में बोली जानेवाली कई भाषाओं का अच्छा जानकार था। वह उन्हीं लहजों से बातें करता था जो उस देश के निवासी के होते थे। उसका जीवन कई देशों में बीता था, इसलिए वह उन देशों के रीति-रिवाज से बखूबी वाकिफ हो गया था। वह बहुत मृदुभाषी था। वह सख्त से सख्त कलेजे के आदमी से भेद निकालने में पटु था। उसकी हँसी सर्वभयहारी थी। बातों ही बातों में वह प्रत्येक व्यक्ति को मोहित कर लेता था तथा अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर उसको वशीभूत करता था। बख़्शिश देने में वह मशहूर था। वह छोटे-छोटे अपराधों पर माफी भी दिलवा देता था, किन्तु यह कोई नहीं जानता था कि वह गुप्तचर विभाग का प्रधान अफसर है। वह 'अच्छा साहब' के नाम से प्रसिद्ध था और हिन्दू तथा मुसलिम सिपाही उसका विश्वास करते थे। कभी-कभी फौजियों का विश्वास प्राप्त करने के लिए वह अंग्रेज अफसरों की बुराइयाँ भी करता था।

उसके विश्वासपात्र दो ही व्यक्ति थे—एक हिन्दू पंडित और दूसरा मुसलिम मुल्ला। पंडित का नाम था गोवर्धन और मुल्ला का नाम नसीरुद्दीन। किन्तु वह केवल नसीर के नाम से विख्यात था। दोनों अपने-अपने ठाट में रहते थे और वे अपने-अपने धर्मावलम्बियों को धर्म-शास्त्र सुनाया करते थे।

दो पहर रात्रि बीत चुकी थी। छावनी में सर्वत्र सन्नाटा था। कभी-कभी कुत्तों के भूँकने से शांति भंग होती थी। मियाँ नसीर ने उठकर अपने खेमे का द्वार खोलकर बाहर झाँका और आहट लेने लगा। जब उसे कोई सन्देह नहीं हुआ, वह दबे पैरों से भारतीय बारिक से निकलकर फिरंगियों की बारिक में प्रविष्ट हुआ। वहाँ पहरे का पूरा इन्तजाम था। जब सन्तरी ने उसे ललकारा तब उसने उस रात्रि के लिए निश्चित संकेत

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बता दिया। फिरंगी सन्तरी ने उसे जाने दिया। उसने सीधे मेजर स्टीवेनसन के खेमे में पहुँचकर बाहर खड़े चौकीदार से साहब को सूचित करने को कहा। पहरेदार उसको अच्छी तरह जानता था। बिना कोई प्रश्न पूछे उसने मेजर से, जो अभी तक सोया नहीं था—शायद अपने किसी गुप्तचर की रिपोर्ट सुनने के लिए तैयार बैठा था, मुल्ला के आने की सूचना दी। उसने उसे तुरन्त हाजिर करने का आदेश दिया।

मुल्ला को देखते ही उसने पूछा—"क्या खबर है? कोई नई बात हुई क्या?"

"जी हुजूर, फौज के कुछ सिपाही बगावत करने पर आमादा हैं।"

"बगावत!"

"जी हाँ, हुजूर बगावत।"

"सबब क्या है?"

"आज सबेरे का हादिसा"

"सबेरे का कौन हादिसा?"

"जेनरल साहब बहादुर ने अपने अरदली को मार डाला।"

"क्या बकता है! जेनरल साहब ने उसे छुआ तक नहीं था। वही चारपाई से उछल कर गिर गया और पाया लग जाने से उसकी तिल्ली फट गई और वह मर गया। इसमें बड़े साहब का क्या कुसूर है?"

"चाहे जो कुछ हो हुजूर, मैं असलियत से वाकिफ नहीं हूँ। लेकिन फौज का रंग बदरंग है।"

"अकेले मुसलमान सिपाही भड़के हैं या हिन्दू भी? मेरा ख्याल है कि हिन्दू अलहिदा रहे होंगे।"

"जी नहीं, हिन्दू-मुसलमान दोनों बिगड गए हैं। इज्जत-आबरू के मामले में सब हिन्दुस्तानी एक हो जाते हैं।"

"इसमें इज्जत-आबरू का कोई सवाल ही नहीं है!"

"हुजूर, वे कहते हैं कि कम्पनी बहादुर की नौकरी में न किसी की इज्जत है और न जान-माल की हिफाजत।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"यह कैसे ? यह कम्पनी बहादुर का दबदबा है जिससे तमाम मुल्क में अमन-आमान छाया हुआ है।"

"यह सच है हुजूर, लेकिन सिपाही तो विना सींग के बैल होते हैं। जो बात उन्हें समझा दो फिर उस पर अड़ियल टट्टू की तरह अड़े रहेंगे, जान भले ही जाय।"

"यह झूठी खबर किसने फैलायी है ?"

"बड़े साहब के खानसामा अली मोहम्मद ने।"

"वह तो एक भला आदमी है।"

"मैं उसे कब बुरा कहता हूँ हुजूर।"

"इसकी जड़ में अली मोहम्मद है ?"

"जी हाँ, हुजूर।"

"क्या तुम मुसलमानों को नेक रास्ते पर नहीं ला सकते ?"

"हुजूर, बहुत मुश्किल है।"

"नामुमकिन तो नहीं ?"

"हुजूर के इक़बाल से कोई काम नामुमकिन नहीं होता अगर जी-जान से किया जाय।"

"तो फिर तुम्हें यह करना होगा।"

"लेकिन हुजूर, यह खर्च-तलब है।"

"कितना खर्च लगेगा ?"

"कम से कम पाँच सौ रुपया।"

"इतनी बड़ी रकम ?"

"जी हाँ, हुजूर इससे कम में काम नहीं चलेगा।"

स्टीवेनसन सोचने लगा।

मुल्ला ने ताड़ लिया कि साहब खर्च करेगा। अभी थोड़ी और सान चढ़ाने की जरूरत है। उसने आजिजी के साथ कहा—"हुजूर को अगर कोई पसोपेश हो तो मैं उन मुखियों को पेश कर दूँगा और हुजूर अपने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हाथ से तक़सीम कर दें। अगर यह कुबूल न हो तो कमतरीन हुज़ूर के रूबरू तक़सीम कर दे।"

"नहीं-नहीं। यह मैं मन्ज़ूर नहीं करता। तुमको रुपया हम देगा, लेकिन कल, आज नहीं।"

मुल्ला ने फर्शी सलाम किया। फिर कहा—"हुज़ूर, पंडितजी को भी बुलवाइये।"

"हाँ, उसको तुम भेज देना। देखो, उसको कुछ मत बोलना।"

"हुज़ूर का तो मैं पुराना गुलाम हूँ। क्या हुज़ूर को कभी कोई मौका शिकायत का मिला है?"

"ठीक है। देखो, मुसलमान सिपाही सिर न उठाएँ, नहीं तो तुम्हारी गरदन हलाक की जायगी। जाओ। कल मैं रुपया दो सौ दूँगा। इससे ज्यादा एक पाई भी नहीं मिलेगी।"

"हुज़ूर वे लोग छोटे बड़े मिलाकर दो-ढाई सौ आदमी हैं। ओहदे व ओहदे बटते-बटते फी शख्स एक रुपये से ज्यादा नहीं पड़ेगा।"

"मगर यह बहुत है। हम दो सौ से ज्यादा नहीं दे सकता। कम्पनी बहादुरर का रुपया....।" कहने-कहते रुक गया। फिर कहा—"अगर वे नहीं मानें तो हम परवाह नहीं करता। हम बगावत कुचलना जानता है। हमारी तोपें उनका नाम निशान मिटा देंगी। बस जाओ। सलाम।"

मुल्ला को जाना ही पड़ा।

अभी वह बाहर गया ही था कि स्टीवेनसन ने वापस बुलाया—"मुल्ला साहब!"

मुल्ला के वापिस लौट आने पर कहा—"तुमने मुखियों के नाम नहीं बतलाये। उनके मुकम्मिल नामों की फेहिरिस्त तैयार कर पेश करो।"

"क्या हुज़ूर उनको सजा देंगे?"

"बेशक, कम्पनी बहादुर के दुश्मन को जो सजा मिलनी चाहिए वह उन्हें दी जायगी।"

"हुज़ूर, इससे आग भड़केगी।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"हम परवाह नहीं करता। आग बुझाना हम खूब जानता है।"

"हिन्दुस्तानी सिपाही अंग्रेजी फौज से दो गुने हैं।"

"हमको डर दिखता है?"

"गुलाम, ऐसी गुस्ताखी करने की जुर्रत नहीं कर सकता। मैंने महज तायदाद बताई है।"

"तुमको कम्पनी बहादुर से रुपया मिलता है?"

"हाँ हुजूर!"

"फिर उस रुपये को हलाल करो। तुम यह जान लो कि अगर एक भी मुसलमान सिपाही ने बगावत की, तो उसके पहले तुम्हें हलाक किया जायगा। जाओ, तुमको एक पैसा भी नहीं मिलेगा। तुम नौकर किस लिए है?"

"हुजूर!"

"कुछ नहीं हुजूर सुनेगा। बस जाओ। सन्तरी!"

"मुल्ला ने देखा कि अब खैर नहीं है इसलिए सिर पर पैर रखकर भागा।

स्टीवेनसन बुदबुदाया—"हरामजादा ठगने आया था!" और वह हँसने लगा।

●

## : ७ :

पंडित गोवर्धन के आने पर स्टीवेनसन ने कहा—"क्या हाल-चाल है? कोई नई खबर है?"

गोवर्धन स्टीवेनसन के रुख से परिचित हो चुका था। उसने दूसरी तरह बातचीत आरम्भ की। वह थोड़ी देर चुप रहकर उसके मनोभावों को ताड़ने लगा।

स्टीवेनसन ने फिर पूछा—"बोलता नहीं, क्या खबर है?"

"हुजूर के इकबाल से सब साबिक दस्तूर है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"नसीर बोलता था कि हिन्दुस्तानी फौज बगावत करने पर आमादा है। क्या बात है ?"

"मैंने ऐसी कोई बात नहीं सुनी और न जानता हूँ।"

"फिर नसीर क्यों ऐसी बात करता था ?"

"हुजूर यह वह जाने।"

"तुम कुछ नहीं जानते।"

"नहीं हुजूर। हिन्दू फौजी तो कम्पनी सरकार की जय-जयकार मना रहे हैं।"

"गफूर की मौत के बारे में क्या कहते हैं ?"

"हुजूर, वह तो अपनी मौत से मरा है। लोग क्या कहेंगे ? ऐसी दस-बीस मौतें हरसाल होती रहती हैं, इनकी कौन परवाह करता है।"

"नसीर कहता था कि हिन्दुस्तानी फौजी कहते हैं कि बड़े साहब ने अपने अरदली को मार डाला है, दूसरे वे बगावत करना चाहते हैं।"

"हुजूर यह सफेद झूठ है।"

"तुम सच बोलता है ?"

"किसकी मजाल है जो हुजूर के सामने झूठ बोल सके।"

"फिर नसीर ऐसा क्यों कहता था ?"

"हुजूर मुमकिन है कि मुसलमानी फौज में कोई गड़बड़ हुई हो। गफूर मुसलमान था, इसलिए उसकी हिमायत मुसलमान कर सकते हैं, जिसकी जानकारी मुझे कत्तई नहीं है।"

"हिन्दू फौजी मुसलमानों के साथ नहीं हैं ?"

"नहीं हुजूर, कभी दोनों में मेल-मिलाप हो नहीं सकता। वे म्लेच्छ हैं। हिन्दू उनका छुआ नहीं खा सकते।"

"यह मालूम है, लेकिन....."

"हुजूर, मैं हमेशा हिन्दुओं को सिखाता हूँ कि मुसलमान सिपाहियों से मेल-मिलाप न रखो।"

"तुम्हारी शिक्षा का कोई असर हुआ है ?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"बेशक। आप स्वयं देख लेवें कि हिन्दू फौजी, कम्पनी बहादुर के नमकहलाल सिपाही हैं। उन्होंने हर लड़ाई में अपने जौहर दिखाए हैं।"

"इस बार लड़ाई हो रही है नैपालियों के साथ जो हिन्दू हैं।"

"हुजूर सिंधिया और पेशवा भी तो हिन्दू राजा थे। उन्होंने कब उनका साथ दिया है?"

"ठीक है, तब हिन्दू फौज पर मैं भरोसा कर सकता हूँ।"

"इसमें आप तनिक भी सन्देह न करें।"

"अगर कोई गड़बड़ी हिन्दू फौज ने की तो उसके लिए तुम जिम्मेवार होगे। तुम्हारी गरदन पहले उड़ाई जायगी।"

"लीजिए हुजूर यह सिर हाजिर है। मैं कभी नमकहरामी नहीं कर सकता।"

"क्या तुम कलूँगा गढ़ में प्रवेश कर सकते हो?"

"जी हाँ, बहुत अच्छी तरह। मैं ब्राह्मण हूँ, और ब्राह्मण हिन्दुओं के पूज्य हैं।"

"फिर वहाँ की भीतरी तैयारी की खबर लाओ।"

"हुजूर, कोशिश करूँगा।"

"तुमको इनाम दिया जायगा।"

"उसकी क्या जरूरत। कम्पनी बहादुर का रुपया मिलता है।"

"तुम्हारी कारगुजारी अच्छी होगी तो तुम्हें इनाम दिया जायगा। कम्पनी सरकार दरिया-दिल सरकार है। वह अपने आदमियों को भरपूर इनाम देती है।

"हुजूर का एक-एक पैसा मेरे लिए मोहर है।"

"दो दिन में खबर ला सकते हो?"

"जी हाँ हुजूर!"

"कल सबेरे चले जाओ।"

"जो आज्ञा हुजूर!"

पंडित गोबर्धन जाने लगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्टीवेनसन ने दस रुपए जेब से निकाल कर देते हुए कहा—"यह सफर खर्च के लिए लो।"

"हुजूर के इकबाल से इसकी कोई जरूरत नहीं। अभी कल ही वेतन मिला है।"

"नहीं, यह ले जाओ, मैं खुशी-खुशी देता हूँ।"

पंडित गोवर्धन ने और हीला-हवाला नहीं किया। रुपए लेकर जेब में रखे और फर्शी सलाम किया।

"तुम हमको कब खबर लाकर देगा?"

"हुजूर बहुत जल्द। गढ़ में एक बार प्रवेश तो कर पाऊँ। सुना है कि वहाँ जबरदस्त पहरा लगता है।"

"तुम बहुत आसानी से घुस जाओगे, मुझे यकीन है। उसकी पूरी-पूरी जानकारी करके आओ।"

"हुजूर का हुक्म सिरमाथे पर है। भगवान् ने चाहा तो परसों शाम तक खबर लेकर हाजिर हो जाऊँगा।"

"ठीक है। तुम को जिस चीज की दरकार हो, वह भी बोलो।"

"हुजूर, अगर एक घोड़ा मिल जाता, तब काम में शीघ्रता हो सकती है।"

"घोड़े से क्या करेगा?"

"हुजूर इधर से जाने में जरूर सन्देह होगा। मैं कलूँगा के पीछे की तरफ से जाऊँगा। पहाड़ियों का चक्कर काट कर जाना होगा।"

"घोड़ा वापिस करना होगा।"

"जरूर वापिस करूँगा। इतनी थोड़ी तनख्वाह में मैं क्या घोड़ा रख सकता हूँ!"

"अगर तुम्हारी दी हुई खबरें सच निकलीं तो तुम्हारी तनख्वाह में एक रुपए की तरक्की की जायगी।"

पंडित गोवर्धन ने पुनः फर्शी सलाम किया।

"नसीरं ने जो बगावत की बात बताई है, वह झूठ है।"

वन्दिता : [illegible]

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"जहाँ तक मेरा ख्याल है, वह सही नहीं है। मुमकिन है कि ग़फूर के भाई-बन्धु कुछ गड़बड़ करने की सोच रहें हों और उसकी खबर मुल्ला साहब को लगी हो। मुल्ला साहब झूठ नहीं बोलते।"

"बगावत दबाने के लिए वह कम्पनी सरकार से पाँच सौ रुपए माँगता था।"

"वह बहुत होशियार आदमी है। उसने हाल-चाल लेने के लिए कुछ गुर्गे बना रखे हैं। रुपया मिलने पर वे काम करते हैं। उनको ही देने के लिए वह रुपया माँगता होगा।"

"तुम्हारे गुरगे नहीं हैं क्या ?"

"उनके बिना तो काम नहीं चल सकता। इतनी बड़ी फौज में हर एक आदमी के दिल से बात निकालना कई आदमियों की सहायता के बिना संभव नहीं है।"

"लेकिन तुम रुपया नहीं माँगता।"

"अगर कोई काम ऐसा पड़ जाय जिसमें रुपयों की जरूरत हो, तब मुझे यह बात हुजूर की पेशी में लानी ही पड़ेगी।"

"अब वह अपने लिए रुपया नहीं माँगता था ?"

"मेरा ऐसा ख्याल नहीं है। वह बड़ा नमकहलाल नौकर है। कम्पनी बहादुर के लिए यह अपने प्राण निछावर कर सकता है।"

"तुम ठीक-ठीक कहते हो ?"

"जी हाँ हुजूर।"

"उसको रुपया देना चाहिए ?"

"यह हजूर के जानने-समझने की बात है। जिस बात की मुझे जानकारी नहीं उसके बारे में मैं क्या कह सकता हूँ ?"

"अच्छा तुम जाओ। परसों रात तक आकर खबर देना।"

पंडित गोवर्धन चले गये। दस रुपयों की प्राप्ति उन्हें शीघ्र-शीघ्र चलने के लिए उत्साहित करने लगी।

स्टीवेनसन उसके जाने के बाद बोला—'यह मुल्ला से मिला हुआ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

है। दोनों में फूट डालना जरूरी है, तभी काम चलेगा। कलूँगा की खबर आने दो, फिर इस मसले पर विचार किया जायगा।"

पंडित गोवर्धन जाकर सबसे पहले मुल्ला साहब से मिले और उनसे सारी रिपोर्ट देकर कहा—"मैं तो सुबह कलूँगा दुर्ग की ओर जा रहा हूँ, अब तुम यहाँ सँभालना।"

दोनों मंत्रणा करने लगे।

कम्पनी सरकार की युद्ध-समिति की बैठक बुलाई गई थी। जेनरल जिलेस्पी उसके अध्यक्ष थे। सदस्यों में मिस्टर फ्रेज़र, आनरेबुल एडवर्ड गार्डनर, लेफ्टीनेन्ट फ्रेडिरिक यंग, लेफ्टीनेन्ट कर्नल जार्ज कारपेन्टर, कैप्टेन जे० डब्ल्यू० फास्ट, मेजर वार्टलेट केली, कैप्टेन विलियम कैम्पधेल, मेजर जान जुडलो आदि युद्ध विशारद थे। इनमें से सबों ने जीवन भर लड़ाइयाँ ही लड़ी थीं।

जिलेस्पी ने कहा—"हमें नैपाल विजय करना है। हम उस पर चार दिशाओं से आक्रमण कर रहे हैं। हमारा ध्येय है कि हम नैपाल को अपने अधिकार में कर अपनी उत्तरी सीमा को दृढ़ कर लें। नैपाल को विजय करने के बाद हम पंजाब की ओर अग्रसर होंगे। संक्षेप में यही हमारी योजना है!"

मिस्टर फ्रेजर ने सबकी ओर से कहा—"हम इस योजना को अपने प्राण देकर पूर्ण करेंगे।"

जिलेस्पी फिर कहने लगा—"इस योजना को पूर्ण करने के लिए हमारा एक दस्ता पश्चिम उत्तर से मेजर जेनरेल आक्टरलोनी की कमान में लुधियाना से सतलज के पहाड़ी क्षेत्र में प्रवेश कर अमर सिंह पर आक्रमण करेगा तथा हिमालय प्रदेश से गढ़वाल तक के क्षेत्र को अपने अधीन करेगा। इस दस्ते में लगभग सात हजार चुने जवान और दो अट्ठारह पाउण्ड वाली, दस छः पाउण्ड वाली और चार हल्की तोपें हैं।"

आनरेबुल एडवर्ड गार्डनर ने कहा—"अमरसिंह एक चालाक और

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चुस्त नैपाली है, जो हमारी गिरफ्त से कई बार निकल भागा है। अब वह सहज ही घिर जायगा।"

जिलेस्पी फिर बोला--"दूसरा दस्ता मेरी कमान में गढ़वाल तथा उसकी राजधानी श्रीनगर पर आक्रमण कर नैपाल राज्य के उस क्षेत्र को अपने अधीन करेगा जो देहरादून से उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। हमारे इस दस्ते का दायित्व सबसे ज्यादा है। हमें गढ़वाल को सर करने के बाद अमरसिंह के भागने का द्वार बन्द करना है। इसीलिए आप जैसे अनुभवी रण-विशारदों की सहायता ली गई है। हमारी सहायता के लिए दो बारह पाउण्ड वाली, आठ छः पाउण्ड वाली और चार छोटी तोपें हैं।"

मेजर लुडलो ने कहा—"किन्तु यह पर्याप्त नहीं है।"

जिलेस्पी ने तुरन्त बात काटी--"पर्याप्त नहीं? मैं समझता हूँ कि यह बहुत ज्यादा है। इन पहाड़ी चूहों को मारने लिए यह काफी से भी ज्यादा है। लेफ्टीनेन्ट फ्रेड्रिक यंग अपने साथ जो छः, सात हजार अनियमित सैनिक लेकर आए हैं, उनसे हमारी शक्ति कई गुना बढ़ जाती है। कई तोपें भी आ रही हैं। मैं तो अपनी ही सेना से नैपाल जीतने का हौसला रखता हूँ।"

मिस्टर फ्रेजर ने कहा—"ये सिपाही अनियमित अवश्य हैं, परन्तु कई लड़ाइयों में उन्होंने हमारा साथ दिया है। इनकी नमक हलाली के लिए मैंने गवर्नर जेनरल को जमानत दी है।"

जिलेस्पी ने आगे बताया—"ठीक है। तीसरा दस्ता बनारस और गोरखपुर से मेजर जेनरल जान सिलवन उड की अध्यक्षता में बुटवल और पाल्पा पर आक्रमण करेगा। इनकी कमान में हमारे पैंतालीस सौ चुने हुए सैनिक हैं और हिन्दुस्तानी जवानों की संख्या भी लगभग इतनी ही है। इसके साथ चार तोपें छः पाउण्ड का गोला दागनेवाली, तीन तोपें तीन पाउण्ड का गोला फेंकनेवाली और चार छोटी तोपें हैं।"

मिस्टर फ्रेजर ने कहा—"गवर्नर जेनरल का आदेश है कि हमारी दोनों सेनाएँ दुश्मन पर फतेह पाती हुई इस तीसरे दस्ते पर मिल जावें।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जिलेस्पी ने कहा–"ऐसा ही होगा। चौथा दस्ता पटना और मुर्शिदाबाद से रवाना होकर सीधे काठमाण्डू पर आक्रमण करेगा। यह हमारा सबसे बड़ा दस्ता है, जिसमें लगभग बारह हजार चुनिन्दा सैनिक हैं। इसके साथ चार तोपें अट्ठारह पाउण्डवाली, चार तोपें छः पाउण्डवाली, चार तोपें तीन पाउण्डवाली और बारह छोटी तोपें हैं। इस प्रकार हम इतनी तैयारी से नैपाल का नामोनिशान मिटा देना चाहते हैं।"

सबने तालियाँ बजाकर हर्षध्वनि की।

जिलेस्पी ने फिर कहना आरम्भ किया—"हम अपनी योजना का छाया चित्र आप के सम्मुख रखा है। अब मैं आप को यह बताना चाहता हूँ कि हम कैसे अपनी सेना का संचालन करेंगे। हम सबसे पहले तिनली दर्रे पर अधिकार कर देहरा लेंगे। इसका भार रहेगा लेफ्टीनेन्ट कर्नल जार्ज कारपेन्टर पर।"

कारपेन्टर ने खड़े होकर कहा—"बड़ी प्रसन्नता से मैं इस दायित्व को ग्रहण करता हूँ। मैं अपना कर्त्तव्य पालन करने में अपनी सारी शक्ति लगा दूँगा।"

जिलेस्पी—"ठीक है। आगे तुमको कलूँगा दुर्ग पर आक्रमण करना है। कलूँगा एक तुच्छ गढ़ है, जिसकी मजबूती पर नैपालियों को बड़ा नाज है। इसकी ईंट से ईंट बजाकर उसे भूमिसात् करना है।"

कारपेन्टर—"यह मैं बखूबी करूँगा। कलूँगा का नामोनिशान नहीं रहने दूँगा।"

जिलेस्पी—"मुझे आप से यही आशा है। इसमें आप अकेले नहीं रहेंगे। कैप्टेन फास्ट, मेजर बार्टलेन केली, कैप्टेन विलियम केम्पबेल अपनी अपनी कम्पनियों के साथ आपकी सहायता करेंगे और मेजर लुडलो अपनी टुकड़ी के साथ आरक्षित सेना के रूप में काम करेंगे।"

मेजर लुडलो ने प्रसन्न कंठ से कहा—"आपकी यह योजना बड़ी सूझ-बूझ से बनाई गयी है। हम सब इसका स्वागत करते हैं।'

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जिलेस्पी—"मेरी योजना का दूसरा चरण है कि कर्नल कारपेन्टर और मेजर लुडलो देहरा से आगे चलकर पठार पर अधिकार करें और वहाँ तोपों की शिस्त बनावें। आप लोग यहाँ से तीसरे पहर रवाना होंगे जिससे रात्रि पड़ते-पड़ते वहाँ पहुँच जायें और अँधेरे में कार्य आरम्भ कर दें।"

कारपेण्टर—"इसी प्रकार कार्रवाई की जायगी।"

जिलेस्पी—"फास्ट, केला और कैम्पवेल इस पठार को तीन ओर से घेरेंगे। मेजर केली 'जाघीर कीना' के मार्ग से 'कुरसली पर, कैप्टेन फास्ट, लखूँदा' गाँव की ओर से उसके जंगली भाग पर जहाँ उन्होंने पत्थरों के बड़े-बड़े ढोंके डालकर रास्ता अवरुद्ध कर दिया है, और कैम्पवेल 'उस ताल' नामक गाँव के मार्ग से पहुँच कर आक्रमण करेंगे और इस प्रकार कारपेन्टर की सेना के साथ सब मिल जायेंगे।"

तीनों सेनानायकों ने खड़े होकर अपनी स्वीकृतियाँ दीं।

जिलेस्पी—"मैं आप लोगों को स्पष्ट रूप से बता देना चाहता हूँ कि जिन लोगों से इस बार आप का मुकाबला पड़ रहा है वे बहुत वीर और साहसी हैं। अभी तक हिन्दुस्तान में ऐसे वीरों से लड़ने का अवसर नहीं मिला था। अपने प्राणों की मोह इन्हें तनिक भी नहीं है। इसलिए आप को बड़ी सतर्कता और धीरता से लड़ना है। इसके अतिरिक्त आपको इन हिन्दुस्तानी सिपाहियों पर भी दृष्टि रखनी चाहिए। कहीं ये लोग दुश्मनों से मिल न जायँ, इस ओर से आपको सावधान रहना है। सुनने में आया है कि हिन्दुस्तानी सिपाही बगावत करने पर आमादा हैं। इतना आपको जान लेना चाहिए कि हिन्दुस्तानी केवल भय से वशीभूत होते हैं। जहाँ जरा भी आपको उनकी ईमानदारी पर शक हो, तुरन्त उन्हें तोपों से उड़ा दें। मुझ से हुक्म लेने की कोई जरूरत नहीं है।"

स्टीवेनसन ने उठकर कहा—"मैंने इसका बन्दोबस्त कर दिया है। मुसलिम सिपाहियों में कुछ गड़बड़ हुई थी, परन्तु मैंने उनके मुखियाओं को

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मय मुल्ला के फौज के सामने हो कत्ल करवा दिया है। उनके हौसले पस्त हो गए हैं, लेकिन फिर भी सतर्क रहने में कोई हानि नहीं है।"

जिलेस्पी—"मैंने सब रीति-नीति समझा दी है। अब आप अपना-अपना कर्त्तव्य पालन कीजिए।"

सबने एक स्वर में आश्वासन दिया—"हम अपने प्राणों की बाजी लगाकर आपकी योजना को कार्यान्वित करेंगे।"

जिलेस्पी—"यद्यपि इसकी आवश्यकता नहीं है, तथापि नियमानुसार मैं अपने उत्तराधिकारी को आपके परामर्श से नियुक्त करना चाहता हूँ।"

फ्रेजर ने इसके प्रतिवाद में कहा—"अभी इसकी कोई जरूरत नहीं है।"

जिलेस्पी—"दर असल मैं भी इसकी कोई जरूरत नहीं समझता, किन्तु यह युद्ध है; कब कोई मृत्यु का शिकार हो जाय, कोई नहीं कह सकता है। इसलिए युद्ध आरंभ होने के पहले कमांडिंग जेनरल को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर देना होता है ताकि युद्ध-प्रयास में कोई बाधा न पड़े।"

"आप जिसको चाहें नियुक्त कर देवें।"

"मैं कर्नल माबी को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता हूँ, इसमें किसी को आपत्ति है?"

सब एक दूसरे का मुँह देखने लगे। बीच-बीच में कानाफूसी भी चलने लगी।

अन्त में फ्रेजर ने सबकी ओर से कहा—"हममें से किसी को आपत्ति नहीं है। हम प्रसन्नता से आपके सुझाव का अनुमोदन करते हैं। कर्नल माबी यहाँ नहीं हैं।"

"मैंने उनको अन्यत्र आवश्यक कार्य से भेजा है। आप लोगों ने मेरे सुझाव को स्वीकार कर लिया, जिसका मैं तहेदिल से आपका शुक्रिया अदा करता हूँ।"

"वह सर्वथा सुयोग्य सेनापति होंगे। इसमें हमें सन्देह नहीं है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"अब आप के सम्मुख कलूँगा के शासक बलभद्र सिंह थापा का, जो अमर सिंह थापा का भतीजा है, पत्र रखना चाहता हूँ। मैंने उसको पत्र द्वारा सूचना दी थी कि यदि कलूँगा हमारे सिपुर्द कर दो तो तुम्हारे और तुम्हारे साथियों को प्राण-भिक्षा दी जायगी, नहीं तो उसकी ईंट से ईंट बजा दी जायगी और तुम सब हमारी तोपों से उड़ा दिए जाओगे।"

"आपने ठीक ही लिखा था। क्या उत्तर आया ?"

"उसका उत्तर मिला है, लेकिन वह निहायत बेहूदा और गुस्ताखाना है।"

"आखिर क्या लिखता है वह ?"

"यही कि अगर फिरंगी फौज के सेनापति नैपाल की अधीनता स्वीकार कर लें, तब उनको सही-सलामत हिन्दुस्तान से जाने दिया जायगा, नहीं तो पामाल कर उनकी लाशें समुन्दर में फेंक दी जायँगी।"

सभा में सन्नाटा छा गया। सबकी त्यौरियाँ क्रोध से चढ़ गईं। सबके मुँह से निकला—"उस पहाड़ी चूहे की यह जुरअत !"

जिलेस्पी—"हाँ उसकी ध्वनि यही है। अब लड़ने के सिवाय कोई अन्य मार्ग न रह जाने से मुझे युद्ध की योजना बनानी पड़ी।"

फ्रेजर—"गवर्नर जेनरल साहब भी जब हर तरह से कोशिश करके हार गए हैं, तब युद्ध करने का निश्चय किया गया है।"

कारपेन्टर ने सक्रोध कहा—"मैं शीघ्र कूच करने की अनुमति चाहता हूँ।"

जिलेस्पी—"तुम्हारी सब तैयारी है ?"

कारपेन्टर—"जी हाँ, हम पूरी तरह से तैयार हैं, केवल आपके आदेश की प्रतीक्षा है।"

जिलेस्पी—"कल बीस अक्टूबर है। तुम कल जिस समय चाहो रवाना हो सकते हो।"

कारपेन्टर—"आपने तीसरे पहर हमारी रवानगी का समय नियत किया है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जिलेस्पी—"उसी वक्त रवाना होना ठीक रहेगा, जिसमें तुम अँधेरा पड़ने के पहले 'तिनली' दर्रे से गुजर कर पठार पर अधिकार जमाकर तोपों की शिस्त अगले दिन के आक्रमण के लिए ठीक कर लो। कल ही फास्ट, केली और कैम्पबेल भी अपनी-अपनी सेनाओं के साथ रवाना हो जायेंगे। रात्रि अब काफी गुजर गई है। मैं सभा की काररवाई समाप्त करता हूँ।"

यह कह कर तेजी से उसने अपने शयन-कक्ष में प्रवेश किया, और युद्ध-समिति के सब सदस्य बलभद्र सिंह का गर्वोन्नत मस्तक चूर्ण-विचूर्ण करने के उपायों पर विचार करते हुए अपने-अपने स्थानों पर चले गए।

इसी समय एक घुग्घू जेनरल जिलेस्पी के बँगले की छत पर भयंकर स्वर से भविष्य की सूचना देने लगा।

## : ८ :

कलूँगा दुर्ग के प्राङ्गण में चाँदमारी हो रही थी। नर-नारी अपने-अपने अभ्यास की परीक्षा दे रहे थे। बलभद्र सिंह परीक्षक थे। लगभग सवा सौ गज की दूरी पर वेध-चिह्न रखा गया था।

सबसे पहले मानबहादुर को परीक्षा देने का आदेश हुआ। उसने बन्दूक उठाई, निशाना साधा और लक्ष्य वेध दिया।

इसके बाद बलभद्र सिंह दूसरे सैनिकों के नाम लेकर पुकारने लगे, और वे लक्ष्य वेध कर अपने-अपने स्थानों पर बैठते गए।

पुरुषों के पश्चात् नारियों की बारी आई। पार्वती ने गौरी को आगे ठेलते हुए कहा—"कलमुँही, जाती क्यों नहीं?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गौरी ने उसकों आगे घसीटते हुए कहा—"तेरा हक कैसे छीन सकती हूँ ? तू हमारी राजरानी है ।"

"फिर नाम लिखाने के समय क्यों पहले उठ खड़ी हुई थी ?"

"तेरी सौंह, उस दिन मुझे तनिक भी भान नहीं रहा । मैं बिल्कुल अवश हो गई थी । उन्होंने नाम लिखाने को कहा और मैं उठ खड़ी हुई । मुझे क्या मालूम था कि तू रूठ जायगी । बस इतनी ही सच्ची बात है ।"

"चल झूठी कहीं की । अच्छा इस बार मेरे अनुरोध से ही तू पहले परीक्षा दे । यह कहकर उसने उसे आगे ठेल दिया । गौरी सकपका कर वहीं ठिठक गई । उधर मानबहादुर ने पुकारा—"गौरी, परीक्षा दो ।"

उन शब्दों की झंकार उसे उद्वेलित करने लगी । एक विद्युत् तरंग उसके शरीर में दौड़ गई । उसी क्षिप्रता से उसने बन्दूक उठाई और गोली चला दी । वह लक्ष्य वेध करती हुई निकल गई । प्रांगण हर्षध्वनि से मुखरित होने लगा । उसके बाद पार्वती आगे आई ।

मानबहादुर ने पूछा—"देवि तुम्हारा नाम ?"

उसने नत नेत्रों से उत्तर दिया—"पार्वती ।"

"पिता का नाम ?"

पार्वती ने सकोप दृष्टि से मानबहादुर की ओर देखते हुए उत्तर दिया—"किलेदार समर सिंह ।" फिर धीमे स्वर में कहा—"सब जान कर भी अनजान बनते हैं ।" ये शब्द मान वहादुर तक नहीं पहुँचे, परन्तु गौरी ने सुन लिया । वह हँस पड़ी । पार्वती ने कुपित दृष्टि से देख कर कहा—"चुप, कलमुँही ।"

उधर मानबहादुर ने आह्वान किया—"देवि, परीक्षा दो ।"

पार्वती सँभली और बन्दूक उठा कर निशाना साधा, परन्तु आवेग से उसका हाथ हिल गया, और गोली लक्ष्य से दूर हट कर गिरी । उत्सुक दर्शकों में नीरवता छा गई ।

उनमें से कितने ही चिल्ला उठे—"नायक ने घबड़वा दिया है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एक अवसर और दिया जाये।" मानबहादुर ने जनमत को स्वीकार कर पुनः लक्ष्य वेध करने का आदेश दिया।

पार्वती इस बार सावधान थी। उसने किसी ओर न देख कर निशाना साधा और इस बार गोली लक्ष्य के मध्य विन्दु को विदीर्ण करती हुई निकल गई। जनता हर्षध्वनि करने लगी।

पार्वती शरमाती हुई नारियों के झुण्ड में प्रविष्ट हो गई।

इसके बाद अन्य नारियों ने परीक्षाएँ दीं, अधिकांश उनमें उत्तीर्ण हुईं।

चाँदमारी समाप्त होने पर बलभद्र सिंह कहने लगे—"आप सबको मैं अपनी तथा राज्य की ओर से बधाई देता हूँ। जैसी कुशलता आपने दिखाई है वैसी ही आप युद्ध में प्रदर्शित करेंगे। यदि हमारी एक-एक गोली व्यर्थ नहीं जायगी, तब मुझे विश्वास है कि शत्रु पराजित होकर पीठ दिखा देगा। मैं आपको अपने निजी अनुभव से बता देना चाहता हूँ कि फिरंगी प्रायः कापुरुष और भीरु होते हैं। जो भारतीय उनकी गुलामी स्वीकार कर उनकी ओर से लड़ते हैं, उनमें वीरता है, किन्तु वे भाड़े के सिपाही हैं। वे अपने पेट के लिए लड़ते हैं, मातृ-भूमि की रक्षा के लिए नहीं। अतएव वे उस भावना से रहित हैं, जो आप में है। फिरंगी हमारी मातृ-भूमि पर अधिकार जमाना चाहते हैं। उनके उद्देश्य सत्य पर अवलम्बित नहीं हैं। वे लालची हैं। दूसरों की वस्तु को छीनना चाहते हैं जो सर्वथा प्राकृतिक नियमों के विपरीत हैं। वे हमारी शस्य-श्यामला भूमि को हस्तगत करने के लिए आक्रमण कर रहे हैं, इसलिए यह अन्याय है। संसार में अन्याय कभी अन्त में सफल नहीं हुआ और न आगे कभी हो सकता है। उनकी अन्याय-पूर्ण नीति ही उनकी पराजय का कारण बनेगी। जो दूसरों को नष्ट करना चाहता है, वह स्वयं नष्ट होता है।" बलभद्र सिंह प्रतिक्रिया देखने के लिए ठहर गए।

नाहर बहादुर ने कहा—"महाराज, मैं भी कई मोर्चों में फिरंगियों

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

से लड़ चुका हूँ। इनके समान कापुरुष मैंने नहीं देखे। आप विश्वास रखिए, हमारी बन्दूकों की पहली बाढ़ उन्हें रणभूमि से भगा देगी।"

शेर बहादुर—एक दूसरे सैनिक ने कहा—"मेरे हाथ खुजला रहे हैं। मेरी इच्छा होती है कि हम लोग खुखड़ियों से लड़ें। उनको काटने में आनन्द आएगा।"

बलभद्रसिंह—"नहीं, हम ऐसी लड़ाई लड़ने की स्थिति में नहीं हैं।"

"क्यों महाराज ?"

"इसलिए कि हमारी संख्या बहुत कम है। फिरंगियों की सेना में लगभग बारह-तेरह हजार जवान हैं, उनके मुकाबले में हमारे तीन सौ जवान क्या कर लेंगे ?"

"हमारी स्त्रियाँ भी तो हैं ?"

"वे हमारी तरह खुखुड़ी से नहीं लड़ सकतीं। बन्दूकों से वे युद्ध कर सकती हैं, किन्तु खुखुड़ियों से नहीं।"

मान बहादुर—"यद्यपि हमारी कुछ नारियाँ खुखुड़ियों से लड़ सकती हैं, तथापि युद्धनीति के अनुसार हमें अपनी रक्षा करते हुए युद्ध करना चाहिए। हम इसी प्रकार उन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।"

बलभद्रसिंह—"हमारे सेनापति महाराजा अमरसिंह का स्पष्ट आदेश है कि हमलोग कलूँगा में जमे रहें। शत्रु को उधर से घुसने न दें और फिरंगी बिना कलूँगा पर अधिकार किए गढ़वाल में प्रवेश नहीं कर सकते। इस समय कलूँगा सामरिक महत्त्व का स्थान बन गया है। अतएव हमें यहीं रहकर शत्रु से लोहा लेना है।"

शेर बहादुर—"परन्तु यह भी विचारणीय है कि शत्रु के पास बड़ी और छोटी तोपें अधिक संख्या में हैं। वे जब कलूँगा की दीवारों को गिरा कर नष्ट कर देंगी, तब हमें सम्मुख होकर युद्ध करना पड़ेगा। उस समय खुखुड़ी ही काम आएगी।"

"परिस्थितियों के अनुसार हमें भी अपनी रणनीति बदलनी पड़ेगी। अभी परिस्थिति गढ़ के अन्दर बैठ कर लड़ने की है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इसी समय एक ओर कुछ शोरगुल होने लगा और उसके साथ ही 'जासूस, जासूस' शब्द भी सुनाई पड़ा।

जासूस-जासूस की पुकार से एक हंगामा उठ खड़ा हुआ।

बलभद्रसिंह ने पूछा—"क्या है ?"

एक सैनिक ने एक मोटे-ताजे व्यक्ति को उनके सम्मुख करते हुए कहा—"यह व्यक्ति अपने को ब्राह्मण ज्योतिषी कहता है। यह साल के जंगल में धूनी जलाए बैठा था। हमने इससे कई प्रश्न पूछे किन्तु इसने ऐसी चुप्पी साध ली है कि किसी प्रकार कोई उत्तर नहीं देता। केवल बाँ-बाँ करता है, और कभी-कभी 'ब्राह्मण ज्योतिषी हूँ', कहकर चिल्ला उठता हूँ। मुझे तो इसके जासूस होने का पूरा निश्चय है, इसलिए आपके सामने इसे लाया हूँ।"

बलभद्र सिंह ने उसके समीप आकर उसको तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए पूछा—"क्यों भाई, क्या आप ब्राह्मण हैं ?"

जासूस जो हमारे पूर्व परिचित पंडित गोवर्धन थे, बोले—"यह देखिए जनेऊ और चोटी। ब्राह्मणों की यही पहचान है। छः शास्त्र मैंने पढ़े हैं, और ज्योतिषी हूँ। मेरी परीक्षा ले लीजिए।"

"आप कहाँ के रहने वाले हैं, और इधर लड़ाई के क्षेत्र में कैसे आए ?"

"मैं तपस्या करने के लिए हिमालय की ओर जा रहा हूँ। रहने वाला मैं काशी का हूँ। काशी में ही विद्या पढ़ी, और उसी पुण्यभूमि में गार्हस्थ्य जीवन बिताया। जब सन्तान सुयोग्य हो गई, और पत्नी का देहान्त हो गया, तब से घर छोड़ कर देश का पर्यटन कर रहा हूँ। घूमते-घूमते इधर आ निकला। कुछ थोड़ी दूर पर फिरंगियों की एक बड़ी सेना का पड़ाव है। मैंने सोचा कि इनसे बचने के लिए किसी गहन वन का आश्रय लेना चाहिए, नहीं तो कहीं वे मुझे पकड़ न लें। मैंने इधर का वन-प्रदेश अपने छिपने के लिए उपयुक्त समझ कर एक ठौर धूनी रमा ली। इस बीच आपके सिपाहियों ने मुझे पकड़ लिया, और आपके सामने उपस्थित किया है। बस इतनी ही मेरी राम कहानी है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"आपका नाम क्या है ?"

"मेरा नाम गोवर्धन व्यास है।"

"आप ब्राह्मण हैं ?"

"हाँ महाराज, यह शरीर तो ब्राह्मण का ही है। देखिए यह जनेऊ और चोटी।"

"वह देख रहा हूँ। परन्तु आप जासूस नहीं हैं, इसका क्या प्रमाण रखते हैं ?"

"इसका प्रमाण मैं कैसे दे सकता हूँ ? आपको मेरी बात पर विश्वास करना चाहिए।"

"इस समय केवल बात पर विश्वास नहीं किया जा सकता। आप देख ही आए हैं कि फिरंगियों की सेना इस गढ़ पर आक्रमण करने आ रही है। हमारे गढ़ का भेद जानने के लिए, वे किसी गुप्तचर को भेज सकते हैं।"

"परन्तु मैं गुप्तचर नहीं हूँ, महाराज।"

"हमें सन्देह है कि आप गुप्तचर हैं। जब तक हमें यह विश्वास नहीं हो सकता कि आप गुप्तचर नहीं हैं, तब तक आपको हमारी कैद में रहना होगा।"

"महाराज ...।"

"सैनिक नियम यही है।"

"किन्तु मेरी पूजा तथा त्रिकाल संध्या कैसे होगी।"

"उसमें कोई व्यवधान नहीं पड़ेगा।"

"किसी अन्य के द्वारा राँधा हुआ भोजन नहीं करता।"

"आप स्वयं बना सकते हैं। इसका प्रबंध कर दिया जायगा।"

"महाराज, मुझे एक सहायक चाहिए, जिससे नेम-धरम का यथारीति पालन हो सके।"

बलभद्र सिंह कुछ कहने जा रहे थे कि मानबहादुर ने टोक कर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कहा—"आपको यह मालूम होना चाहिए कि आप हमारी कैद में हैं और आपके साथ ...।"

बलभद्र सिंह ने उसके कथन में बाधा देते हुए कहा—"ठहरो मानबहादुर। अभी निर्णय कहाँ हुआ कि यह जासूस है।"

"महाराज, यह अवश्यमेव जासूस है। भारतीय पंडितों ने अपना धर्म बेच दिया है। ये फिरंगियों की दासता करने लगे हैं। यदि यह जासूस न होता तो इधर क्यों आता? इसको अगर फिरंगियों से डर था तो इसे अन्यत्र जाना चाहिए था। यहाँ तोपों के मुँह में क्या करने आया? यह हमारे दुर्ग में प्रवेश करना चाहता था, और इससे सुगम उपाय इसके पास कोई नहीं था कि यह अपने को कैद करवा देवे, और गढ़ के अन्दर प्रवेश पा जाए।"

पंडित गोवर्धन का हृत्पिंड काँपने लगा। मानसिक भय की छाया से उसका मुख काला हो गया। उसने साहस एकत्रित करते हुए कहा—"महाराज, यह असत्य है, मैं जासूस नहीं, गरीब ब्राह्मण हूँ। यदि आपको सन्देह है तो मुझे गढ़ से बाहर निकाल देवें, मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा।"

"बेशक चले जाओगे क्योंकि तुमने हमारा भेद जान लिया है।" मानबहादुर ने कहा।

"यदि सन्देह है तो आप मेरा वध कर दीजिए।" गोवर्धन ने माया फैलाई।

बलभद्र सिंह ने सिपाही को आदेश दिया—"इसकी बकवास में हमारा समय व्यर्थ नष्ट हो रहा है। इसको कैदखाने में बन्द कर एक सिपाही इस पर नजर रखने के लिए नियुक्त कर दो, जो इसको रसोई बनाने में भी सहायता देगा।"

पंडित गोवर्धन चिल्लाने लगे—"महाराज, हिन्दू राज्य में गो-ब्राह्मण अवध्य हैं।"

मानबहादुर ने सक्रोध कहा—"भूपसिंह, इसको ले जाओ। यह बहुत चालाक जासूस है। इस पर पूरी तरह दृष्टि रखना।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पंडित गोवर्धन चिल्लाते रहे, और भूपसिंह उसे घसीटता हुआ ले जाने लगा।

रास्ते में पार्वती और गौरी मिलीं। गौरी ने भूपसिंह से पूछा—"यह कौन है भूपसिंह!"

"फिरंगियों का जासूस है। छोटे महाराज ने इसको कैद में रखने का हुक्म दिया है।"

पंडित गोवर्धन ने उनकी सहानुभूति प्राप्त करने के लिए कहा—"राजकुमारी जी, मैं ब्राह्मण तपस्वी और ज्योतिषी हूँ। मैं जासूस कदापि नहीं हूँ।"

ज्योतिषी जानकर दोनों का कौतूहल जाग पड़ा। गौरी ने भूपसिंह से कहा—"भूपसिंह जरा ठहर जाओ। इनसे एक-दो प्रश्न पूछ कर परीक्षा लेने दो।"

गोवर्धन को सहारा मिला। उसने प्रसन्न कंठ से कहा—"हाँ प्रश्न पूछ कर अवश्य परीक्षा लीजिए राजकुमारी जी! मुझे हस्तरेखा का ज्ञान है। लाइए हाथ आपका भविष्य बताऊँ।"

गौरी ने पार्वती का हाथ पकड़ कर ज्योतिषी के सामने करते हुए पूछा—"आप मेरी सखी का भविष्य बताइए।"

पार्वती ने अपना हाथ खींचते हुए कहा—"मेरा नहीं, अपना हाथ दिखा। तू अपना भविष्य जानने के लिए बेचैन हो रही है।"

"नहीं-नहीं, पहले तेरा भविष्य सुनूँगी।"

"किन्तु मुझे सुनने की चाह नहीं है।"

"परन्तु मैं तो जानना चाहती हूँ।"

"मैं तेरे मार्ग की बाधक नहीं बनूंगी, तू विश्वास रख!"

"अरे क्या बकती हो?"

"सच कहती हूँ। तुझको मुझसे भय है। इस युद्ध में प्राण विसर्जन कर तेरा रास्ता साफ कर दूँगी।"

उनके वाद-विवाद से गोवर्धन को ज्ञात हो गया कि दोनों किसी एक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

व्यक्ति से प्रेम करती हैं, उसने अपना तीर चलाया—"राजकुमारी जी, आप दोनों की हथेलियों पर मेरी दृष्टि पड़ गई है। मैं कहता हूँ कि आप दोनों का भविष्य सुन्दर है और आप लोग किसी राजा की महिषी होंगी।"

पार्वती ने कुछ चिढ़ कर कहा—"भूपसिंह, इसको ले जाओ। राजाज्ञा की अवहेलना न करो, नहीं तो दंड के भागी होगे।"

भूपसिंह ने गोवर्धन को धक्का देते हुए कहा—"अपनी माया न फैलाओ, चलो। गोवर्धन करुण दृष्टि से उन दोनों की ओर देखता हुआ जाने लगा।"

उसके जाने के बाद पार्वती ने सक्रोध कहा—"गौरी, तू आजकल बहुत बढ़-बढ़ कर बातें करने लगी है। तू जिसके लिए पागल हो रही है, वह मैं जानती हूँ।"

गौरी सकपका कर चुप हो गई फिर धीरे-धीरे बोली—"तू तो हँसी-हँसी में बुरा मानने लगी है।"

पार्वती—"मैं जानती हूँ गौरी; हँसी का रूप दूसरा होता है।"

और इतना कह कर वह मुँह घुमा कर दूसरी ओर चली गई। गौरी उसी ठौर स्थिर होकर उसको देखने लगी। उसकी आँखों में आँसू छल-छला आए, और उन्हें पोंछती हुई वह दूसरी दिशा में चली गई।

## : ८ :

बीस अक्टूबर सन् १८१४ को लेफ्टीनेन्ट कर्नल जार्ज कारपेन्टर ने अपनी सेना का परिचालन किया और बिना किसी बाधा के 'तिमली' दर्रे पर अधिकार कर दून में प्रवेश किया। गोरखों ने अपनी योजना के अनुसार उनसे लोहा नहीं लिया। वे उन्हें कलूँगा तक ले आना चाहते थे। कार-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पेन्टर को विश्वास हो गया कि नैपाली डरकर भाग गए हैं। वह वहीं ठहर कर जेनरल जिलेस्पी तथा अन्य सेनाध्यक्षों के आगमन की वाट जोहने लगा।

कारपेन्टर की सफलता का समाचार पाकर जेनरल जिलेस्पी कीरी दर्रे से चौबीस अक्टूबर को अपनी समस्त सेना के साथ आकर उसकी सेना से मिल गया। सामने कुछ ही दूर कलूँगा का गढ़ उनकी ओर गर्व से देखकर आक्रमण की प्रतीक्षा करता हुआ चुनौती दे रहा था। जिलेस्पी उसे भूमिसात् करने के लिए अपनी योजना बनाने लगा। उसने यमुना के सभी घाटों को अपने अधिकार में लेकर उस दिशा से आवागमन के मार्ग अवरुद्ध कर दिए।

अठाइस अक्टूबर की रात्रि को जिलेस्पी ने अपने अधीनस्थ सेनानायकों की बैठक बुलाई। उनमें कारपेन्टर, फास्ट, केली, कैम्पबेल और लुडलो थे। उनके एकत्रित होने पर जिलेस्पी ने कहा—"मित्रो, अब हम कलूँगा दुर्ग के द्वार पर आ गए हैं। नेपालियों ने इसी में आश्रय लिया है, और इसे हमें हर हालत में अपने अधीन करना है।"

कारपेन्टर—"यह भी एक शुभ लक्षण है। अब हमें पृथक्-पृथक् सेना-टुकड़ियों से नहीं लड़ना पड़ेगा।"

कैम्पबेल—"जिस प्रकार पिंजड़े में फँसे चूहों को मारना आसान है, उसी प्रकार हम कलूँगा के पिंजड़े में आबद्ध नैपालियों को मारने में सफल हो जायेंगे।"

जिलेस्पी—"हमारे गुप्तचरों से मालूम हुआ है कि अमर सिंह को हिमाचल प्रदेश के राजाओं ने उलझा रखा है कि वह कलूँगा की सहायता के लिए न स्वयं आ सकता है, और न कोई कुमक ही भेज सकता है।"

फास्ट—"कलूँगा में नैपालियों की संख्या का कुछ पता चला?"

जिलेस्पी—"मेजर स्टीवेनसन कहाँ हैं? उनके गुप्तचरों ने क्या सूचनाएँ दी हैं, यह उनसे ही मालूम होगा।"

मेजर स्टीवेन्सन की अनुपस्थिति के सम्बन्ध में सभी अपने-अपने अनु-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मान लगाने लगे। जिलेस्पी ने अपने अरदली को बुलाकर कहा—"मेजर स्टीवेन साहब को हमारा सलाम बोलो।"

फौजी भाषा में सलाम बोलने के अर्थ थे—बुलाकर लाना। अरदली दौड़ गया। थोड़ी देर बाद आकर बोला—"वह अपने शिविर में नहीं हैं।" जिलेस्पी ने सक्रोध कहा—"जहाँ भी हों ढूंढ़ कर लाओ।"

अरदली इमाम हुसेन की नियुक्ति गफूर की मृत्यु के पश्चात् हुई थी। उसने बड़ी मजबूरी से इस पद पर काम करना मन्जूर किया था। स्टीवेन-सन ने उसे कई लोभ दिखाकर उसे राजी किया था। जिलेस्पी से उसे प्रत्येक क्षण भय लगा करता था, और मृत्यु आठों पहर उसकी आँखों के सामने नाचती रहती थी।

इमाम हुसेन भययुक्त स्वर में बोला—"हुजूर उनका अरदली कहता था कि वह तीसरे पहर घोड़े पर सवार होकर कहीं बाहर गए हैं।"

जिलेस्पी चिढ़ गया। उसने घुड़की दिखाते हुए कहा—"हम बोलता है कि उसे फौरन हाजिर करो। हम कोई दूसरी बात नहीं सुनना चाहता।"

जिलेस्पी का क्रोध देख कर इमाम हुसेन की घिग्घी बँध गई। वह उस घड़ी को, जिसमें उसने यह पद स्वीकार किया था, कोसता हुआ भागा। शिविर के बाहर आकर वह सोचने लगा कि किधर जाकर वह स्टीवेन्सन को ढूँढ़े।

भाग्यवश उसकी भेंट भारतीय फौज के सूबेदार गजराज सिंह से हो गई। उसने उनसे पूछा—"आपके उधर क्या स्टीवेन्सन साहब गए हैं? जेनरल साहब उन्हें याद कर रहे हैं।"

गजराज सिंह ने भेद लेने के लिए समीप आकर कहा—"क्या बात है? मेजर साहब को क्यों ढूँढ़ा जा रहा है?"

"साहब लोगों की बात मैं क्या समझता हूँ। सब गिटपिट बोलते हैं। स्टीवेनसन के बहकावे में आकर यह नौकरी मन्जूर करके मैंने जिन्दगी की सबसे बड़ी गलती की है।"

"क्यों?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"यह जेनरल साला जिन्न है। वह उसी आदमी को खा जाता है, जो उसकी सेवा करता है। स्टीवेनसन ने इनाम-इकराम मिलने की बड़ी लम्बी-चौड़ी बातें बताई थीं, लेकिन वह सब झूठ था, सिर्फ फुसलाने की बातें थीं।"

"पहले से तुम कुछ मोटे-ताजे देख पड़ते हो।"

"मेरा मजाक न उड़ाइये सूबेदार साहब! यहाँ जान के लाले पड़े हैं, और हर घड़ी जान साँसत में रहती है कि कब वह जालिम मेरी तिल्ली ठोकर मार कर फाड़ न दे।"

"है तो वह महा दुष्ट।"

"वह हिन्दुस्तानी को इन्सान नहीं समझता। उसकी नजर में वे कुत्ते-बिल्लियों से ज्यादा नहीं हैं। अगर आज स्टीवेनसन साहब को ढूँढ़ नहीं पाता, तब यह रात हमारी जिन्दगी की आखिरी रात साबित होगी। वह जो कुछ न कर डाले-थोड़ा है।"

"घबराओ नहीं, मैं स्टीवेनसन का पता बताता हूँ। तुम यहाँ से सीधे सूबेदार मेजर हुकुम सिंह के शिविर में चले जाओ। वह वहीं बैठा कल होने वाली लड़ाई की बातें कर रहा है। वह जबान का मोठा है, परन्तु दिल का वह भी काला है। ये फिरंगी सब बन्दर की जात हैं। सिवाय नुकसान के किसी का भला नहीं करते।"

इमाम हुसेन उधर सिर पर पैर रख कर भागा। गजराज सिंह ने अपना रास्ता लिया।

उधर जिलेस्पी कह रहा था—'जहाँ तक पहले आई हुई खबरों से मालूम हुआ है, उनकी संख्या तीन सौ से ज्यादा नहीं है।"

हार्ट ने कहा—"हमारे बारह-तेरह हजार आदमी इनको भुनगे की तरह पीसकर चटनी बना देंगे, और कलूँगा का एक-एक पत्थर चूर-चूर कर देंगे।"

केली—"हमसे मुकाबला करने की हिमाकत क्या इसी बल-बूते पर करते हैं?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कैम्पवेल—"जब चींटी के पंख निकल आते हैं तब उसकी मौत के दिन नजदीक आ जाते हैं। नैपालियों के मरने के दिन आये हैं।"

जिलेस्पी—"दुश्मन को कमी कमजोर न समझना चाहिए। कलूँगा पर हमारी पहली मुठभेड़ होगी, और इसकी विजय से ही हमारी धाक जमेगी। अतएव हमको बड़ी होशियारी से युद्ध करना होगा। मेरा विचार है कि हम एक ही झपट्टे में गढ़ को नेस्तनाबूद कर दें।"

"जी हाँ, ऐसा ही होना चाहिए।"

जिलेस्पी—"जैसा मैं १९ अक्टूबर को अपनी योजना बता चुका हूँ, उसी प्रकार हमें कलूँगा को चारों दिशाओं से घेरकर एक साथ आक्रमण करना चाहिए। आप ध्यान में रखिये कि मैंने 'एक साथ' शब्द का प्रयोग किया है। कल कारपेन्टर और लुडलो सामने की ओर से कलूँगा के पठार पर अधिकार करें, और फास्ट, कैली, तथा कैम्पबेल कलूँगा के दाहिने, बाँए और पीछे से एक ही समय आक्रमण कर दें। मैं कारपेन्टर के साथ सामने की ओर सैन्य-संचालन का निरीक्षण करूँगा। जब चारों दिशाओं से एक साथ हमला होगा, तब बात की बात में हम इस दुर्ग को ध्वस्त कर नैपालियों का सफाया कर देंगे।"

कारपेन्टर—"यह योजना निःसन्देह कारगर होगी। बेचारे तीन सौ नैपाली कहाँ-कहाँ रक्षा करने दौड़ेंगे?"

जिलेस्पी ने प्रसन्न कंठ से कहा—"आपने क्या दुर्ग की दीवारों पर चढ़ने के लिए लम्बी-लम्बी निसैनियाँ बनवा ली हैं?"

"जी हाँ. हमारे पास इस कार्य के लिए पर्याप्त तैयारियाँ हैं।"

"लेफ्टीनेन्ट कर्नल कारपेन्टर, मेरे आदेश से तोप चलाकर आप तीनों को संकेत देंगे कि आप अपनी सेनाओं को व्यूहबद्ध करना आरम्भ कर दें, और उस सांकेतिक तोप की आवाज होने के ठीक दो घंटे बाद आक्रमण कर दें-- सीधे कलूँगा दुर्ग पर। इस बात को अच्छी तरह अंकित कर लीजिये।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"जी हाँ, हम लोग ध्यान रखेंगे।"

"देखिये, इसमें भूल न होने पावे; क्योंकि इसी पर हमरी विजय का दारोमदार है।"

"नहीं जनाब, इसमें कभी गलती नहीं हो सकती।"

केली—"हमारे आक्रमण से बेचारे नैपालियों की हिम्मत टूट जायगी और उन्हें अंग्रेजों से दुश्मनी मोल लेने का नतीजा मालूम होगा।"

जिलेस्पी—"यदि हम अपनी योजना में सफल हो गए, तब गढ़वाल के प्रदेश पर हमारा अधिकार बे-रोक-टोक हो जायेगा।"

कैम्पबेल—"जी हाँ फिर हम जनरल आक्टर लोनी की सेना से जाकर मिल जायेंगे, और अमर सिंह को परास्त करेंगे।"

जिलेस्पी—"गवर्नर जनरल के यही आदेश हैं।"

कैम्पबेल—"हमलोग इनका अक्षरशः पालन करेंगे। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश सेना की प्रतिष्ठा का भी प्रश्न है। अभी तक हमने भारत के किसी युद्ध में पराजय नहीं पाई है, केवल भरतपुर के युद्ध में कुछ धक्का लगा, लेकिन उसे अब हमेशा के लिए ठीक कर लेना है।"

जिलेस्पी—"वह कोई उल्लेखनीय पराजय नहीं कही जा सकती। नैपाली अपनी शूरता के लिए भारत में प्रसिद्ध हैं, हालाँकि पंजाबी उन्हें अपने मुकाबले के सिपाही नहीं मानते; इसलिए हमारी इस विजय से मुल्क में हमारा दबदबा बैठ जायेगा, और कोई राजा फिर सिर नहीं उठा सकेगा।"

केली—"उत्तरी भारत में केवल पंजाब बचा रहेगा।"

जिलेस्पी—"वह तभी तक स्वतन्त्र है, जब तक बूढ़ा रणजीत सिंह जीवित है। हमने उसके कई सेनानायकों और सरदारों को मिला लिया है, लेकिन वे उसकी जिन्दगी में विद्रोह नहीं करेंगे, क्योंकि उन्हें आशा है कि वे पंजाब का सूबा हथिया लेंगे।"

इसी समय स्टीवेनसन ने शीघ्रता से प्रवेश किया और जनरल का अभिवादन कर सबका मुँह निहारने लगा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जिलेस्पी ने कड़क कर पूछा—"मेजर स्टीवेनसन, आप कहाँ थे ? क्या इस बैठक की सूचना आपको नहीं मिली थी।"

"मिली थी, लेकिन मैं एक जरूरी कारे-सरकार में मशगूल था।"

"वह क्या ?"

"मैंने अपना एक खास जासूस कलूँगा दुर्ग में नैपाली सैनिकों की संख्या जानने के लिए भेजा था। उसका पता लगाने गया था कि वह अब तक क्यों वापिस नहीं आया।"

"कुछ पता लगा ?"

"जी हाँ, उसके एक साथी से मालूम हुआ कि वह कलूँगा में प्रविष्ट हो गया है, किन्तु शायद जासूस समझा जाकर कैद कर लिया गया है।"

"उसकी चिन्ता मत कीजिये। कलूँगा विजय की योजना हमने बना ली है। उसकी विजय के साथ वह मिल जायगा, या उनके साथ मारा जायगा। अब मैं आराम करूँगा, आपलोग प्रातःकाल कूच करने की तैयारी कीजिये, और सांकेतिक तोप दगने की प्रतीक्षा कीजिये।"

युद्ध-परिषद् की बैठक समाप्त हो गई। उसके अधीनस्थ सेनानायक अपने शिविरों में चले गये। घुग्घुओं की घू-घू से रात्रि की नीरवता भंग होने लगी।

## : १० :

बलभद्र सिंह के गुप्तचर ब्रिटिश सेना की प्रगति के समाचार बराबर ला रहे थे। उन्होंने उनकी विशाल वाहिनी का मुकाबला खुले मैदान में करना उपयुक्त न समझा था, क्योंकि नैपाली सैनिकों की संख्या अति अल्प थी। अंग्रेज इतिहासकारों ने उनकी संख्या छः-सात सौ बताई है, परन्तु भारतीय सूत्रों से प्रकट होता है कि कलूँगा दुर्ग के समस्त नर-नारियों की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सम्मिलित संख्या कुल छः सौ से अधिक नहीं थी। यह अवश्य है कि नैपाली नारियों ने भी पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ा कर युद्ध किया था, वे भी शौर्य और साहस में पुरुषों से किसी भाँति न्यून नहीं थीं और उन्होंने रात-दिन उनके साथ तथा बराबरी में परिश्रम किया था। पुरुषों की अपेक्षा उनमें उत्साह अधिक था।

दून पर फिरंगियों का अधिकार हो जाने के बाद कलूँगा के निवासी अपने गढ़ पर आक्रमण की प्रतीक्षा करने लगे। बलभद्र सिंह ने एक चतुर सेनापति की भाँति अपनी सेना को संगठित किया। द्वार की ओर उन्होंने मानबहादुर को नियुक्त कर पचास सैनिकों को उसकी मातहती में तैनात किया। गढ़ के दाहिने और बायें पक्षों में चाँद बहादुर तथा नाहर बहादुर को कमान सौंपी गई। गढ़ के पृष्ठ की रक्षा के लिए शेर सिंह नामक नायक को नियुक्त किया गया। स्त्रियों को सहायक सेना के रूप में रखा गया। उनको गोली बारूद की रसद पहुँचाने, सैनिकों की बन्दूकें भरने और शत्रुओं की तोपों से जो गढ़ में टूट-फूट हो, उसकी तुरन्त मरम्मत करने का भार सौंपा गया। बलभद्र सिंह ने निरीक्षण तथा संचालन का दायित्व ग्रहण किया।

पार्वती और गौरी को युद्ध में सक्रिय भाग लेने का अवसर नहीं मिला था। बलभद्र सिंह से वे स्वयं अपनी वकालत करने का मौका ढूँढ़ रही थीं, किन्तु वे इतने व्यस्त थे कि एक स्थान पर स्थिर न होते थे। उनको अपने पीछे-पीछे डोलती हुई देखकर पूछा—"तुम दोनों क्यों अपने-अपने कर्त्तव्य स्थान से पृथक् होकर मेरा पीछा कर रही हो? कुछ कहना चाहती हो क्या?"

पार्वती ने उन्हें नमस्कार करने के बाद कहा—"महाराज, हमको युद्ध-पंक्ति में स्थान न देकर पीछे की सहायक पंक्ति में डाल दिया गया है। हम अपना स्थान परिवर्तन करना चाहती हैं।"

बलभद्र सिंह की भृकुटियाँ पहले कुछ चढ़ीं परन्तु दूसरे ही क्षण अपने को संयमित कर मुस्कराते हुए बोले—"मैं तुम दोनों को पहचानता हूँ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चाँदमारी के दिन तुम दोनों ने अपूर्व कौशल दिखाया था। जल्दी बोलो, तुम कहाँ रहना चाहती हो ?"

"सिंह द्वार पर हमारी नियुक्ति की जावे।"

"वहाँ मानबहादुर की अध्यक्षता में पचास सिपाही नियुक्त कर दिए गए हैं। अब वहाँ गुञ्जाइश नहीं है।"

"महाराज, मैंने एक सौ आठ फिरंगियों के मुंडों की माला पशुपतिनाथ पर चढ़ाने की प्रतिज्ञा की है। सिंह द्वार पर खड़े हुए बिना मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण नहीं हो सकती। इसलिए महाराज मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण करने का अवसर दीजिए।"

"युद्ध आज ही समाप्त नहीं होगा। तुम्हारी प्रतिज्ञा पूर्ण करने का बहुत अवसर मिलेगा।"

"महाराज, मेरा उत्साह भंग न कीजिए। इसी दिन के लिए मैंने बड़ा परिश्रम किया है।"

"तुम्हारी बन्दूक चलाने की निपुणता मैंने देखी है। तुम साक्षात् दुर्गा हो, किन्तु···।"

"महाराज, आप के पैर पड़ती हूँ, 'किन्तु' कह कर टालिए नहीं।"

"वहाँ जितने बन्दूक चलाने के लिए मोर्चे रखे गए थे, उन सब पर मानबहादुर ने अपने योद्धा नियुक्त कर दिए हैं। मानबहादुर कोई परिवर्तन करना स्वीकार नहीं करेगा।"

"हमें उनकी कमान में रहना भी नहीं है।"

"सिंहद्वार की रक्षा का भार मैंने उसी को दिया है।"

"हम दोनों उनसे पृथक् रह कर काम करेंगी।"

"यह कदापि नहीं हो सकता।"

"तब आप हमें स्वतंत्र रूप से युद्ध करने की आज्ञा दीजिए।"

"यह कैसे ?"

"हम लोग जहाँ सन्धि देखेंगी, वहीं से शत्रुओं पर वार करेंगी।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"यदि तुम्हारी बात मानूँ, तब उसका एक ही उपाय है, वह यह कि तुम दोनों मेरी अंग-रक्षक होकर काम करो।"

पार्वती और गौरी की बाँछें खिल गईं।

"हाँ महाराज, ऐसा ही कीजिए। हमको प्रत्येक स्थान से युद्ध करने की स्वतंत्रता रहेगी।"

"किन्तु यह कुछ अनुचित मालूम होता है। तुम मानबहादुर की वाग्दत्ता हो। उससे परामर्श करना होगा।"

"नहीं, महाराज, उसकी कोई आवश्यकता नहीं है। आप सेनापति हैं, अपने इच्छानुसार सब कुछ कर सकते हैं।"

"परन्तु फिर भी तुम बालिका हो।"

"महाराज, बालिका तो आप के सम्मुख हूँ परन्तु फिरंगियों के लिए कालिका हूँ। मुझे अवसर दीजिए। मैं आज ही शाम तक एक सौ आठ फिरंगियों के मुंडों की माला गूँथ डालूँगी।"

"शाबाश, अच्छा तुम पूर्ण स्वतन्त्रता के साथ युद्ध कर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करो। जिस दिन तुम्हारी प्रतिज्ञा पूर्ण होगी, उसी दिन तेरा विवाह मानबहादुर से सम्पन्न कर दूँगा।"

पार्वती लजा गई। गौरी के नेत्रों की चमक क्षण भर के लिए तिरोहित हो गई।

इसी समय फिरंगियों की तोप के पहले गोले ने कलूँगा दुर्ग के चरणों का स्पर्श किया। भीषण शब्द से कलूँगा के प्रस्तर-खंड हिल-हिलकर उनको समीप आने की चुनौती देने लगे।

बलभद्र सिंह चौंक पड़े और जाते हुए बोले—"शत्रुओं ने आक्रमण कर दिया। यह सामने से हुआ है। आप दोनों मेरे पीछे-पीछे आइए।"

वह शीघ्रता से चलकर दुर्ग की प्राचीर के समीप पहुँचे और एक छेद से देखने लगे। उन्होंने देखा कि फिरंगियों की सेना का एक दस्ता बाधाएँ हटाने में लगा है, और दूसरा तोपों की शिस्त ठीक कर रहा है।

वास्तविकता यह थी कि यह गोला जिलेस्पी के आदेश से इन तीन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सेनानायकों अर्थात् केली, कैम्पबेल और फास्ट के लिए संकेत-चिह्न के रूप में दागा गया था कि वे दो घंटे पश्चात् चारों दिशाओं से सामूहिक आक्रमण करें।

किन्तु कलूँगा दुर्ग के सैनिकों ने इसे युद्ध की घोषणा ही माना। उन्होंने तत्काल अपनी बन्दूकों से निशाने साधे। तोप की गर्जना के बराबर ही शब्द हुआ और जो सैनिक पत्थरों के खंड तथा बड़े-बड़े साल के वृक्षों की बाधाएँ हटाने में मशगूल थे, उनके हृदयों को विदीर्ण करती हुई उनकी गोलियाँ मृत्यु उगलने लगीं। शत्रुओं की सेना में भगदड़ मच गई। भागते हुए सैनिकों पर पुनः गोलियों की बौछार हुई और उनमें से कितने ही प्राणों से हाथ धो बैठे और कितने ही घायल होकर कराहने लगे। अब दनादन गोलियाँ चलने लगीं और शत्रुओं की सेना जी-छोड़कर भागी। लेफ्टीनेंट कर्नल जार्ज कारपेन्टर ने उन्हें हर प्रकार से ढाढ़स दिया, भय दिखाया किन्तु कोई ठहरा नहीं। कारपेन्टर अपने दाँत पीसने लगा।

अवरुद्ध मार्ग बन्द का बन्द रहा। कारपेन्टर सबको एकत्रित करने का प्रयत्न करने लगा। बड़ी लानत-मलामत के बाद उसने कहा—"पहली मुठभेड़ में तुमने पीठ दिखाकर ब्रिटिश प्रतिष्ठा को जबरदस्त धक्का पहुँचाया है। इसकी सजा मौत है। क्यों न तुमको तोप से उड़ा दिया जाय?"

वह ठहर कर अपने शब्दों का असर देखने लगा।

फिर थोड़ी देर बाद कहा—"सिर्फ जान बचाने का एक ही उपाय है।"

वह ठहर कर फिर प्रतिक्रिया देखने लगा।

फिर कहने लगा—"हाँ, जान बचाने का सिर्फ एक ही रास्ता है। वह यह कि तुम सब मिलकर एक बार फिर प्रयत्न कर दुश्मन को पस्त करो। हम इधर से तोपों की मार करेंगे। यह अनगढ़ पत्थरों की दीवार को गिराते क्या देर लगती है? दोस्तों, हिम्मत न हारो। हमला करो और जीत का सेहरा बाँधो।"

भाड़े पर लाए हुए भारतीय सिपाही एक दूसरे का मुँह देखने लगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वे सब कारपेन्टर के कुटिल स्वभाव से परिचित थे। इस समय ब्रिटिश सेना में नौकरी करना बहुत भारी पड़ रहा था। मृत्यु की विकराल छाया उन्हें आगे-पीछे दोनों तरफ से घेरे हुए थी। गढ़ के अवरुद्ध मार्ग को साफ करने में जीवित बचने की आशा थी, किन्तु कारपेन्टर के आदेश की अवज्ञा करने से सबके मारे जाने का अन्देशा था। अन्ततोगत्वा उन्होंने फिर प्रयास करना ही उचित समझा।

गढ़ के अन्दर से बलभद्र सिंह ने जब ब्रिटिश सैनिकों को पुनः लौटते देखा, उन्होंने अपने सैनिकों को सावधान किया, और उन्होंने बढ़ते हुए ब्रिटिश सेना के सिपाहियों पर गोलियों की बाढ़ दागी। एक-एक नैपाली वीर ने उनके एक-एक सिपाही को अपना निशाना बना रखा था। उनकी बाढ़ के साथ ही पचास ब्रिटिश सैनिक हताहत हो गये। दूसरी भरी हुई बन्दूकें तैयार थीं। दूसरी बाढ़ में उतने ही सैनिक पुनः मृत्यु का आलिंगन करने लगे। ब्रिटिश सेना भयाकुल होकर पीछे हटने लगी। तीसरी बाढ़ ने उसकी रही-सही शक्ति को छिन्न-भिन्न कर दिया और वे भाग खड़े हुए। उनके भागते ही नैपाली वीरों की बन्दूकें विश्राम करने लगीं।

पार्वती और गौरी भी एक ओर से अपनी बन्दूकें चला रही थीं। गौरी ने एक फिरंगी अफसर को, जो भारतीय सैनिकों को उत्साहित कर रहा था, अपना लक्ष्य बनाते हुए कहा—"पारो, मैं इस ललमुँहे बन्दर को यमलोक पहुँचाती हूँ। तू उस दूसरे को, जो इधर आगे बढ़ता आ रहा है अपना निशाना बना।"

कहने के साथ ही उसने गोली दाग दी। गोली उनके सिर के खंड-खंड करती हुई न मालूम कहाँ विलीन हो गई। फिरंगी क्षत-विक्षत होकर गिर पड़ा। शत्रु-सेना में हाहाकार मच गया।

पार्वती ने भी अपना लक्ष्य साधा और तेजी से बढ़ता हुआ फिरंगी वहीं पर भू-लुण्ठित होने लगा। दोनों अपनी सफलता पर हँसने लगीं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इन दो फिरंगी अफसरों के मरते ही डराई, धमकाई और पुचकारी हुई भाड़े के सिपाहियों की सेना भाग खड़ी हुई। दुर्ग के अन्दर के सैनिकों ने पुनः जयघोष किया।

पार्वती और गौरी बराबर बन्दूकें चलाती रहीं और जो गोली उन तक पहुँच गई वे सब घराशायी होते गये। उनमें से कितने ही बुरी तरह से घायल होकर त्राहि-त्राहि चिल्लाने लगे। वे उस घड़ी को कोसने लगे जब उन्होंने ब्रिटिश सेना में नौकरी स्वीकार की थी। उन्होंने इस तरह के विनाशकारी आक्रमण की कल्पना भी नहीं की थी।

गौरी ने खिलाखिलाकर हँसते हुए कहा—"मैना, अब तो हमारे सामने का मैदान खाली हो गया।"

"अपने ही देश के विरुद्ध हथियार उठाने वालों का यही परिणाम होता है। ये सब देश और जाति विद्रोही हैं, इनका नाश होना ही चाहिए।" पार्वती ने उत्तर में कहा।

"बेचारे, भूख की ज्वाला से पीड़ित होकर देश-द्रोही बने थे, किन्तु हमने उनकी उस भूख को, जिसके लिए वे इतने नीच बने थे, सदा के लिए शान्त कर दिया है। अब उन्हें भूख कभी नहीं सताएगी।" दोनों सन्तुष्ट होकर हँसने लगीं।

बलभद्र सिंह इन वीराङ्गनाओं की निपुणता लक्ष्य कर रहे थे। उन्होंने आकर कहा—"तुम्हारे पराक्रम से मैं सन्तुष्ट हूँ। तुम दोनों ने दो फिरंगी अफसरों को मौत के घाट उतार कर उनकी हिम्मत पस्त कर दी है। तुमको छूट है कि जहाँ से चाहो वहाँ से इन पर अग्नि बरसा कर नष्ट करो।"

वह उनकी पीठ सहलाकर उनके मन में नवोत्साह भरने लगे। पार्वती और गौरी इस प्रकार पुरस्कृत होकर पुलकित होने लगीं।

●

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## : ११ :

जैसा पहले उल्लेख हो चुका है, जनरल जिलेस्पी ने अपनी सेना को चार भागों में विभक्त किया था। उसका पहला दस्ता कारपेन्टर और लुडलो के अधीन कलूँगा के सिंहद्वार पर आक्रमण करने के लिए नियुक्त हुआ था; उसके तीन दस्तों को, जो क्रमशः केली, फास्ट और कैम्पबेल के अधीन थे, दुर्ग की शेष तीनों दिशाओं से एक साथ आक्रमण करने का आदेश मिला था। उसे विश्वास था कि इस योजना से कलूँगा को वह कुछ ही घंटों में तहस-नहस कर देगा। उसने दिन निकलते ही तीनों को तीन दिशाओं में प्रस्थान करवा दिया था। उसने यह भी कहा था कि ठीक आठ बजे कारपेन्टर एक तोप दाग कर उनको आक्रमण की तैयारी की सूचना देगा, और उसके दो घंटे बाद वे पूर्ण तैयारी के साथ आक्रमण कर दें। जिलेस्पी का आदेश यथासमय पालन किया गया और तोप दागी गई जिसे कलूँगा के निवासियों ने आक्रमण समझ कर उनको पराजित कर भगा दिया। किन्तु उसकी योजना का दूसरा चरण सफल नहीं हो सका, क्योंकि इन तीनों सेना-नायकों ने तोप के दगने का शब्द नहीं सुना। कुछ इतिहासकारों का मत है कि जिलेस्पी ने आतुरतावश निश्चित समय के पहले ही तोप दगवा दी थी, और चूँकि उनमें से किसी का ध्यान इस ओर नहीं था, इस लिए उसका घोष सुना नहीं गया। कर्नल माबी ने अपनी सरकारी रिपोर्ट 'नेपाल पेपर्स' के ४३९ पृष्ठ पर लिखा है कि "तोप ठीक आठ बजे छोड़ी गई थी और उसके दो घंटे बाद आक्रमण करने की योजना बनी थी। केली, फास्ट और कैम्पबेल के मतानुसार उन तीनों ने उसका शब्द नहीं सुना, और इसलिए आक्रमण ठीक समय पर नहीं हो सका।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सही-सही वस्तुस्थिति जैसी भी हो, परन्तु आक्रमण नहीं हो सका, और नैपाली वीरों को उस कठिन परिस्थिति से सहज ही छुटकारा मिल गया। यह भी संभव है कि कर्नल मावी ने इन तीनों कमाण्डरों का रक्षा के लिए ऐसा लिख दिया हो, क्योंकि ये अपने अधीनस्थ अंग्रेज कर्मचारियों के दोषों को छिपाने का पक्षपात सदैव करते आये हैं। उन्होंने अंग्रेज सैनिकों की भूलों के लिए हिन्दुस्तानी बलि के बकरों पर दोष थोप कर उनको अनुमापिक दण्ड दिये हैं। अस्तु।

जनरल जिलेस्पी अपने सैनिकों की हार से विचलित हो गया। उसने उन्हें पुनः संगठित किया और अपनी कमान में धावा बोल दिया। चूँकि अब सैन्य-संचालन उसके हाथ में था, इसलिए फिरंगी सिपाही जो अब तक सामने लड़ने के लिए कतरा रहे थे, हथेली पर जान लेकर आगे बढ़े। तोपें भी दनादन गोले उगलने लगीं। गढ़ का परकोटा विदीर्ण होने लगा, और एक स्थान पर वह गिर भी पड़ा। फिरंगी सैनिक जोश में आकर अग्रसर हुए, परन्तु दीवार के पास अभी पहुँच भी न पाये थे कि नैपाली वीरों ने गोलियों की एक बाढ़ दागी, और बढ़ते हुए फिरंगी सैनिक वहीं गिर कर इहलीला संवरण करने लगे। दूसरे क्षण एक दूसरी बाढ़ दागी गई और सैंकड़ों पुनः भूमिशायी हुए। नैपाली वीरों की अविराम अग्निवर्षा से उनके पैर उखड़ गये तथा त्राण पाने के लिए वे कोई आश्रय ढूँढने लगे। उन्हें कुछ दूर पर फूस की झोपड़ियाँ दिखलायी दीं, जहाँ पहरेवाले नैपाली सन्तरी रहते थे, उसी ओर भागने लगे। गढ़ की दीवार पर वे चढ़ न सके, तथा छिन्न-भिन्न होकर चारों ओर भाग गये।

जिलेस्पी इस हार से क्रुद्ध हो गया। दस बज चुके थे, और अभी तक उसके तीन विश्वासी सेनानायकों अर्थात् केली, फास्ट और कैम्पबेल के आक्रमण करने की कोई सूचना नहीं मिली थी। वह क्रोध से अपने होंठ चबाने लगा। उसने आज के पहले अपनी किसी योजना को विफल होते नहीं देखा था। उसका शौर्य और साहस इस पराजय से तिलमिला उठा। वह वहीं अपनी सेना को पुनः संगठित करने लगा, और इसके लिए उसने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लेफ्टीनेन्ट ओ-हारा को भी आदेश दिया कि वह अपने सैनिकों को एकत्रित करे। किन्तु नैपाली सैनिकों के अचूक निशाने उन्हें पग-पग पर बाधा पहुँचा रहे थे। इसी बीच एक नैपाली वीर की गोली ने उसका काम तमाम कर दिया। बड़ी कठिनता से एकत्रित किये हुए सैनिक पुनः मैदान छोड़ पलायन करने के मार्ग ढूँढ़ने में व्यस्त हो गए।

उधर जब गढ़ के परकोटे की दीवार का एक खंड गिर गया, तब बलभद्र सिंह ने उसकी मरम्मत का आदेश दिया। स्त्रियाँ चूना और पत्थर पहुँचाने लगीं, तथा नैपाली सैनिक निडरता से उस गढ़े को भरने लगे। अंग्रेज इतिहासकारों ने उनके इस साहस की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

पार्वती और गौरी बड़ी प्रशंसा से फिरंगियों का आखेट कर रही थीं। गौरी ने पूछा—"पारो, अब तक तूने कितने शत्रुओं को यमलोक का रास्ता दिखा दिया।"

पार्वती ने एक फिरंगी पर निशाना साधते हुए कहा—"ये निगोड़े फिरंगी दूर रहकर हिन्दुस्तानियों को मरने के लिए आगे कर देते हैं, इस लिए मेरी संख्या अभी पूर्ण नहीं हुई है। तेरा क्या हाल है?"

"मैंने फिरंगिय और उनके भारतीय सिपाहियों में कोई भेद नहीं रखा; क्योंकि दोनों ही हमारी स्वतन्त्रता का अपहरण करने वाले हैं। हमें दोनों को ही मारना है।"

"मैं गिनती हूँ केवल फिरंगियों को, हिन्दुस्तानियों की गणना इसलिए नहीं करती क्योंकि वे पहले से ही मरे हैं। मैंने फिरंगियों को मारने की प्रतिज्ञा की है।"

"ठीक है, उनकी नौकरी करने से ही हिन्दुस्तानी हमसे लड़ने के लिए बाध्य होते हैं, परन्तु वे भी फिरंगियों की भाँति हमारे शत्रु हैं। उन्हें हिन्दुस्तानी समझ कर छोड़ना नहीं चाहिये। हिन्दुस्तानी सिपाही हमारे साथ वही बर्ताव करेंगे जो फिरंगी करते हैं।"

"मैं भी उन्हें नहीं छोड़ती, लेकिन गिनती केवल फिरंगियों की ही कर रही हूँ।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"अच्छा बता, फिरंगी कितने मारे ?"

"अभी तो कुल जमा सत्तर, और एक यह मारा, अब एकहत्तर हो गए हैं।"

"मेरी संख्या भी लगभग इसी के बराबर है।"

"तूने बहुत कम मारे। हिन्दुस्तानियों को अगर जोड़ तो शायद सौ के ऊपर मेरी संख्या पहुँच जायगी।"

"तेरी हस्तलाघवता को मैं नहीं पहुँच सकती।"

"तू चाहे जितना सिर मारे मुझसे पीछे रहेगी।"

"मैं कब दावा करती हूँ।"

"यह क्या तू यह सच कहती है ?"

"झूठ क्यों कहूँगी ? क्या मैं जानती नहीं कि तू इस गढ़ की मालकिन है और मैं एक तुच्छ नारी सैनिक। मैं किस तरह तेरी बराबरी का दावा करूँगी।"

"देख, युद्ध के मैदान में खड़ी है, सच बता क्या मेरे मँगेतर-पर तेरी आँख नहीं गड़ी है ? क्या तू ..।"

"बस करो दीदी। तुम वृथा सन्देह कर रही हो।"

"अब भी तू सत्य नहीं बोलती।"

"मैं सत्य कहती हूँ कि ऐसी कोई भावना मेरे मन में नहीं है।"

पार्वती ने मुख मटका कर अविश्वास प्रकट किया, और चुप हो कर निशाना साधने लगी। गौरी उसकी भाव-भंगिमा देख कर बोली—"पारो, तुम विश्वास नहीं करती।"

"जब तुम कहती हो, तब विश्वास करना पड़ेगा, लेकिन ..।"

"लेकिन तुझे विश्वास नहीं होगा।" गौरी ने बात काटते हुए कहा।

"हाँ मेरा मन विश्वास करने को नहीं सकारता।"

"मेरे प्राण देने पर तो विश्वास करोगी ?"

"चुप पगली क्या बकती है ! तू क्यों प्राण देगी—प्राण दें तेरे दुश्मन।"

"फिर तुम ऐसी चुभती बातें क्यों करती हो ?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"अरे, मैं तो चाहती थी कि तुझे अपनी सौत बना लूँ।"

"क्यों ? क्या सौत से आनन्द मिलता है ?"

"मुझे तो कोई सुख उससे नहीं होता। राज-परिवारों में यह रीति सदा से चली आयी है। राजाओं का मन किसी एक नारी से कभी सन्तुष्ट नहीं हुआ। इसलिए एक अनजान को सौत बनाने की अपेक्षा किसी बाल्यसखी को सौत बनाना कहीं अच्छा है।"

"पारो, तू है बड़े कठिन कलेजे की, जो इस युद्ध में तुझे घर-गृहस्थी की बातें सूझती हैं।"

"अरे पगली, यही तो जीवन है। सुख और दुख, लड़ाई और शान्ति, सबका जोड़ा है इस संसार में। इसी प्रकार नर और नारी का भी जोड़ा है। जहाँ एक है वहाँ दूसरे की भी चर्चा होगी।"

"किन्तु क्या इन बातों के लिए उपयुक्त समय है ?"

"जिससे मन का बहलाव हो वह सदैव अच्छा है, और सब समय उसके लिए उपयुक्त है।"

"हाँ, इस समय लड़ाई थम गई है, इसलिए ।"

"अरे लड़ाई फिर छिड़ने वाली है। देख जो आगे बढ़कर सिपाहियों को मरने के लिए बुला रहा है, वह मुझे कोई उनका बड़ा अफसर मालूम होता है।"

"अच्छा, इस बार तो फिरंगी ही फिरंगी हमारे गढ़ पर आक्रमण करने आ रहे हैं।"

"तब तो तेरी प्रतिज्ञा-पूर्ति का अवसर आ गया।"

"हाँ, मैं तो वार करती हूँ। मैं इस बड़े अफसर को निशाना बनाती हूँ, और तू उसके दाएँ-बाएँ चलनेवालों पर लक्ष्य संधान।"

वस्तुतः आगे बढ़ने वाला जनरल जिलेस्पी था। उसने जब देखा कि उसके सिपाही जिनमें भारतीय और फिरंगी दोनों सम्मिलित थे, नैपालियों की गोलियों की बौछार से तितर-बितर होकर प्राणरक्षा के लिए भाग रहे हैं, उसने स्वयं आक्रमण करने का बीड़ा उठा लिया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उसने लेफ्टीनेन्ट गॉर्सलिंग को आदेश दिया कि वह अपने अंग्रेज सैनिकों को आक्रमण के लिए उत्साहित करे। इसी प्रकार उसने एनसाइन फेदरगिल, एनसाइन एलिस और ड्रैगून पलटन के सिपाहियों को भी अपना अनुसरण करने का आदेश दिया। इसी समय गढ़वालों ने बन्दूकों को बाढ़ दागी, जिससे बढ़ते हुए सैनिक हताहत होकर वहीं गिर पड़े। उनमें फिर भगदड़ मच गई, और वे गोलियों की मार के बाहर जाकर ठहरे। वे जिलेस्पी के पागलपन से ऊब उठे थे, और उन्होंने सेंत-मेंत जान देना वीरता नहीं समझा।

जनरल जिलेस्पी अपना बौद्धिक सन्तुलन खो चुका था। केली आदि के द्वारा आक्रमण न करने से वह झल्लाया हुआ था ही और ब्रिटिश सैनिकों का नपुंसकत्व देख कर वह विक्षिप्त हो गया। उसे भरोसा था कि उसको आगे बढ़ते देख कर कम से कम अंग्रेज सिपाही अवश्य उसका अनुसरण करेंगे। वह तलवार हवा में चलाता और अपने सैनिकों को ललकारता हुआ अकेले ही सिंहद्वार की ओर झपटा।

इधर पार्वती उसे मारने के लिए कटिबद्ध थी। उसने ताककर निशाना मारा और उसकी बन्दूक की गोली जनरल जिलेस्पी के ठीक हृदयस्थल पर लगी। उसकी ललकार उसके मुख में रह गई, और वह गिर कर तत्क्षण अपने पापों की संख्या गिनने के लिए यमलोक चला गया। उसके पीछे आते हुए ब्रिटिश सैनिक गढ़ के रक्षकों की गोलियों के शिकार हुए। जनरल जिलेस्पी के गिरते ही ब्रिटिश सेना में ऐसी भगदड़ मची कि उन्होंने बन्दूकों की मार के बाहर जाकर ही दम लिया। वे वहीं तक आकर नहीं रुके बल्कि पठार के नीचे बेतहाशा भागने लगे। देखते-देखते मैदान साफ हो गया। कलूंगा के वीर अपने जयनाद से आकाश कम्पित करने लगे। नैपालियों की विजय के साथ कलूंगा के यौद्धिक नाटक के प्रथम अंक की यवनिका का पात हुआ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## : १२ :

अद्भुत शौर्य के धनी नैपालियों की यह प्रथम विजय थी। यद्यपि ब्रिटिश सैनिकों की संख्या लगभग बारह-तेरह हजार थी। छोटी-बड़ी तोपों की संख्या अट्ठारह थी और जनरल जिलेस्पी की भाँति ही समर-निपुण, रणविद्या के निष्णात कई आचार्य उसका संचालन कर रहे थे तथापि रण-बाँकुरे नैपाली वीरों ने अपनी पहली ही झड़प में उनको दिन में तारे दिखला दिए। मदान्ध ब्रिटिश अफसरों का गर्व खर्व हो गया। उनकी हेकड़ी धूल में मिल गई। इनकी पराजय की गूँज ब्रिटेन तक पहुँची और पार्लियामेण्ट में एक प्रकार का भूचाल-सा आ गया, जिससे उसके सदस्य विशाल भवन की भाँति हिलने लगे। ब्रिटिश टामी अपने को भारत-विजेता कहते आये हैं, और कई मदोन्मत्त फिरंगियों ने दावा किया है कि उन्होंने तलवार के बल से भारत को विजय किया था। सत्यता यह है कि उन्होंने केवल छल-प्रपंच, विश्वासघात, रिश्वत, धोखा-धड़ी से भारत पर अपना आधिपत्य जमाया था। हमारे स्वदेशी इतिहासकारों के लिखे हुए इतिहासों को इन्होंने फुँकवा दिया और निरंकुश अत्याचार, उत्पीड़न, लूट-खसोट और बर्बरता की कहानियाँ कभी प्रकाश में नहीं आ सकीं। अपनी सभ्यता का डंका पीटने-वाली जाति का यदि सच्चा इतिहास लिखा जाता, तो संसार उन्हें नर-राक्षस की उपाधि से विभूषित करता। जो चाहा उन्होंने कहा और जो चाहा उन्होंने लिखा—उनकी जबान पकड़ने वाला कोई नहीं था, परन्तु फिर भी सत्य की प्रकाश-किरणें किसी रूप में छोटी से छोटी सन्धि पाकर असत्य के भयानक तम-तोप को छिन्न-भिन्न करती हुई निकल ही पड़ती हैं, और उस सूत्र से यदि सम्पूर्ण नहीं, तो सम्पूर्णप्राय सत्य का दर्शन हो जाता

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हैं। नैपाल के विषय में जो कुछ उनके इतिहासकारों ने लिखा वह सर्वथा झूठ होते हुए भी उनकी विजय को वे अस्वीकार नहीं कर सके। प्रिन्सेप, विलसन, वेवरिज, थार्नटन आदि इतिहासकारों ने बहुत अल्प में वर्णन कर अपना पिंडसा छुड़ाया है। अपनी हार मानी किन्तु जिलेस्पी की महान वीर की भाँति पूजा भी की है। उन्होंने बड़ी कुशलता से अपनी पराजय की कसक मिटाने के लिए यह बहाना पेश किया कि उनके तीन सेनापति यथासमय कलूँगा के तीनों पक्षों पर पहुँच कर आक्रमण नहीं कर सके जबकि शायद सत्य यह है कि वे या तो कुछ कर नहीं सके, या नैपालियों ने उधर भी मुँहतोड़ जवाब दिया। इस विषय पर हमारा लिखा कोई इतिहास उपलब्ध न होने से हमें उन्हीं के लिखे इतिहास पर आश्रित रहना पड़ता था।

कलूँगा निवासी इस विजय का उत्सव मनाने के लिए उसके चौक में एकत्रित हुए। बलभद्र सिंह ने उनके शौर्य और साहस की प्रशंसा करने के बाद कहा—"भइयो, अभी हमारा युद्ध समाप्त नहीं हुआ है। फिरंगी यद्यपि कलूँगा का घेरा उठाकर चले गये हैं, तथापि वे देहरा में बैठे हुए नई कुमक आने की प्रतीक्षा में हैं। इस अवधि में हमें उन स्थानों की मरम्मत करनी है, जो शत्रुओं की तोपों से नष्ट हुए हैं।"

मान बहादुर ने उठकर कहा—"सेनापति का आदेश पालन करने के लिए हम सब तैयार हैं। दो दिन में हम सब टूटे हुए स्थानों की मरम्मत कर देंगे, परन्तु हमें भी नई कुमक मँगवानी चाहिए। इस घेरे में बैठे-बैठे हम कब तक लड़ेंगे ?"

नाहर बहादुर ने मान बहादुर के कथन के अनुमोदन में कहा—"हाँ, महाराज, इस तरह कैद रहकर लड़ने में कोई आनन्द नहीं आता। जब-तक हमारी खुखुड़ियों की प्यास नहीं बुझती तबतक हमारे हाथ अलसाये रहेंगे। महाराज अमर सिंह को लिख कर कुमक मँगवाइए। दस बीस हमारे भी आदमी घायल हो गए हैं।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बलभद्र सिंह—"पहले भी मैंने उनको कुछ सैनिकों को भेजने के लिए लिखा था, परन्तु उन्होंने अपनी असमर्थता प्रकट की थी।"

मानबहादुर—"महाराज अब उन्हें पुनः लिखिए। फिरंगियों के पास गोला-बारूद की कोई कमी नहीं है। वे बड़ी से बड़ी तोपें ला सकते हैं, और जासूसों ने भी यही बताया है कि दिल्ली तथा कलकत्ता खबर भेजकर वे बड़ी-बड़ी तोपें मँगवा रहे हैं। जब तक मैदान में खुलकर युद्ध नहीं होगा तब तक वे हमारा लोहा नहीं मानेंगे।"

बलभद्र सिंह—"यह तुम ठीक कहते हो मान बहादुर। मैं भी उनसे खुलकर लड़ना चाहता हूँ, परन्तु यह भी तुम्हें बता चुका हूँ कि फिरंगियों ने नैपाल पर चार ओर से आक्रमण किया है। आक्टर लोनी पंजाब और हिमाचल की ओर से, जिलेस्पी इधर गढ़वाल से, जान सुलीवान उड गोरखपुर की दिशा से और मारले उत्तरी बिहार से सीधे काठमांडू पर आक्रमण कर रहे हैं। जहाँ तक हमें मालूम हुआ है उनके पास तीस-बत्तीस हजार से अधिक सैनिक हैं और लगभग सत्तर तोपें हैं। उनकी योजना हमें समूल नष्ट करने की है और अब तक वे किसी भारतीय राजा से इतनी शक्ति के साथ नहीं लड़े हैं। हमें अपने प्राणों की बाजी लगाकर अपनी मातृ-भूमि की रक्षा करनी है।"

नाहर बहादुर—"जैसे हम यहाँ से फिरंगियों को भगाने में सफल हुए हैं, उसी प्रकार हमारे साथी उनको सभी मोरचों पर हराकर भगा देंगे।"

बलभद सिंह—"यह ठीक है, वे भी हमसे उन्नीस नहीं, बल्कि बीस बैठेंगे; परन्तु प्रश्न है हमारी संख्या का। उसे कैसे पूरा किया जाय?"

शेर सिंह—"हमारी इतनी सेना उनके लिए पर्याप्त है। हमें क्या किसी भारतीय राजा से मदद नहीं मिल सकती?"

"लगभग पूरा उत्तरी भारत फिरंगियों के अधिकार में है। लखनऊ का नवाब कहने को स्वतन्त्र है, किन्तु वास्तविकता यह है कि वह उनके

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हाथों की कठपुतली है। उसी ने हमसे लड़ने के लिए दो करोड़ रुपए फिरंगियों को दिये हैं। पंजाब का रणजीत सिंह इस योग्य है कि वह हमें सहायता पहुँचा सके, परन्तु वह भी अंग्रेजों की अरदब में है, और वह भी हिमाचल प्रदेश पर अपना अधिकार जमाने को उत्सुक है। उसे भी हमारी स्वतन्त्रता खटकती है। उसने सहायता देने से साफ इनकार कर दिया है, बल्कि वह छिपे-छिपे उनको मदद पहुँचा रहा है।"

शेरसिंह—"तब हमें अपने ही बल पर भरोसा करना है।"

बलभद्रसिंह—"बेशक, और वही सच्चा बल है।"

नाहर बहादुर—"दक्षिण-भारत के शासकों अर्थात् सिंधिया, पेशवा, होल्कर आदि से क्या सहायता प्राप्त नहीं की जा सकती?"

बलभद्रसिंह—"वे स्वयं अपनी-अपनी उलझनों में बुरी तरह फँसे हुए हैं। उनकी स्थिति तो हमसे ज्यादा खराब है। उनके सामन्तों को अंग्रेजों ने घूस तथा लोभ देकर अपनी ओर मिला रखा है, जो उन्हें हमारी सहायता करने से रोकते हैं। फिरंगियों ने उन्हें भी भेंड़-बकरी बना डाला है।"

इस सभा में अन्य नारियों के साथ पार्वती और गौरी भी आई हुई थीं। पार्वती ने उठकर कहा—"महाराज, आप अपने सैनिकों की संख्या गिनते समय हम नारियों को क्यों भुला देते हैं? नैपाली वीराङ्गनाएं किसी फिरंगी से शक्ति में कम नहीं हैं। वे युद्ध में साक्षात् रणचंडी की भाँति लड़ती हैं। जगद्धात्री दुर्गा के सदृश हम फिरंगियों से उसी प्रकार युद्ध करने की सामर्थ्य रखती हैं जैसे उन्होंने महिषासुर की सेना का दलन किया था।"

बलभद्रसिंह—"हाँ देवि! तुम्हारा युद्ध-कौशल देखकर हमें तुम्हारी शक्ति पर विश्वास करना पड़ता है। तुमने जनरल जिलेस्पी को यमलोक पहुँचा कर हमें विजय दिलाई है, इसके लिए हम सब सदैव कृतज्ञ रहेंगे।"

पार्वती—"महाराज, यह अन्याय न कीजिए। मैंने केवल अपना कर्त्तव्य पालन किया है और प्रत्येक गोरखा ऐसा ही करता है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बलभद्र सिंह—"किन्तु यह पुण्यकार्य तुमसे सम्मन्न हुआ है, इसलिए तुम हो इसकी अधिकारिणी हो। तुम्हारी सखी कहाँ है ?"

पार्वती ने गौरी को उठने का संकेत करते हुए कहा—"महाराज, यह भी यहीं बैठी है। देखिए वह उठ खड़ी हुई।"

गौरी लजाई हुई दृष्टि से पृथ्वी की ओर देखने लगी।

बलभद्र सिंह—"हाँ, यह तो बताओ, तुम्हारी प्रतिज्ञा पूर्ण हुई ?"

पार्वती—"अभी कुछ मनके घटते हैं महाराज ?"

बलभद्र सिंह—"कितने ?"

पार्वती—"अभी तक कुल एक्यानबे दाने हुए हैं, जिनमें जिलेस्पी सुमेरु है। जिस सुमेरु को प्राप्त करने में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है, वह महाराज के आशिर्वाद से सहज ही मिल गया। अभी सत्रह गुरियों की कमी है, आगे आने वाले युद्ध में पूरी की जायगी।"

गौरी की ओर संकेत करते हुए बलभद्र सिंह ने पूछा—"और देवि! तुम्हारी मुंडमाल क्या पूर्ण हो गई ?"

गौरी ने सलज्ज कंठ से उत्तर दिया—"भारतीय और फिरंगियों को मिलाकर मेरी मुंडमाल पूर्ण हो गई है। पार्वती बहिन ने मेरी अपेक्षा कहीं ज्यादा उनके सैनिकों को मारा है, परन्तु उनकी प्रतिज्ञा थी कि वह केवल फिरंगियों की ही मुंडमाल बनाएँगी। वस्तुतः उन्होंने जिलेस्पी के अतिरिक्त एक्यानबे फिरंगियों का हृदय विदीर्ण किया है।"

बलभद्र सिंह ने उनकी प्रतिज्ञा का परिचय देने के पश्चात् कहा—"ऐसी देवियों के रहते हमें अपनी संख्या की कमी महसूस नहीं हो सकती। भाइयो, इन देवियों के पराक्रम की जितनी प्रशंसा की जाय, वह थोड़ी होगी। देवी पार्वती और गौरी सत्य ही दुर्गा की अवतार हैं। हमें इन्हें पुरस्कृत करना है।"

पार्वती—"महाराज, अभी तो मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण होने में विलम्ब है। पुरस्कार में आप अपना आशीर्वाद दीजिए कि हमारी प्रतिज्ञा पूर्ण हो।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बलभद्र सिंह—"वह निश्चय पूर्ण होगी और मान बहादुर, तुम्हारे सौभाग्य की सराहना मैं मुक्त कंठ से करता हूँ कि तुम्हें इतनी वीर महिला जीवन-संगिनी के रूप में मिल रही है।"

पार्वती लजाकर बैठ गई, और मान बहादुर ने भी अपने नेत्र नीचे कर लिए।

बलभद्र सिंह कहते गए—"हमें गौरी के लिए उसी के समान पराक्रमी जीवन-साथी ढूँढना है।"

सभा में एक बार निस्तब्धता छा गई। सब उस प्रश्न की गुत्थी सुलझाने में लग गए।

गौरी ने हाथ जोड़ कर कहा—"महाराज, धृष्टता क्षमा की जाय। इस विषय में मेरा कुछ बोलना छोटे मुँह बड़ी बात होगी, तथा गुरुजनों के सम्मुख कुछ कहना भी आपत्तिजनक हो सकता है।"

बलभद्र सिंह ने अभय देते हुए कहा—"नहीं देवि, तुमको अपनी बात कहने की अनुमति है, इसमें तुम्हारे गुरुजनों का अपमान नहीं होगा।"

गौरी धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ स्वर में बोली—"युद्ध-काल में विवाह आदि की चर्चा होना कुछ अनुचित और अनुपयुक्त है। रणभेरी में विवाह नहीं सम्पन्न होते वे तो शहनाइयों की मंगल-ध्वनि में किये जाते हैं।"

बलभद्र सिंह—"तुम्हारे कथन में सत्यता है। मैं अपनी भूल स्वीकार करता हूँ। तुम लोगों के पुरस्कार के विषय में मैं युद्ध-समिति के सदस्यों से परामर्श करूँगा। अब आप लोग विश्राम कीजिए।" जयध्वनि के साथ विजय-अधिवेशन समाप्त हुआ।

○ ○ ○

: १३ :

जनरल जिलेस्पी की मृत्यु के पश्चात् कर्नल माबी ब्रिटिश सेना के अधिपति नियुक्त हुए। स्वयं जिलेस्पी युद्ध-समिति के सदस्यों को उनके उत्तराधिकारी होने की सूचना दे गये थे। कर्नल माबी की सेना के पैर वीर नैपालियों की अचानक गोलाबारी से उखड़ गए और ऐसी भगदड़ मच गई, जैसी पहले कभी नहीं देखी गई थी। भगोड़ों में सबसे आगे वे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्रिटिश सिपाही थे जिनको वीरता के गीत अंग्रेज इतिहासकारों ने गाये हैं। किराये पर लड़ने वाले भारतीय सिपाही तो पहले से ही उनके आचरण से विक्षुब्ध थे। अंग्रेज सिपाहियों को मैदान छोड़ते देखकर वे भी सिर पर पैर रख कर भागे। कर्नल माबी के सामने रण छोड़कर भागने के अतिरिक्त दूसरा विकल्प नहीं था।

केली और फास्ट की सेनाएँ कलूँगा के आस-पास घूमती रहीं किन्तु कैम्पबेल अपनी टुकड़ी के साथ ठीक उस समय आ पहुँचा जब माबी पीछे हटने का बिगुल बजवा रहे थे। जनरल जिलेस्पी की मृत्यु से उनका भी साहस टूट गया, तथा वे भी सेना पीछे देहरा नगर में हटाने के लिए विवश हो गए। गोरखों की वीरता का लोहा उन्होंने स्वीकार किया और उसके प्रत्याक्रमण से बचने के लिए शीघ्रता से देहरा में आश्रय लेने के लिए उन्होंने कूच कर दिया।

सूर्यास्त होने के पहले-पहले फिरंगियों की सेना लस्त-पस्त हालत में पहुँची। अंग्रेज सैनिक सभी उदास थे। वे अपने साथ अपने सेनानायकों के शव दफनाने के लिए उठा लाये थे, परन्तु भारतीय सैनिकों के शव सड़ने और गिद्धों, जंगली जानवरों के खाने के लिए छोड़ आये थे। उनके शवों का सत्कार करने का प्रबन्ध कभी भी ब्रिटिश-सेना में नहीं रहा। उनके घायल होने पर भी उनकी चिकित्सा नहीं की जाती थी, बल्कि वे उसी ठौर मार दिये जाते थे। घायलों की सेवा-शुश्रूषा में जो व्यय उनके खाता-पत्रों में दिखाया गया है, वह मुख्यतः अंग्रेज सिपाहियों पर ही हुआ और उसी लिए उसका प्रावधान भी होता था।

उन दिनों कलकत्ता नगर अंग्रेजों की राजधानी थी लार्ड म्वायरा-गवर्नर जनरल को इस पराजय की किस प्रकार सूचना दी जाय, यह प्रश्न कर्नल माबी के मस्तिष्क में चक्कर काट रहा था। वह सोच रहे थे कि किस उपाय से अपनी पराजय छिपायें। वह पराजय एक अत्यन्त छोटे गढ़ के मुहासिरे में जिसकी रक्षा का कोई समुचित प्रबन्ध न था, और न उनकी कोई बड़ी सेना ही उसमें थी, जिसमें केवल तीन सौ के लगभग वीर गोरखा सिपाही थे, हुई थी, उनके लिए बड़े शर्म और ग्लानि की थी। कर्न माबी ही नहीं वरन् सभी अंग्रेज सेनाध्यक्ष इस गुत्थी को सुलझाने में व्यस्त थे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देहरा लौटने पर पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ कर्नल मावी ने पाँच सैनिक अफसरों और सत्ताईस सैनिकों को जनरल जिलेस्पी के साथ दफनाया। इनमें लेफ्टीनेन्ट ओ-हारा, लेफ्टोनेन्ट गार्सलिंग, लाइट बैटेलियन, एनसाइन फादर गिल और एनसाइन एलिस थे। इनके अतिरिक्त सौ घुड़सवारों में चार फिरंगी घुड़सवार भी मय अश्वों के मारे गए थे। उनको भी उसी रीति से दफनाया गया।

इस युद्ध में इन मृतकों के अतिरिक्त पन्द्रह अफसर और दो सौ तेरह फिरंगी सिपाही बुरी तरह घायल हुए थे। उनमें से कितनों के घाव घातक थे। भगदड़ के बोच उसको लाने से कई मार्ग में ही दम तोड़ चुके थे, और कई मरने की राह देख रहे थे। सबके मन गिरे होने से उनकी चिकित्सा भी सुचारु रूप से नहीं हो रही थी, और यह अन्देशा था कि उनमें से शायद ही कोई उठकर खड़ा हो सके। अंग्रेज इतिहासकारों ने अपने मृत और घायलों को वही संख्या बताई है जो शत प्रतिशत फिरंगी थे। उन्होंने भारतीय जवानों के मृत तथा घायलों की कोई संख्या नहीं बतायी। इससे प्रमाणित होता है कि न युद्ध क्षेत्र में उनके शवों का सत्कार ही किया गया, और न उनके घायलों को देहरा लाया गया। किराये पर लड़नेवालों के साथ यही व्यवहार सदा से होता आया है, और होता रहेगा। वे अभागे एक-एक बूंद पानी के लिए तरसये मरे, और जंगली जानवरों से अपने शरीर की दुर्दशा कराते हुए तिल-तिलकर अपने प्राण छोड़े।

साम्राज्य शोषण की नींव पर बनता है, पनपता है, फलता है, फूलता है ब्रिटिश साम्राज्य ने जितना संसार का शोषण किया है, उतना किसी साम्राज्य ने नहीं किया। शोषण के कारण ही वह संसार का सिरमौर राष्ट्र बना और जितनी आर्थिक उन्नति उसकी हुई, वह सब शोषण काल में हुयी। 'पराजित होकर पुनः युद्ध करने' तथा 'सफलता के साथ पीछे हटने' के दो नये नियमों के प्रचलन का श्रेय एकमात्र ब्रिटेन को है। छल, प्रपंच और विश्वासघात आदि अनैतिक आचरणों को विधिविहित प्रमाणित करने में भी वह अग्रणी रहा है। इसके विपरीत भारतीय युद्ध-संहिता में इनके लिए कोई स्थान कभी नहीं रहा। मध्ययुग में भी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भारतीय अपनी नैतिकता के कारण ही युद्धों में पराजित होते रहे हैं। मनुष्य अपने चारित्रिक स्तर से अन्य के चरित्र की कल्पना करता है। भारतीय सदा से सबका विश्वास करते रहे, और इसी कारण से वे सदा दूसरों से ठगे गए। अंग्रेजी सेना में प्रवेश करने वाले भारतीय सैनिक भी इसी प्रवृत्ति के कारण सदैव अपने प्राणों का बलिदान करते रहे। वेतन, व्यवहार, सुविधाओं में प्रत्यक्ष अन्तर एक टामी और भारतीय सैनिक में होते हुए भी वे उनके साथ लड़ते और सबसे पहले वहीं शत्रुओं का लोहा सहन करते थे। अंग्रेजों ने सदैव हिन्दुस्तानियों को पशुओं से अधिक नहीं समझा, तथा उनके पूर्व-इतिहास को इतना तोड़-मरोड़ कर पेश किया, जिससे वे अपने को हेय ही समझते रहे। कर्नल मावो ने भी उसी प्रकार अमानवीय व्यवहार भारतीय घायलों से किया। कलूँगा के युद्ध से किसी भारतीय सैनिक के लाये जाने अथवा उसके उपचार की व्यवस्था किये जाने का लेख नहीं मिलता।

मृत अंग्रेज अफसरों के दफनाने के एक दिन बाद कर्नल मावी ने युद्ध समिति की बैठक बुलाई। उनके चेहरों पर पराजय के चिह्न स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहे थे। वे ऐसे मौन थे मानों सबको साँप सूँघ गया हो।

कर्नल मावी ने भूमिका में अपना हार पर खेद प्रकट करते हुए कहा- "इस पराजय से हमारी प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचा है। मेरी समझ में नहीं आता कि गवर्नर जनरल को क्या लिखा जाय और किस प्रकार इस ग्लानि से मुक्ति पायी जाय। मैं उस समय परेशान हो जाता हूँ जब सोचता हूँ कि इसकी कैसी प्रतिक्रिया—गवर्नर जनरल और कम्पनी के डायरेक्टरों पर होगी। छोटी-मोटी पराजय होती तो दुबारा आक्रमण कर सँभाल ली जाती, परन्तु जनरल जिलेस्पी जैसे निपुण योद्धा की, तथा अन्य अफसरों की मृत्यु तो किसी प्रकार छिपाई नहीं जा सकती। आप लोग सोच कर बताइए कि क्या किया जाय ?"

फ्रेजर ने कहा—"हाँ, समस्या तो मुश्किल है। यदि सत्य-सत्य लिखा जाय तो.....।"

मावी—"किन्तु इससे हमारी प्रतिष्ठा और अजेयता को बड़ा करारा धक्का पहुँचेगा; और हम सबों की बड़ी छीछालेदर होगी।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

केली—"लेकिन क्या इससे बचा जा सकता है ?"

मावी—"बचाने का प्रयत्न तो करना ही चाहिए।"

कैम्पबेल—"आपने कुछ सोचा है ?"

मावी—"मैंने जो सोचा है उसको करने से किसी हद तक हमारी प्रतिष्ठा बनी रह सकती है, परन्तु इसके लिए आप के सहयोग की आवश्यकता है।"

फास्ट—"हम आपके साथ हैं, और पूरा सहयोग देंगे।"

स्टीवेनसन—"हम सब एक ही नाव के यात्री हैं, इसलिए सहयोग देना अनिवार्य है। हमें ऐसा उपाय सोचना चाहिए जिससे हमारी सबकी प्रतिष्ठा बनी रहे।"

मावी—"किन्तु हममें से किसी को बलि का बकरा बनना ही पड़ेगा।"

कैम्पबेल—"यदि ब्रिटिश राज्य की प्रतिष्ठा अक्षुण्ण बनी रहे तो हम सब बलि के बकरे को तैयार हैं।"

मावी—"हमारे सैनिकों की संख्या बाहर हजार से ऊपर है और इतनी बड़ी सेना के रहते हुए हम पराजित हुए कुछ मुट्ठी भर नैपालियों और उनके क्षुद्र गढ़ से। यह दरअसल हमारे लिए बड़ी शर्म की बात है।"

फ्रेजर—"निस्सन्देह ! आप उपाय बताइए। उस पर भी हम विचार करें।"

मावी—"वही कह रहा था कि हमें इस बड़ी सेना की संख्या को छोटी करना पड़ेगा।"

फ्रेजर—"यह कैसे संभव है, जब गवर्नर जनरल ने इसकी व्यवस्था स्वयं की है, और मैं भी छः हजार चुने हुए सिपाहियों को लेकर आपकी सहायता के लिए आया हूँ। इसे किसी प्रकार छिपाया नहीं जा सकता।"

मावी—"मेरा आशय है कि यदि हम अपनी सेना को चार भागों में विभक्त करना बताकर कलूँगा को चारों दिशाओं से घेरने तथा आक्रमण करने की योजना समझायें तब एक-एक मुहासिरे में सैनिकों की कमी बताई जा सकती है। इसके अतिरिक्त हिन्दुस्तानी सिपाहियों की नमकहरामी बताने से भी हो जाती।"

फ्रेजर—"इसमें मेरी और दिल्ली रेजीडेन्ट की बदनामी होगी।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

माबी—"हिन्दू और मुस्लिम सिपाहियों में मतभेद बताकर इस बदनामी से बचा जा सकता है।"

फ्रेजर—"मंजूर है, आगे कहिए।"

माबी—"हम बतावें कि जनरल जिलेस्पी ने कलूँगा घेरने की योजना बनायी थी, जिसके अनुसार सेना को चार भागों में बाँटकर आक्रमण करना था। तीन भागों में ब्रिटिश सैनिकों के बँट जाने से सन्मुख लड़ाई के लिए बहुत थोड़े सैनिक बचे थे। जनरल जिलेस्पो बावजुद हमारे सुझाव के सामने के युद्ध के लिए अधिक ब्रिटिश सैनिक रखने को राजी नहीं हुए, क्योंकि उनको अपने शौर्य पर जरूरत से ज्यादा विश्वास था। उनके साथ हिन्दुस्तानी सिपाहियों ने ऐन मौके पर विद्रोह कर दिया, किन्तु जनरल ने उसकी कोई परवा न कर आक्रमण कर दिया। उनका साथ देने के लिए हमारे दूसरे अफसरों ने भी उनके पीछे अनुसरण किया। इसी बीच जनरल और दूसरे अफसर मारे गए। हिन्दुस्तानी सैनिकों ने पहले से ही विद्रोह किया था, इसलिए वे भाग खड़े हुए, और ब्रिटिश सिपाही जनरल की मृत्यु से दुखित होकर मैदान छोड़ने को मजबूर हुए।"

फ्रेजर—"इतनी खींच-तान करने से बात कुछ बैठ जरूर जाती है, किन्तु अन्त तक ठहरती नहीं।"

माबी—"मुझे इसके अतिरिक्त दूसरा उपाय नहीं सूझा।"

फ्रेजर—"बहुत बड़ा अपराध उन तीन भागों के सेनानायकों पर आयद होता है, जो कलूँगा पर तीन तरफ से आक्रमण करने के लिए भेजे जाते हैं।"

माबी—"हाँ, वह जवाबदेह हो जाते हैं।"

फ्रेजर—"उनकी भी तो रक्षा करनी चाहिए।"

माबी—"मैंने उस पर भी विचार किया है। उनकी बचत हो सकती है, यदि हम बतावें कि जनरल जिलेस्पी ने वास्तविक आक्रमण आरम्भ करने के लिए एक संकेत निश्चित किया था। उसमें कुछ त्रुटि रह जाने के कारण गड़बड़ी हो गई, और यथासमय वे आक्रमण नहीं कर सके।"

फ्रेजर—"इसको स्पष्ट कीजिए।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मावी—"यह हम कहें कि सांकेतिक गोला दागने का समय प्रातः आठ बजे निश्चित हुआ, था, और उसका शब्द सुनने के दो घंटे बाद यानी दस बजे आक्रमण करने की बात तय हुयी थी, तब इससे बात बन सकती है।"

फ्रेजर—"अर्थात् हमारे तीनों सेनानायकों ने तोप की आवाज नहीं सुनी ?"

मावी—"हाँ।"

फ्रेजर—"यह कुछ अजीब-सी बात लगती है कि तीनों में से कोई नहीं सुनता !"

मावी—"है तो सन्देहास्पद, किन्तु हम सब एक स्वर तथा मत से कहेंगे तो उन्हें मानना पड़ेगा, और हमारी रिपोर्ट पर विश्वास करना पड़ेगा।"

फ्रेजर—ठीक, आप किन तीन अफसरों पर बदनामी का टोकरा लादना चाहते हैं।

मावी—"कारपेन्टर और मैं इस भार को उठा नहीं सकते, अब शेष रहते हैं, केली, फास्ट और कैम्पबेल। इन तीनों को ही यह बदनामी उठानी पड़ेगी।"

तीनों ने एक साथ उत्तर दिया—"हम तीनों तैयार हैं, जो इसके लिए दंड दिया जायगा, वह हम तीनों सहर्ष स्वीकार करेंगे।"

मावी—"मैं वचन देता हूँ कि तुम तीनों पर कोई आँच नहीं आने दूँगा। अपनी रिपोर्ट में मैं समस्त जिम्मेदारी जनरल जिलेस्पी पर डाल दूँगा।"

फ्रेजर—"किन्तु एक मृत व्यक्ति को नाहक बदनाम करना होगा।"

मावी—"जो मर चुका है उसकी बदनामी होने से भी उसकी कोई हानि नहीं होगी। हम उसकी वीरता को इतना बढ़ा-चढ़ाकर दिखायेंगे कि वह शहीद की भाँति पूजित होगा, और उसकी यह बदनामी उसी में छिप जायगी।"

फ्रेजर ने एक लम्बी साँस लेकर कहा—"ठीक है, जैसा उचित समझिये, वैसा जीजिए।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

माबी--"किन्तु सबको चुप्पी लगानी होगी ! असली भेद किसी पर प्रकट न होने पावे।"

फ्रेजर—"मैं अपनी ओर से किसी को सूचना नहीं दूँगा, स्टीवेनसन को छोड़ सब योजना में शामिल रहेंगे; अतएव बात फूटने का कोई डर नहीं है।"

माबी—"अब हमें आगे क्या करना चाहिए ?"

फ्रेजर—"कलकत्ता से और सहायता माँगी जावे।"

माबी—"मेरा भी यही विचार है।"

फ्रेजर—"जब तक सहायता नहीं आती तब तक हम यहीं ठहरेंगे।"

माबी—"और क्या कर सकते हैं। हमारे हिन्दुस्तानी सैनिक करीब-करीब सब भाग गए हैं। आप भी दूसरे विश्वासी सैनिकों की भरती कीजिए, क्योंकि मरने वाले भी हमें कुछ चाहिए।

फ्रेजर—"आपकी इन तोपों से काम नहीं चलेगा। कुछ बड़ी-बड़ी तोपें मँगवाइए।

माबी—"मैं भी यही सोच रहा हूँ, परन्तु वे लोग हँसेंगे कि चूहों को मारने के लिए तोप का गोला चाहिए।"

फ्रेजर—"परन्तु इसके बिना कलूँगा ध्वस्त नहीं हो सकता। जब तक वह ध्वस्त नहीं होता, तब तक ब्रिटिश-प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता।"

माबी—"आप से मेरा पूर्ण मतैक्य है।"

फ्रेजर—"क्या किसी अन्य विषय पर मंत्रणा करनी है ?"

माबी—"नहीं, मैं आप सबको हृदय से धन्यवाद देता हूँ कि आप लोगों ने मेरी योजना स्वीकार कर ली। अब आप लोग विश्राम कीजिए। मैं रिपोर्ट लिखने जा रहा हूँ।"

समिति की बैठक समाप्त हुई और सत्य की गला-घोंटू रिपोर्ट लिखने के लिए माबी अपने कक्ष में चला गया।

● ● ●

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

: १४ :

गोवर्धन पंडित कैद में भी बड़े आनन्द से दिन काट रहे थे। ब्राह्मण होने के कारण वह अवध्य थे, और उन पर कोई जोर-जुल्म भी नहीं किया गया। वह दूसरों को प्रभावित करने की कला में निपुण थे। जब जैसे समाज में उनका प्रवेश होता तुरन्त उसके अनुकूल अपने को ढाल लेते थे।

उनका जन्म बनारस के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। पिता पंडित मधुसूदन अपने समय के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। बनारस के राजा चेत सिंह के दरबार में उन्हें प्रतिष्ठित पद प्राप्त था। वह अंग्रेजों की चतुरी कला का सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण कर रहे थे। राजा चेत सिंह और वारेन हेस्टिंग्स के युद्ध में उन्होंने सक्रिय भाग लिया था, परन्तु उनकी पराजय के पश्चात् वह फिरंगियों के भक्त हो गए। वारेन हेस्टिंग्स ने भी उनकी ज्योतिष विद्या के ज्ञान के विषय में सुना था। उस पर कई आपदाएँ आ रही थीं। उसकी सैनिक बुद्धि किसी ज्योतिषी से अपना भविष्य जानने के लिए प्रेरित कर रही थी, और एक दिन उसने मधुसूदन पंडित को आमंत्रित किया। उसने अपने दुभाषिए की सहायता से अपने आगामी जीवन के सम्बन्ध में प्रश्न किये, जिनका समुचित उत्तर उन्होंने दिया। उससे प्रसन्न होकर उसने उन्हें अपने साथ ले लिया। मधुसूदन पर भाग्यलक्ष्मी प्रसन्न हुईं और उनके दिन चैन से कटने लगे। उनकी कई भविष्यवाणियाँ सत्य हुईं, इसलिए उसका विश्वास उत्तरोत्तर जमता गया, और वह उनका इतना मुरीद हो गया कि जब कोई नया कार्य करता उनके परामर्श के बिना नहीं करता था।

उस समय गोवर्धन पण्डित युवावस्था में प्रवेश कर रहे थे। वह भी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कुशल दूरद्रष्टा थे। उन्हें अपनी उन्नति का मार्ग फिरंगियों की सेवा में ही दीख पड़ा। ज्योतिष का ज्ञान अपने पिता से प्राप्त कर वह भी उनके साथ वारेन हेस्टिंग्स के दरबार में जाने लगे थे। जब वारेन हेस्टिंग्स पर ब्रिटिश पार्लियामेण्ट में मुकदमा चला, तब उसने कई पत्र मधुसूदन पंडित को लिख कर अपने भविष्य के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे थे। उनका उत्तर मधुसूदन पडित ने नहीं दिया, क्योंकि वह उगते हुए सूर्य के उपासक थे न कि अस्ताचल की ओर प्रस्थान करते हुए सूर्य के। वारेन हेस्टिंग्स कुढ़ गया, और उसने अपने साथियों से कह कर उनको पदच्युत करवा दिया। कलकत्ता से मधुसूदन अपने धाम बनारस चले आये किन्तु गोवर्धन को वहीं अपनी जीविका चलाने के लिए छोड़ दिया।

अब तक गोवर्धन पण्डित को जान-पहचान तत्कालीन ब्रिटिश अफसरों से हो गई थी और लार्ड वेलेजली ने उसका उपयोग गुप्तचर की भाँति करना आरम्भ किया। इसमें भी उन्हें काफी सफलता मिली। जब किसी राज्य से युद्ध छिड़ने को होता, वह महीनों पहले वहाँ भेज दिये जाते, तथा उसकी गुप्त बातों तथा भेदों का पता लगाकर उनकी विजय का मार्ग प्रशस्त करते थे।

उनके ऊपर एक और दायित्व था, वह यह कि हिन्दू सैनिकों को मुस्लिम सैनिकों से पृथक् रखना। वह उपदेश देते थे कि मुसलिम सैनिकों से कोई सामाजिक सम्बन्ध न रखा जाय और वे उसी भाँति उनसे घृणा करें जैसे इतर निम्नवर्ग के हिन्दुओं से की जाती है। हिन्दू सैनिक पहले से ही उनसे घृणा करते थे, उनके उपदेश से वह भावना उत्तरोत्तर दृढ़ होती गई। अंग्रेजी की नीति सदा से उनको लड़ाए रखने की रही है। इसी उद्देश्य से वे अपनी फौज में मुसलिम मुल्लाओं और हिन्दू पण्डितों को उनके धार्मिक कृत्यों को कराने के बहाने रखते थे। ये लोग भी कुछ पैसों के लोभ से दोनों धर्मावलम्बियों के मनों में द्वेष के बीज सदैव रोपते रहते थे।

कलूँगा दुर्ग में प्रवेश करने में गोवर्धवन पण्डित को जब सफलता मिल गई, वह मन ही मन प्रसन्न हुआ और आधी विजय माना। कैद किये जाने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

से उन्हें कोई चिन्ता नहीं हुई। बिना कुछ दिन रहे हुए वह उसके गुप्त भेद जान भी नहीं सकते थे, और वहाँ से निकाल दिए जाने के बजाय जब कैद हुए तो उन्होंने इसको वरदान समझा।

कलूँगा में कोई बाकायदा संचालित बन्दीगृह नहीं था। दरअसल वह गोरखा सिपाहियों के रहने की एक चौकी मात्र थी। अंग्रेजों से युद्ध घोषित होने के बाद उसे अवश्य पत्थरों के ढोकों से इस प्रकार घेर दिया गया था, जिसमें शत्रुओं का प्रवेश आसानी से न हो सके। दीवारों की मरम्मत की गई थी, तथा शत्रुओं को मारने के लिए कई मोखे बनाये गए थे। उन्होंने वे सब प्रबन्ध कर लिए थे, जिससे शत्रुओं से लोहा लिया जा सके। जब बलभद्र सिंह ने गोवर्धन पंडित को कैद में रखने का आदेश दिया, तब उन्हें एक सैनिक की कोठरी में रहने की व्यवस्था की गई और निगरानी के लिए एक बूढ़ा गोरखा सिपाही नियुक्त किया गया। उस बूढ़े सिपाही का नाम था गोविन्द सिंह।

गोविन्द सिंह एक धार्मिक वृत्ति और शान्त प्रकृति का सिपाही था। युद्ध में भाग लेने की अपेक्षा गोवर्धन पण्डित की निगरानी का काम उसकी प्रकृति के अनुकूल था। गोवर्धन पंडित ने कुछ ही क्षणों में जान लिया कि उनका चौकीदार बातूनी और सीधे-सादे स्वभाव का है, जिसको पटाना उनके लिए कठिन नहीं होगा।

उनके आवास की कोठरी दिखाकर गोविन्द सिंह ने उन्हें सतर्क करते हुए कहा—"देखो पंडित जी, भागने की कोई चेष्टा न करना, नहीं तो....!"

"नहीं तो क्या मार डालोगे ?" गोवर्धन ने हँसते हुए बात काटी।

गोविन्द सिंह उनकी ओर देखने लगा, किन्तु उत्तर में कुछ नहीं बोला।

गोवर्धन पंडित ने पुनः हँसते हुए कहा—"भाई, मैं तो सुनता था कि गोरखा राजपूत बड़े धार्मिक वृत्ति के होते हैं, भगवान् पशुपतिनाथ के वे अनन्य सेवक हैं और गऊ-ब्राह्मण की सेवा अपने प्राण देकर करते हैं। मैंने राज्य के विरुद्ध कोई अपराध नहीं किया। मैंने फिरंगियों के भय से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भाग कर तुम्हारे वन-प्रदेश में शरण ली थी, और संध्या हो जाने से अपना दैनिक अग्निहोत्र कर रहा था कि तुम्हारे सेनानी मुझे पकड़ लाये। तुम्हारे राजा ने मेरी कोई बात नहीं सुनी और कैद कर लिया। अब तुम धमकी देते हो कि भागने का प्रयत्न करने पर गोली मार दोगे। तुम तो वृद्ध अनुभवी वीर हो, पुरानी रीतियों-नीतियों के जानकार हो।"

गोविन्द सिंह मूढ़ की भाँति उन्हें देखने लगा, फिर बोला—"देवता, मैंने गोली मारने की बात नहीं कही।"

"कहा नहीं अवश्य, परन्तु तुम्हारा आशय साफ-साफ प्रकट हो रहा था। यदि ब्राह्मण को मारना तुम्हारे देश में प्रचलित हो तो मार कर किस्सा तमाम करो। मैं कैद में रहते हुए अपने दैनिक धार्मिक कृत्य नहीं कर सकता, इसलिए इस शरीर को त्याग देना ही उत्तम है। आप तो जानते होंगे कि ब्राह्मण के लिए पंच महायज्ञों का नियमित रूप से करना अनिवार्य है। फिरंगियों के राज में भी धार्मिक कृत्यों के करने की पूरी स्वतंत्रता है, और इस हिन्दूराज में क्या उस पर प्रतिबंध लगाया जायगा? हे बाबा, विश्वनाथ, मुझ अभागे कर्मनिष्ठ ब्राह्मण को अपनी सेवा में बुला लो। अब घोर कलिकाल आ गया है।" यह कह कर वह फुफकने लगे। गोविन्द सिंह उनकी अरदब में आ गया। उसने ढाढस बँधाते हुए कहा—"पंडित जी आप मुझे क्षमा करें। मेरा कोई आशय नहीं था कि आप अपने धार्मिक कृत्य न करें, अथवा मैं उसमें कोई बाधा डालूँ। मैं केवल चेतावनी दे रहा था कि आप भागने का प्रयत्न न करें, नहीं तो कोई भी शत्रु का आदमी समझ कर आपको हानि पहुँचा सकता है। आप बेधड़क अपने धार्मिक कृत्य कीजिए मैं कोई रुकावट नहीं डालूँगा, बल्कि आपकी सहायता करूँगा।"

"तब तो ठीक है। मुझे भोजन न चाहिए, वस्त्र न चाहिए, केवल धार्मिक कृत्यों के करने की छूट चाहिए।"

"पंडितजी, वह आपको मिलेगी। धार्मिक कृत्यों में आपकी सहायता करने से मुझे भी पुण्य-लाभ होगा, क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है कि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धार्मिक कामों में रुकावट न डालनी चाहिए। रुकावट डालने वाले रौरव नर्क के भागी होते हैं।"

"यह बात तुमने शास्त्रानुकूल कही है। यदि तुम मेरी सहायता करोगे तो अक्षय पुण्य के भागी होगे। मैं तुम्हारे परिवार की सुख-समृद्धि के लिए कोई अनुष्ठान भी करूंगा।"

"पंडितजी, मेरे परिवार में अब कोई नहीं बचा। पाँच साल पहले जो महामारी आई थी उसमें लड़का और उसकी पत्नी तथा मेरी घरवाली मर गई। अब मैं अकेला हूँ, और इसीलिए महाराज अमरसिंह ने मुझे इस गढ़ में चौकीदार के लिए भेज दिया है।"

"परिवार न सही, तुम्हारे भविष्य के लिए एक अद्भुत अनुष्ठान करूंगा, जिससे तुम स्वर्ग में अक्षय सुख भोगो।"

"हाँ पण्डितजी, यदि ऐसा कोई अनुष्ठान हो तो अवश्य कीजिए।"

"मैं वचन देता हूँ कि तुम्हारे कल्याण के लिए मैं कोई उपाय बाकी नहीं रखूँगा। काशी के पण्डित त्र्यम्बक तन्त्रशास्त्री का नाम तुमने सुना होगा।"

"नहीं पण्डितजी, मैंने उनका नाम नहीं सुना। बनारस जाने की लालसा लिये ही शायद मर जाऊँगा।"

"तुम मेरे साथ चलना। मैं मन्त्र-बल से यहीं से तुम्हें विश्वनाथजी के दर्शन करा सकता हूँ और तन्त्र-बल से तुम्हें मोक्ष दिला सकता हूँ।"

महाराज आप पहुँचे हुए महात्मा हैं; सब कुछ करने की सामर्थ्य रखते हैं।"

'देखो भाई, मुझे महाराज कहकर सम्बोधित न करो। मैं इस शब्द घृणा करता हूँ यह सम्बोधन उनको प्रसन्न करता है जो मृत्युलोक में अधिकार चाहते हैं। शास्त्रों में कहा है—'राज्येश्वराः नरकं व्रजन्ति' अर्थात् राजा नर्क में जाता है।"

"पंडित जी, 'आप संस्कृत' जानते हैं।"

'तुम कैसे मूर्ख हो? ब्राह्मण-पुत्र होकर मैं देवभाषा नहीं जानूँगा! मैंने चारों वेद, छः शास्त्र और अट्ठारह पुराण अपने बालपन में ही पढ़

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

डाले थे। देखना, मैं तुमको कैसे-कैसे चमत्कार दिखाता हूँ। भूत-प्रेत वहाँ से भाग जाते हैं, जहाँ मेरा आगमन होता है।"

"महाराज—नहीं-नहीं पंडितजी, आप बहुत विद्वान् हैं। मैं बहुत दिनों से किसी ऋषि-महात्मा की खोज में था, रोज उठकर प्रार्थना किया करता था....।"

"बस-बस उसी प्रार्थना के वश होकर भगवान् ने मुझे तुम्हारे पास पहुँचा दिया, केवल तेरा कल्याण करने के लिए। अब प्रभु की लीला समझ में आई। तुम सच्चे मन से प्रार्थना करते थे, इसलिए भक्तवत्सल भगवान् ने मेरे मन में इधर आने की प्रेरणा उत्पन्न की, और मुझे एक नाटकीय ढंग से तुम्हारे पास लाकर खड़ा कर दिया। हाँ भाई, तुम्हारा नाम क्या है?"

"गोविन्द सिंह।"

"हाँ भाई गोविन्द सिंह, अब तुम्हें मोक्ष अवश्य प्राप्त होगा। जैसे विश्वामित्र ने अपने योगबल से त्रिशंकु को संदेह स्वर्ग भेजा था उसी प्रकार मैं तुम्हें उससे भी बड़ा मोक्षपद दिलवाने के लिए प्रयत्न करूँगा। गोविन्द सिंह, अब तुम्हारा कल्याण होने में देर नहीं है।"

"हाँ पंडितजी, मुझे भी यही प्रतीत हो रहा है। रोज मैं किसी महात्मा से मिलने का स्वप्न देखा करता था।"

"भगवान् तुमको मेरे आगमन की सूचना दे रहे थे। हाँ गोविन्द सिंह जी, रसोई का क्या प्रबन्ध है?"

"मेरे घर में आपकी कृपा से आटा, दाल, घृत पर्याप्त मात्रा में है। झरने से अभी जल लाये देता हूँ। मेरी कोठरी में चलकर भोजन बनाइए और अपनी प्रसादी मुझे भी दीजिए।"

"बहुत उचित बात तुमने कही है। अर्ध दिन के पश्चात् मैं भोजन नहीं करता।"

"दोपहर के पहले ही हम निवृत्त हो जायेंगे।" यह कहकर वह गोवर्धन पंडित को अपनी कोठरी में ले गया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## : १५ :

कलूँगा में गोवर्धन पंडित के आने के बाद फिरंगियों से युद्ध छिड़ गया था। उस दिन यद्यपि गढ़ में काफी चहल-पहल थी, प्रायः सब निवासी अपने-अपने कर्त्तव्यों का पालन कर रहे थे, परन्तु उस ओर जहाँ गोवर्धन पंडित और गोविन्द सिंह थे, वहाँ शान्ति थी। वह गढ़ का पिछला भाग था। यद्यपि उधर भी रक्षा करने की पूरी तैयारी थी, तथापि वहाँ के रक्षक गढ़ के सामने होने वाले युद्ध में खिंचकर चले गये थे। युद्ध हो रहा था, किन्तु इधर वे दोनों रसोई बनाने में लगे थे। गोवर्धन पंडित ने गोविन्द सिंह पर अपना पूर्ण आधिपत्य जमा लिया था। उनकी लच्छेदार बातों में वह इतना फँस गया था कि वह सत्य ही उनको ईश्वर का दूत मानने लगा। उन्हीं दिनों फासफोरस की खोज हुई थी। अंग्रेजों के समाज में रहने से गोवर्धन पंडित को वह चमत्कारिक वस्तु मिल गई थी। जब उन्हें किसी पर गहरा प्रभाव डालने की आवश्यकता होती तब वह उसका प्रयोग अग्नि प्रज्वलित करने में करते थे। इसे वह मन्त्रबल से अग्नि उत्पन्न करने की शक्ति बताते थे। वह पहले मन्त्र-शक्ति पर एक छोटा व्याख्यान दे डालते और उसको प्रत्यक्ष रूप से दिखाने के लिए फासफोरस का प्रयोग करते। हवनकुण्ड में सूखा काष्ठ करीने से सजाकर उसके मध्य भाग में शीघ्र अग्नि पकड़ने वाले सूखे पत्ते आदि इकट्ठे कर देते, और बैठकर मन्त्र पढ़ने लगते। उस समय वह जलभरी शीशी से फासफोरस का एक छोटा टुकड़ा निकालकर मुख में लेते थे। दर्शक का ध्यान हटाने के लिए वह जोर-जोर से मन्त्रों का उच्चारण करते, और इसी बीच वह उस टुकड़े को मुख से फेंक दिया करते, जो सूखे पत्तों में जाकर गिरता। वह पुनः अग्नि का आवाहन करने लगते। थोड़ी देर में फासफोरस की नमी सूख जाती और पत्ते

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जलने लगते। पण्डित जी उस अग्नि को साष्टांग दण्डवत् करते, और दर्शक उनकी जयजयकार करने लगते। भोले-भाले अनभिज्ञ उन्हें तुरन्त सिद्ध महात्मा स्वीकार करने में देर नहीं करते, तथा उनकी चमत्कारिक क्रिया का बखान करते नहीं थकते।

गोविन्द सिंह पूर्ण रूप से उनसे प्रभावित हो चुका था। उसे अपने प्रभाव की रस्सी से और कसकर बाँधने के लिए उन्होंने उपरोक्त अनुष्ठान कर डाला। वह उनके इस चमत्कार को देखकर विस्मित और ठगा-सा रह गया। पंडित जी जब साष्टांग दण्डवत् करके उठे, उसने दूर से ही उसी रीति से प्रणाम किया। उसे विश्वास हो गया कि पण्डित जी सचमुच पहुँचे हुए महात्मा हैं, जो बाहरी अग्नि की सहायता के बिना अग्नि-उत्पन्न कर लेने की शक्ति रखते हैं। अब उसको उनके द्वारा मोक्ष प्राप्त करने में कोई सन्देह नहीं रह गया।

इस समय यदि गढ़ के निवासी युद्ध में संलग्न नहीं होते, तो गोवर्धन पण्डित का यश बखान करने के लिए गोविन्द सिंह कलूँआ के प्रत्येक घर में जाता। इस चमत्कार को किसी से न कह सकने के कारण उसका पेट दुखने लगा।

गोवर्धन पण्डित ने जान लिया कि गोविन्द सिंह उनका श्वान की भाँति आज्ञापालक अनुचर हो गया है। वह कोई भेद बताने में तनिक भी आगा-पीछा नहीं करेगा। वह भी मन ही मन प्रसन्न होकर मन के लड्डू खाने लगे।

जब तक वह भोजन बनाते रहे, गोविन्द सिंह परमभक्त की भाँति उनके पास बैठा उनके मुख की ओर ताकता रहा। पण्डित जी बीच-बीच में उसको लुभाने वाली बातें कहते जाते थे।

पण्डित जी ने अपना प्रभाव आँकने के लिए पूछा—"क्यों क्षत्रिय श्रेष्ठ, तुम्हें विश्वास हुआ कि जो मैं कहता हूँ वह करके साक्षात् दिखा सकता हूँ।"

"वाह पंडित जी—आँखों देखा विश्वास न होगा?"

"भाई, तुमसे एक प्रार्थना है!"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"देवता, प्रार्थना न कहिए—आज्ञा कहिए। मैं तो आपका तुच्छ सेवक हूँ। सेवक को आज्ञा दी जाती है, उससे प्रार्थना नहीं की जाती।"

"अरे भाई, अभी तो मैं तुम्हारा बन्दी हूँ। तुमको मेरे प्राण तक लेने का अधिकार है। इसलिए तुम मुझसे श्रेष्ठ हो।"

"देवता, ऐसा कह कर मुझे नर्क में न डालिए। आप सब कुछ करने के लिए स्वतंत्र हैं।"

"क्या यहाँ से तुम मुझे जाने दोगे? कोई बाधा नहीं डालोगे?" पंडित ने भ्रूकुंचित कर पूछा।

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए वह तैयार नहीं था। वह मूढ़ की भाँति उनका मुख देखने लगा। पंडित गोवर्धन बहुत जोर से हँस पड़े।

उन्होंने हँसी रोककर कहा—"अरे, इस बात को तुम सच न समझो। मैं केवल हँसी कर रहा था।"

गोविन्द सिंह ने दृढ़ स्वर में कहा—"देवता, आप सिद्ध पुरुष हैं। आपकी गति को रोकने वाला कौन है? यदि आप इस दास को छोड़ कर जाना चाहते हों, तो अब मैं आपको नहीं जाने दूँगा। हाँ, यदि आप मुझे भी अपने साथ ले चलें तो आप चलिए आगे-आगे और मैं चलूँ आपके पीछे-पीछे।"

"मैं तो केवल हँसी कर रहा था। इस स्थान को छोड़कर कहीं जाने का मन नहीं होता। यह बड़ा रमणीक स्थान है। तपस्या करने के सभी सुपास हैं।"

"देवता, मेरे रहते आपको रंचमात्र कष्ट नहीं होगा। आप यहीं विराजिए।"

"अभी कुछ दिन रहने के लिए मैं वचनबद्ध हूँ। अभी तुम्हारे कल्याण के लिए अनुष्ठान करना है।"

"बड़ी दया होगी। मुझे शिष्य पद पर प्रतिष्ठित करने की कृपा कीजिए।"

"तुमसे स्नेह हो गया है गोविन्द!"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"महाराज····नहीं····नहीं देवता, आपकी बड़ी कृपा है।"

इस समय तक युद्ध समाप्त हो चुका था। विजय के उल्लास में झूमती पार्वती और गौरी गढ़ का निरीक्षण करने के लिए जा रही थीं। गोवर्धन पण्डित और गोविन्द सिंह की बातचीत सुन कर वे आकृष्ट हुईं और वहाँ आ गईं।

गोविन्द सिंह और पार्वती में पितामह और पोती का स्नेह था। उसके नितान्त अकेले जीवन के लिए वह एक सहारा थी, और पार्वती के लिए एक पिता की पूर्ति थी। दोनों एक दूसरे की चिन्ता करते थे, और वह अपने जीवन के अनुभव पार्वती को सुनाया करता था।

पार्वती ने गोवर्धन पण्डित की ओर संकेत करते हुए पूछा—"दादा, यह पण्डित जी····?"

गोविन्द सिंह के उत्तर देने के पहले ही गोवर्धन पण्डित बोल उठे—"मैं स्वयं अपना परिचय देता हूँ महारानी जी।"

गौरी सहसा बोल उठी—"महारानी····?"

गोवर्धन पण्डित ने जोर देते हुए कहा—"हाँ देवि, आप महारानी हैं। आपकी ललाट-रेखा बता रही है कि आप राजरानी होंगी या अभी हैं। लक्षण सब राजा की रानी के हैं।"

गोविन्द सिंह ने पुनः साष्टांग दण्डवत् करते हुए कहा—"देवता, आप त्रिकालज्ञ सिद्ध पुरुष हैं। सत्य ही इस गढ़ के अधिकारी की यह मँगेतर है।"

विजयघोष-सा करते हुए उच्च स्वर में गोवर्धन पण्डित बोले—"शास्त्र के वचन कभी मिथ्या नहीं होते। अब मेरा परिचय सुनिए। मेरा नाम गोवर्धन पण्डित है। काशी का निवासी हूँ। वर्षों हिमालय की कन्दराओं में रहकर योग साधन किया है, जिससे तीनों कालों का ज्ञान होता रहता है। मैं फिरंगी म्लेच्छों के भय से भाग कर आप के साल के जंगल में छिप बैठा अग्निहोत्र कर रहा था कि आपके सिपाही पकड़ लाये और कैद कर दिया। महारानी जी से मैं न्याय माँगता हूँ।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पार्वती अनायास कहे हुए 'महारानी' सम्बोधन से मुग्ध और ठगी-सी स्थिर खड़ी रह गई। गौरी दृष्टि जमाकर उसको देखने लगी।

गोवर्धन पण्डित ने फिर कहा—"महारानी जी, यह गरीब ब्राह्मण न्याय माँगता है।"

पार्वती फिर भी उत्तर न दे सकी।

थोड़ी देर बाद बोल उठी—"न्याय मिलेगा। करूँगा मैं न्याय का शासन है।"

"महारानी, वह कब ?"

"पिता के स्थानीय और गढ़ के स्वामी महाराज बलभद्र सिंह थापा से परामर्श करने के बाद।"

गौरी ने अनुनय-विनय भरी दृष्टि से पण्डित गोवर्धन से कहा—"महाराज, मेरा भी भविष्य बताइये।"

गोवर्धन पण्डित ने उसकी ओर स्नेह भरी दृष्टि से देखते हुए कहा—"तुम्हारे भी राजरानी होने के लक्षण हैं, किन्तु....।" कहते-कहते वह रुक गए।

पार्वती ने उत्सुकता दिखाते हुए पूछा—"किन्तु क्या पण्डित जी ? आप रुक क्यों गए कहते-कहते ?"

पण्डित गोवर्धन ने गौरी की हथेली देखते हुए कहा—"ललाट रेखा में राजरानी होने के लक्षण हैं अवश्य, किन्तु हाथ की रेखाएँ कार्य-सिद्धि में विघ्न-बाधाओं की भी सूचना देती हैं।"

पार्वती—"कैसी विघ्न-बाधाएँ पण्डित जी ? यह मेरी बाल्य-सहेली है। मुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है। जो विघ्न-बाधाएँ हों, उन्हें टालने का क्या आप उपाय नहीं कर सकते ?"

गोवर्धन—मैं अपने योगबल से इनकी विघ्न-बाधाओं को टाल सकता हूँ, परन्तु इसके लिए एक अनुष्ठान करना पड़ेगा।"

पार्वती—"तब वह कीजिए पण्डित जी। आपको पुरस्कार मिलेगा।"

गोवर्धन—"मुझे पुरस्कार की आवश्यकता नहीं है। मैं मनुष्य मात्र की सेवा करता हूँ, और यही आदेश मेरे इष्टदेव का भी है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पार्वती—"तब उसका कोई उपाय कीजिए।"

गोवर्धन—"अवश्य करूँगा। मुझे कई दिनों तक यहाँ रहना पड़ेगा, और वह भी कैदी की तरह!"

पार्वती—"कैदी नहीं, आप अतिथि होकर रहें।"

गोवर्धन—"किन्तु यह आपके अकेले वश की बात नहीं है।"

पार्वती—"यदि और अधिक नहीं तो इतना है ही कि मैं आपको अपना अतिथि बनाकर रखूँ।"

गोवर्धन—"तब आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। मैं आज से ही अनुष्ठान आरम्भ करता हूँ।"

गौरी अपनी ही उधेड़-बुन में लगी लगी। उसके कान में यही शब्द गूँज रहे थे कि तुम्हारे भी राजरानी होने के लक्षण हैं।

गोविन्द सिंह ने कहा—"देवता, हमारी गौरी अनाथ है। इसके माता-पिता बचपने में ही मर गये थे। पार्वती की माँ ने इसको पाला-पोसा है।"

गोवर्धन—"जब आपकी ये दोनों प्रिय हैं, तब मुझे सब उपाय करने पड़ेंगे।"

गोविन्द सिंह ने उनको जाने का संकेत किया।

पार्वती ने जाते-जाते कहा—"पण्डित जी, आज से अनुष्ठान आरम्भ कर दीजिए।"

उसके जाने के बाद पण्डित गोवर्धन ने कहा—"मैंने भावावेश में आश्वासन तो दे दिया, किन्तु इसमें एक बड़ी अड़चन ऐसा शुद्ध जल प्राप्त करने की है, जिसे किसी मनुष्य ने छूकर अपवित्र न किया हो।"

"क्यों देवता, हमारे झरने से क्या काम नहीं बनेगा?"

"नहीं, वह तो अशुद्ध है, क्योंकि आप सब लोग इसी से जल ग्रहण करते हैं।"

"जी हाँ, हमारे जीवन का यही एकमात्र आधार है। यदि यह झरना न हो तो हम सब प्यासे मर जायँ। यह झरना पहाड़ी फोड़कर आता है, इसलिए इसके उद्गमस्थान पर शुद्ध जल मिल सकेगा।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"हाँ, तब काम बन सकता है। इसका उद्गम कहाँ होता है ?"

"मुझे वह स्थान मालूम है। आप वहाँ से जल ले आइयेगा। लाने को तो मैं ला सकता हूँ, किन्तु मेरे लाने से वह अशुद्ध हो जायगा।"

"नहीं, नहीं मैं स्वयं लाऊँगा। आप चल कर बता दीजिए।"

"युद्ध समाप्त होने पर वहाँ आप को ले जाऊँगा। इसका उद्गम इस पहाड़ी के उत्तर में है, यहाँ से लगभग आधा कोस।"

"रास्ता क्या टेढ़ा है, और वहाँ तक पहुँचने में कोई कठिनाई है ?"

"जी हाँ, मार्ग दुरूह अवश्य है।"

"क्या हम लड़ाई होते हुए वहाँ नहीं जा सकते ?"

"जा सकते हैं। उधर फिरंगियों का कोई डर नहीं है। वहाँ तक वे पहुँच नहीं सकते।"

"तब हम अभी क्यों न चलें।"

"भोजन पा लीजिए, तब चलेंगे ?"

"हाँ शुभस्य शीघ्रम्। शुभ काम में विलम्ब नहीं करना चाहिए।"

गोवर्धन पण्डित मन ही मन प्रसन्न होते भोजन बनाने में जुट गए।

● ● ●

## : १७ :

कर्नल मावी अपने थोड़े सैनिकों के साथ देहरा में बैठा हुआ कलकत्ता से नई कुमक आने की प्रतीक्षा कर रहा था। उन दिनों रेल की व्यवस्था नहीं थी। हरकारों के द्वारा डाक भेजी जाती थी अतः उसके पहुँचने और उत्तर आने में काफी विलम्ब होता था। कलकत्ता से दिल्ली तक घोड़ों की डाक व्यवस्था थी। इस मार्ग में पड़ने वाले बड़े नगरों तथा अन्य उपयुक्त स्थानों पर सरकारी घोड़े तैनात रहते थे, और वे डाक के आदान-प्रदान का काम करते थे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जब लार्ड म्वायरा को कलूँगा में ब्रिटिश पराजय का हाल मालूम हुआ, वह पागल हो गया। उसे पहली ही मुठभेड़ में नैपाली वीरों से मुँहकी खानी पड़ी थी। उसने झल्लाकर जिलेस्पी आदि अफसरों को बुरा-भला कहा, और क्रोध से अपने होंठ चबाने लगा। इसे उसने अपनी वैयक्तिक पराजय समझी, क्योंकि नैपाल-युद्ध की समस्त योजना उसी ने बनायी थी। चौथे जार्ज का विश्वासपात्र तथा मित्र होने के कारण वह अपने ऊपर अधिक दायित्व अनुभव करता था, और उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि वह उसको क्या लिखे। उसने अपने सहकारी बारलो से कहा—( उसी के शब्दों में ) "कलूँगा एक छोटी-सी पहाड़ी चौकी है, जहाँ न रक्षा करने वाली कोई गहरी चौड़ी खाईं है और न उसकी ऊँची दीवारें हैं, फिर भी हमारे चुने हुए जवान और अफसर इतनी संख्या में महज उन मुट्ठी भर नैपाली वीरों के वैयक्तिक शौर्य से मारे गए।"

जब नई कुमक भेजने का प्रश्न सामने आया तब उसने किटकिटा कर कहा—"पत्थरों के एक ढेर को गिराने के लिए और तोपों की माँग आई है। मैंने जिलेस्पी की कमान में दो अट्ठारह पाउण्ड वाली, दस छः पाउण्ड वाली और चार छोटी तोपें भेजी थीं। इनकी सहायता से बड़े-बड़े किले ढाये जा सकते हैं, फिर भी अब हार कर नई कुमक माँगते हुए उनको शर्म नहीं आती!"

नैपालियों से युद्ध छेड़ दिया गया था, और पीछे लौटने की गुंजायश नहीं थी, इसलिए उसने इस बार कई बड़ी-बड़ी तोपें, और गढ़ विध्वंस करने वाली युद्ध-सामग्री भेजी, और लानत-मलामत से भरा हुआ पत्र भी जनमावी को लिखा।

उसने भी अपनी बचत के लिए कर्नल मावी की रिपोर्ट को उद्धृत किया और डायरेक्टरों को विश्वास दिलाया कि ब्रिटिश-सेना की यह हानि केवल जनरल जिलेस्पी की अदूरदर्शिता तथा स्वभाव के कारण हुई है। अपने उद्धत स्वभाव के सबब उसे अपने प्राण देने पड़े, किन्तु अब कलूँगा को विध्वंस करने में कोई उपाय उठा न रखा जायगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस लिखा-पढ़ी और जाने-आने में काफी समय बीत गया। इधर मिस्टर फ्रेजर दिल्ली जाकर नये सिपाहियों को भरती करने लगे। चूँकि कलूँगा की हार की प्रतिध्वनि उत्तरी भारत में गूँज रही थी, इसलिए भारतीय सैनिक पर्याप्त संख्या में नहीं आ रहे थे। वह अपनी मृत्यु निश्चय रूप से जानते थे, और इसलिए जो तैयार भी होते वे ऊँचा वेतन माँग रहे थे। फ्रेजर को कोई अधिक सहायता न मिली, और वह कुछ थोड़े सैनिक लेकर आ सका।

नैपाली वीरों को आतंकित करने के लिए एक बहुत बड़ी भीड़ की आवश्यकता थी। पराजय के पश्चात् जो भारतीय सैनिक भाग गये थे, वे धीरे-धीरे सहारनपुर में एकत्रित हो रहे थे। कर्नल मावी उनको पुनः भरती करने के प्रयत्न में लग गए तथा सबको समझा-बुझाकर उन्हें देहरा ले आये और आक्रमण की योजना बनाने लगे। इस बार वे लोग तैयारी में कोई छिद्र या कमी रहने देना नहीं चाहते थे। उनकी प्रतिष्ठा का प्रश्न बड़े गंभीर रूप से उनके सामने आ गया था, जो इस समय उनकी साम्राज्य-रक्षा का कारण भी बन गया था।

ब्रिटिश सैनिक बैठे-बैठे ऊब गए थे। वे थोड़े-थोड़े झुंड़ों में इधर-उधर पहाड़ियों का चक्कर काटा करते थे, परन्तु उन्हें कलूँगा के निकट जाने का साहस नहीं होता था। अन्यत्र वे ग्रामीणों को डराते-धमकाते और लूटते रहते थे, परन्तु इधर वे चुपचाप थे। उनके हृदय में ऐसा भय समा गया था कि गोरखा सिपाही के नाम से वे शंकालु दृष्टि से चारों ओर टोह लेने लगते, तथा भाग खड़े होते थे। यदि अकस्मात् किसी भारतीय सिपाही से उनकी भेंट हो जाती, वे उसको छोड़ते न थे, बल्कि दुम दबा कर चल देते थे। छोटे कद के किसी भी असैनिक भारतीय को वे गोरखा सिपाही ही समझते, तथा अपने बचाव के लिए भाग खड़े होते।

स्टीवेनसन के जासूस कलूँगा की भीतरी हालत जानने के लिए चारों ओर चक्कर काटा करते थे, परन्तु कोई सफलता उन्हें नहीं मिलती। पंडित गोवर्धन का कोई समाचार नहीं मिला था। स्टीवेनसन समझने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लगा था कि वह या तो नैपालियों से मारा गया, या वह स्वयं कहीं भाग गया है। उसका भी पता लगाने के लिए उसने कई जासूसों को नियुक्त किया किन्तु वे भी असफल रहे।

जासूस बराबर यह संवाद ला रहे थे कि कलूँगा का गढ़ मजबूत किया जा रहा है। पहले आक्रमण में गढ़ को कोई विशेष हानि नहीं पहुँची थी। केवल एक स्थान की दीवार टूटी थी, अब उसकी भी दृढ़ता के साथ मरम्मत कर दी गई थी। आस-पास के गाँवों से खाद्य सामग्री लायी जा रही थी। चावल की नई फसल आ गई थी, और उसे साल भर के लिए एकत्रित करना आवश्यक था। गोरखों का मुख्य खाद्य चावल था, इसलिए धान से लदी गाड़ियाँ दुरूह मार्गों से चक्कर काटती हुई कलूँगा पहुँच रही थी। सीसा और बारूद बनाने का मसाला बहुत बड़ी मिक़दार में इकट्ठा किया जा रहा था, और उसके निवासी गोलियाँ तथा बारूद बनाने में संलग्न थे। खेद का विषय केवल इतना था कि नैपाल से कोई नई कुमक नहीं आई थी, और न उसके आने की कोई सूचना ही मिली थी, यद्यपि बलभद्र सिंह बार-बार अपने चाचा अमर सिंह से सहायक सेना भेजने को लिख रहे थे। अमर सिंह अपने क्षेत्र के जनरल आक्टर लोनी की फौज से लड़ने में संलग्न थे, इस हेतु वह कोई सैनिक सहायता कलूँगा की रक्षा के निमित्त भेजने में असमर्थ थे। परन्तु नई कुमक के न आने से बलभद्र सिंह तनिक भी न घबराये, वरन् अपने सैनिकों को उत्साहित करते रहते थे। उनके विश्वास में कोई अन्तर नहीं आया था कि वे इस क्षुद्र गढ़ की सहायता से फिरंगियों की वाहिनी को पुनः-पुनः हराकर खदेड़ देंगे। प्रातःकाल रोज चाँदमारी होती थी, और प्रायः सभी सैनिकों के निशाने ठीक-ठीक लगने लगे थे। वस्तुतः उन्हें इसी शक्ति का भरोसा था, जिससे शत्रु को विचलित और पराजित किया जा सकता था। इसमें सन्देह नहीं कि इस एक महीने के अवकाश में उन्होंने अपने सैनिकों की सर्वाङ्गीण उन्नति कर ली थी, और शत्रु से पुनः लोहा लेने को प्रस्तुत थे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अक्टूबर मास समाप्ति पर आ गया था, और अभी तक कलकत्ता से भेजी गई नई सैनिक सहायता कर्नल मावी के पास देहरा और सहारनपुर नहीं पहुँच पाई थी। बलभद्र सिंह के जासूसों ने भी उनके आने की कोई सूचना उनको नहीं दी। पहली नवम्बर को उनको सूचना अवश्य मिली कि अंग्रेजों का एक बहुत बड़ा तोपखाना आ रहा है जो शायद दो-चार दिनों में देहरा पहुँच जायगा। वह उससे मुकाबला करने के लिए अपने सैनिकों में नया उत्साह भरने लगे।

इधर कर्नल मावी भी आशान्वित होकर तोपखाना पहुँचने की बाट जोहने लगे। उन्होंने यह निश्चय किया कि तोपखाना पहुँचने के साथ ही वह कलूँगा पर धावा बोल देंगे, इसलिए वे अपने सैनिकों को सब समय कूच करने के लिए तैयार रखने लगे, जिससे असन्तोष पुनः व्यापने लगा।

● ● ●

## : १८ :

गोवर्धन पंडित जब गोविन्द सिंह के साथ झरने का उद्‌गम देखने के लिए रवाना हुए तब उन्होंने निश्चय कर लिया था कि वह वहीं से गोविन्द सिंह को चकमा देकर खिसक जायेंगे तथा उसकी सूचना स्टीवेनसन को देकर पुरस्कार और शाबाशी प्राप्त करेंगे। यह उन्होंने जान लिया था कि गढ़ के निवासियों को जल केवल एक छोटे झरने से प्राप्त होता है और यदि वह बन्द कर दिया जावे तो सबके सब प्यासे मर जायेंगे। उसके अतिरिक्त जल प्राप्त करने का कोई दूसरा साधन नहीं था। कुआँ खोदने की भी कोई सम्भावना नहीं थी। इतनी ऊँची पहाड़ी से भूगर्भस्थ जलस्रोत तक पहुँचना कठिन ही नहीं, वरन् असंभव था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गोवर्धन पंडित नाना प्रकार के आकाशी महल बनाते हुए चले जा रहे थे। वह सोच रहे थे कि स्टीवेनसन इस अमोघ अस्त्र को पाकर बहुत प्रसन्न तथा सन्तुष्ट होंगे। जो कार्य उनके बारह-तेरह हजार सैनिक नहीं कर पाये थे, तथा जिसके लिए इतने बड़े-बड़े अफसरों की बलि दी, वही वह केवल दो-तीन आदमियों की सहायता से कारवाने में समर्थ होगा। कलूँगा का पतन होगा और उसके समस्त वीर प्यास से तड़प-तड़प कर मरेंगे, और उधर काशी में उनका नया महल बनेगा। क्षण भर के लिए भी उसके मन में यह विचार न आया कि अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिए वह कितना बड़ा पाप करने के उद्देश्य से जा रहा है। उसके इस जघन्य कर्म से एक महान् वीर जाति का सर्वनाश तो होगा ही, राष्ट्र और देश की भी महान् क्षति होगी। यह भी संभव था कि कलूँगा की विजय समस्त इतिहास को बदल देती—अंग्रेजों की प्रतिष्ठा चली जाती, और फिर वे देश छोड़ने के लिए बाध्य हो जाते। यह भी सम्भव था कि गोरखों के उदाहरण से भारत के अन्य भारतीय शासक कोई सम्मिलित प्रयास फिरंगियों के निकालने के लिए करते, और १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य युद्ध के पूर्व इसकी भूमिका बँध जाती। यह भी सम्भव था कि पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह फिरंगियों से दोस्ती तोड़ गोरखों के साथ मिलकर फिरंगियों से युद्ध करते, और दोनों की सम्मिलित सेना को पराजित करना उनके बल-बूते के बाहर की बात होती। विजय के साथ विजेता के कई शत्रु-भाव रखने वाले भी साथी बन जाते हैं, और विजित का साथ छोड़ने में कोई सोच-विचार नहीं करते। परन्तु गोवर्धन पण्डित को अपने निजी लाभ से मतलब था। उनके समक्ष न जाति थी, न देश था और न ही राष्ट्र का कोई दायित्व। गोवर्धन पण्डित जैसे गद्दारों की इस देश में कभी कमी नहीं रही, बल्कि यदि यह कहा जाय कि 'एक ढूँढ़ो हजार मिलते हैं' तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारत जब-जब विदेशियों से पराजित हुआ है, वह अपने शौर्य की हीनता के कारण नहीं बल्कि गोवर्धन पंडित जैसे देश-द्रोहियों के विश्वासघात से। सचमुच गोवर्धन पण्डित जैसे व्यक्ति इस पृथ्वी पर भार-स्वरूप हैं। उन्हें जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं है। अस्तु।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कलूँगा गढ़ से बाहर निकलने का एक गुप्त मार्ग भी था, जो प्राकार को नीचे से काटकर बनाया गया था, किन्तु इस समय वह चालू नहीं था। गोविन्द सिंह उस मार्ग से परिचित था। उसने उसके द्वार पर पहुँच कर कहा--"देवता आप सर्वज्ञ हैं, किन्तु कुछ ऐसे नियम होते हैं, जिनका उल्लंघन नहीं किया जा सकता, क्योंकि गुप्तता की शपथ ली जाती है।"

गोवर्धन पण्डित ताड़ गए कि किसी गुप्त मार्ग के सम्बन्ध में गोविन्द सिंह अपनी असमर्थता बता रहा है। उसे ऐसे नियमों का ज्ञान था, इसलिए उसने तुरन्त कहा--"गोविन्द सिंह, तुम मुझे आँखों पर पट्टी बाँधने के लिए कहना चाहते हो। इसमें मैं कोई बुरा नहीं मानता। राजनियमों का पालन होना ही चाहिए। तुम इस बड़े अँगोछे से मेरी आँखें बाँध दो, फिर मैं कुछ नहीं देख सकूँगा, हालाँकि मैं अपनी सूक्ष्म दृष्टि से सब देख लूँगा, किन्तु तुम्हारी शपथ-रक्षा के लिए पट्टी बँधवाना आवश्यक है।"

गोविन्द सिंह ने पट्टी बाँध दी, और कहा—"देवता, मेरी उँगली पकड़े चले आइए। रास्ता ढालू है नीचे की ओर जायगा।"

शीतल तेज समीर सनसनाता हुआ बह रहा था। गोवर्धन पण्डित ने अनुमान लगाया कि मैं सुरंग में चल रहा हूँ। उसने कहा—"गोविन्द सिंह, मैं बता सकता हूँ कि हम दोनों कहाँ चल रहे हैं।"

"देवता आप सर्वज्ञ हैं, आप से कुछ छिपा नहीं। आपकी गति सर्वत्र है।"

"मैं तुम्हारे लिए 'स्वर्गारोहण' नामक अनुष्ठान करूँगा। विश्वामित्र जी तो स्वर्ग में त्रिशंकु को सदेह न पहुँचा सके, परन्तु मैं तुम्हें पहुँचा दूँगा। स्वर्ग पहुँच कर तुम्हें अपना यह मृत्युलोक वाला शरीर छोड़कर सूक्ष्म रूप में रहना होगा—जैसे देवता रहते हैं।"

"इन आँखों से यदि स्वर्ग एक बार देख लूँ तो यह जीवन सफल हो जाय।"

"ऐसा ही होगा गोविन्द सिंह, गोवर्धन सत्यवक्ता है।"

"मुझे विश्वास है, देवता।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"जब मनुष्य की आँखें बाहर देखना बन्द कर देती हैं, तब जिनको अभ्यास होता है, उन्हें अन्तरंग दृष्टि प्राप्त होती है। मेरी आँखों पर पट्टी बँधी होने के कारण अब उनकी शक्ति अन्तर्मुखी हो गई है। मुझे अब तीनों काल स्पष्ट हो गए हैं।"

"महाराज, बताइए मेरी 'पारो' अर्थात् वह जिसे आपने प्रथम दृष्टि में ही पहचान कर महारानी सम्बोधित किया था—का भविष्य कैसा होगा।"

"गोविन्द सिंह, मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि उसका भविष्य आपदाओं से भरा हुआ है। उसकी अकाल मृत्यु भी हो सकती है, और·····।" कहते-कहते वह रुक गए!

"और क्या देवता, उस अकाल मृत्यु का निवारण हो सकता है?"

"वही तो बताने जा रहा था। हाँ, हो सकता है, एक जीव की बलि लेकर।"

"देवता, क्या मेरे प्राणों की बलि देने से वह दुर्योग हट सकता है?"

"तुम्हारी या अन्य किसी की बलि से भी काम चल सकता है।"

"बस देवता, आप ऐसा अनुष्ठान कीजिए जिससे मेरे प्राणों के बदले पारो की अकाल मृत्यु टल जाय।"

"ऐसा ही करूँगा। गौरी के लिए जो अनुष्ठान होगा, उसी सिलसिले में यह भी सम्पन्न हो जायगा।"

अब सुरंग में ऊपर की ओर चढ़ाई आरम्भ हो गई थी। गोविन्दसिंह ने सावधान करते हुए कहा—"देवता, अब यहाँ से चढ़ाई आरम्भ होती है। सावधानी से चलिएगा।"

"मैं देख रहा हूँ गोविन्दसिंह! यह सुरंग बहुत दूर तक चली गयी है।"

"आपसे क्या छिपा रह सकता है देवता? अभी लगभग आधा कोस और आगे चलना है।"

"मैं जानता हूँ। मुझे आगे बहुत हरा-भरा स्थान नजर आ रहा है।"

"सत्य है देवता, आप सब देख सकते हैं।"

"योग-दृष्टि से सब कुछ देखा जा सकता है गोविन्द सिंह।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"देवता, आपने कितने वर्ष तपस्या की है ?"

"किसी से कहना नहीं गोविन्द सिंह ! इस समय मेरी आयु सात सौ वर्षों से अधिक है। मैंने अपने चार चोले बदले हैं। जब इस पुण्यभूमि पर यवनों का आक्रमण हुआ, तब मेरे गुरुदेव मुझे लेकर हिमालय चले गये। वहीं पर मैंने सात सौ वर्ष तपस्या की। मेरे गुरु अभी जीवित हैं। उन्होंने मुझे कुछ कार्य करने के लिए आदेश देकर भेजा है। उसे पूरा कर दिया है। अब पुनः उनकी सेवा में जा रहा था कि यह बाधा पड़ गई।"

"देवता, आप तो कहते थे कि बनारस के रहने वाले हैं ?"

"वह एक बहाना था। यदि मैं सबसे अपना सत्य परिचय बता दूं तो मेरी आफत हो जाय। इसलिए सबको अपना भेद नहीं बताता, तुमको अपना अनन्य भक्त समझ कर मैंने यह भेद खोल दिया है, किन्तु किसी से कहना नहीं।"

"नहीं देवता, यह अपराध नहीं करूँगा।"

"ठीक है, मैं तुमको अनेक गुप्त बातें बताऊँगा।"

गोविन्द सिंह ने पुनः सावधान किया—"महाराज आगे सीढ़ियाँ हैं ; सम्हल कर चढ़िएगा।"

"तुम चले चलो, मैं सब देख रहा हूँ।"

"देवता, बताइए इस युद्ध का क्या परिणाम होगा ?"

"फिरंगी हारेंगे और देश छोड़ कर भाग जायेंगे।"

"और मेरी पारो राजरानी बनेगी ?"

"हाँ, मेरे अनुष्ठान करने के बाद।"

थोड़ी देर तक कोई न बोला। दोनों चुपचाप चलते रहे। गोवर्धन पंडित अपने ख्यालो पुलाव पकाने में व्यस्त हो गए।

कुछ समय बाद गोविन्द सिंह ने कहा—"अब हम सुरंग के बाहर निकल आये हैं।"

गोवर्धन पंडित ने उत्तर दिया—"हाँ, मैं देख रहा हूँ। क्या अब तुम मेरी आँखों की पट्टी खोलोगे ?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"कुछ देर बाद देवता पट्टी खोल दूँगा। आप मेरी उँगली पकड़े चले आइए। यहाँ बना हुआ मार्ग नहीं है। कहीं ऊपर चढ़ना होगा, और कहीं नीचे उतरना होगा।"

"मुझे सब ज्ञात हो रहा है। तुम चले चलो।"

वे दोनों जब एक झरने के समीप पहुँचे तब गोविन्द सिंह ने उनकी पट्टी खोलते हुए कहा—"देवता, यही हमारे झरने का उद्गम स्थान है। यह जल जो अभी इस गढ़े में गिर रहा है, वही पहाड़ियों के बीच होता हुआ पुनः हमारे कलूँगा की पहाड़ी पर गया है। यहाँ सिवाय पशु-पक्षियों के किसी मनुष्य का आवागमन नहीं होता।"

गोवर्धन पंडित उस स्थान को पहचानने का प्रयत्न करने लगे। चतुर्दिक् देखते हुए उन्होंने पूछा—"क्या बाहर-बाहर यहाँ नहीं पहुँचा जा सकता?"

"यहाँ तक पहुँचने में कई कोस का चक्कर लगाना होगा। पहले यहाँ से कुछ दूर पहाड़ियों को लाँघते हुए पूर्व दिशा में जाना होगा, फिर दक्षिण और फिर पश्चिम में जाने से समतल भूमि आयेगी।"

"देहरा से यह कितनी दूर पड़ेगा?"

"लगभग चार कोस।"

"यदि देहरा से चला जाय तो पहले किधर जाना चाहिए।"

"सीधे देहरा से यहाँ नहीं पहुँचा जायगा। देहरा से पूर्व दिशा में जाना पड़ेगा, और फिर पहाड़ की तलहटी मिलेगी। वहाँ से कई पगडंडियाँ दाहिने-बायें जाती हैं। बाईं पगडंडी से चलते जाइए, वह एक पहाड़ी पर ले जायगी, और उसे पार करने के बाद यह झरना मिलेगा।"

"आप उधर से होकर इस पार आये हैं?"

"कई बार।"

"फिरंगियों की सेना इधर नहीं आ सकती?"

"आ सकती है, किन्तु क्या पत्थरों से सिर टकराने आएगी?

"जल ले जाने के लिए तुमको मेरे साथ रोज आना पड़ेगा।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"यदि जल लाने की आवश्यकता रोज पड़ेगी तो मैं साथ जाऊँगा।"

"यहीं क्यों न किसी कन्दरा में बैठकर अनुष्ठान किया जाय।"

"अभी आप बन्दी हैं। महाराज से पूछने पर यहाँ प्रबन्ध कर दिया जायगा।"

"अब लौटना चाहिए।"

"हाँ, अब लौट चलिए।"

गोवर्धन पंडित एक ऊँचे स्थान से उतर रहे थे कि उनका पैर सहसा फिसल गया, और वह एक नीचे खड्ड में जा गिरे। गोविन्द सिंह घबराए स्वर में बोला—"देवता, ठहरिए मैं आता हूँ। कहीं चोट तो नहीं लगी?"

किन्तु पंडित जी ने कोई उत्तर नहीं दिया। जब गोवर्धन पंडित के पास वह पहुँचा, उसने देखा कि अचेत पड़े हैं। वह उन्हें होश में लाने का प्रयत्न करने लगा।

● ● ●

## : १९ :

चार नवम्बर सन् १८१४ को फिरंगियों का नया तोपखाना आ गया। कर्नल मावी की चिन्ता दूर हुई, और उन्होंने युद्ध परिषद् की बैठक उसी शाम को बुलाई। बड़ी-बड़ी अट्ठारह पाउंड का गोला फेंकने वाली बाईस तोपें थीं और उनके तोपची भी शिक्षित तथा पटु थे। कर्नल मावी ने जब गवर्नर जनरल का पत्र पढ़ा तब भय से उनका मुख विवर्ण हो गया। उसने परामर्श के लिए फ्रेजर को बुला भेजा। उसके आने पर उसने कहा—"मिस्टर फ्रेजर, गवर्नर जनरल ने हम लोगों पर सारा अपराध मढ़ दिया है।"

उसने उद्विग्न स्वर में पूछा—"क्या उनका कोई पत्र आया है?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"सरकारी रूप में उन्होंने औपचारिक बातें, परन्तु अपने निजी पत्र में बहुत कड़ी-कड़ी बातें लिखी हैं।"

"क्या देख सकता हूँ?"

"आपको देखने में कोई अड़चन नहीं, और इसीलिए बुलाया भी है, परन्तु वे बातें अपने ही तक रखिएगा।"

यह कह उन्होंने वह पत्र जेब से निकालकर पढ़ने को दिया। पत्र पढ़ने के पश्चात् फ्रेजर ने कहा—"भीरुता का अपराध उन्होंने लगाया है?"

"यही तो मुझे पीड़ित कर रहा है। कभी-कभी सोचता हूँ कि क्या हम सब भीरु हो गए हैं?"

"क्षमा कीजिएगा, यदि मैं कहूँ कि उनका आरोप किसी सीमा तक सच है।"

"तब तुम भी यही कहते हो।"

"यह सत्य है कि हम लगभग एक महीने से यहाँ बैठे रोटियाँ खा रहे हैं, और हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं।"

"आप भी उस युद्ध परिषद् की बैठक में शामिल थे, जिसमें यह निर्णय लिया गया था कि जब तक बड़ी-बड़ी तोपें न आ जायें, तब तक हम आक्रमण न करें, सिर्फ घेरा डाले पड़े रहें।"

"मैं क्या इन्कार करता हूँ या अपने को बचाने की चेष्टा करता हूँ। मैं भी अपने को उतना ही अपराधी समझता हूँ, जितने दूसरे लोग हैं। किन्तु यह सत्य है कि हम लोगों ने केवल भय के कारण ही प्रत्याक्रमण नहीं किया है।"

माबी कुछ क्षण मौन रहने के बाद बोला—"बड़ी-बड़ी तोपों के बिना यदि आक्रमण करते तब शायद पहले की सी दशा होती।"

"यह भय नहीं तो क्या है? भय कायरता का चिह्न है।"

"अब क्या करना चाहिए?"

"आपने युद्ध-परिषद् की बैठक बुलाई है, उसी में निर्णय लिया जायगा।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"किन्तु उसके पहले मैं आपका परामर्श चाहता हूँ।"

"अब युद्ध तो करना ही है, और उसका समारंभ भी शीघ्र होना चाहिए।"

"मैंने निश्चय कर लिया है कि कल प्रातःकाल हम चढ़ाई कर देंगे।"

'फिर सोचने की क्या बात है?"

"हमारे ऊपर जो भीरुता का आरोप आया है, उसका निवारण कैसे हो?"

"कलूँगा को विध्वंस करने पर वह स्वतः निवारित हो जायगा।"

"तब तो लार्ड म्वायरा का आरोप सत्य हो जायगा कि नई कुमक आने से ही हमारी विजय हुई।"

"इस सत्य को कैसे दबाया जा सकता है?"

"मेरा सुझाव है कि हमें अपना शौर्य दिखाना चाहिए।"

"वह किस प्रकार?"

"हम लोग तोपों से काम न लेकर केवल अपनी संगीनों के बल से ही कलूँगा को हस्तगत करें, और उनके सभी जीवित सैनिकों को कैद कर लें।"

"यह तो हम पहले भी कर सकते थे।"

मावो ने जोर के साथ मेज पर हाथ पटकते हुए कहा—"यही बात अभी तक नहीं सूझी थी।"

"अब लार्ड म्वायरा का कोड़ा खाकर सूझी है।" फ्रेजर ठहाका लगा कर हँस पड़े।

मावी ने कुपित होकर कहा—"अब तुम भी मेरी हँसी उड़ाने लगे।"

फ्रेजर ने अपनी हँसी रोक कर कहा—"मेरी बे-अदबी क्षमा कीजिए। बातों के प्रसंग में मुँह से निकल गया।"

"कोई बात नहीं। तुम अपनी राय बताओ?"

"मेरे विचार से यह सौदा महँगा पड़ेगा।"

"कैसे?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"पिछले युद्ध में यह भली-भाँति प्रमाणित हो गया है कि गोरखे सैनिकों का निशाना बहुत सच्चा है। जितने हमारे सैनिक मारे गये, वे सब उनकी गोलियों से आहत हुए हैं।"

"यह सच है।"

"बिना उनके गढ़ को विध्वंस किये वे उसकी आड़ से लड़ते रहेंगे।"

"यह तो निश्चय है कि गढ़ के अन्दर वे सुरक्षा के साथ लड़ सकते हैं, परन्तु साँप को मारने के लिए उसे बिल के बाहर निकाला जाता है।"

"जब गढ़ ध्वस्त हो जायेगा, तब वे बाहर निकलने के लिए मजबूर हो जायेंगे।"

"गढ़ ध्वस्त होना चाहिए हमारे वीर सैनिकों द्वारा, नहीं तो भीरुता का कलंक लगा ही रह जायगा। हमारे सैनिक भीरु कदापि नहीं हैं।"

"मैं सैनिकों को भीरु नहीं कहता, और शायद गवर्नर जनरल भी उन पर भीरुता का अपवाद नहीं लगा सकते।"

"फिर क्या हम लोग भीरु थे?"

"उनका तो यही मत मालूम होता है। उन्होंने यह गोपनीय पत्र आपको वैयक्तिक स्थिति में लिखा है, और इससे यही तात्पर्य निकलता है कि वह भीरुता का आरोप हम सब पर लगा रहे हैं।"

"इसके निवारण के लिए हमें अपनी सैनिक शक्ति से काम लेना चाहिए।"

"यह तो स्पष्ट ही है।"

"मैं पहले तोपों की सहायता लेना नहीं चाहता।"

"यदि आप यही उचित समझते हैं तो वैसा करने के लिए आप स्वतंत्र हैं। इस समय जनरल आप हैं, जो नीति आप निर्धारित करेंगे, उसी के अनुसार हम सब काम करेंगे।"

"कम से कम एक बार इस नीति से काम करना चाहिए। यदि विजय हो गई तो हम कह सकेंगे कि ..।"

"ठीक है, किन्तु कोई निश्चित निर्णय लेने के पहले युद्ध-परिषद् की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सहमति भी जान लेनी उचित होगी, क्योंकि सदस्यों पर भी यही आरोप लागू होता है।"

"आज रात को उसका भी मत जान लिया जायगा! परन्तु यह बताइए कि आप मुझसे सहमत होते हैं या नहीं।"

"मुझे कोई आपत्ति नहीं है, किन्तु इसमें हमारे सैनिक मारे जायेंगे।"

"हम इस बार हिन्दुस्तानी सिपाहियों को अगले मोर्चे पर लगायेंगे, जिससे वे ही पहले मरें।"

"परन्तु हैं तो हमारे सिपाही।"

"किन्तु अंग्रेज तो नहीं हैं। हिन्दुस्तानियों के मरने से हमारी कोई हानि नहीं होती। उनको मारने के लिए ही हम वेतन देते हैं।"

"किन्तु यह भी सोचना होगा कि हम उनकी सहायता के बिना अपने अंग्रेज सैनिकों के बल पर कोई युद्ध जीत नहीं सकते।"

"मैं कब इसे अस्वीकार करता हूँ। मेरा तात्पर्य यह है कि यदि वे बड़ी संख्या में मरते हैं, तो अंग्रेज सिपाही तो बचे रहेंगे।"

"आप यह भेद क्यों करते हैं? सिपाही-सिपाही बराबर हैं।"

"यह भेद तो सदा रहेगा। जिस दिन हम इस भेद को मिटा कर उनको अपने सदृश समझने लगेंगे, उसी दिन हम भारत खो देंगे। विजेता और विजित कभी समकक्ष नहीं रखे जा सकते।"

"इस भेद-भाव रखने के कारण जो अग्नि भीतर ही भीतर सुलग रही है, मुझे भय है कि वह निकट भविष्य में सैनिक विद्रोह का रूप धारण करेगी। संभव है कि हमारा साम्राज्य-स्वप्न भंग हो जाय।"

"आप एक स्वप्न-दशक मालूम पड़ते हैं। जब तक हम हिन्दू-मुसलिम पार्थक्य को जीवित बनाये रखने में समर्थ रहेंगे, तब तक ब्रिटिश जाति भारत पर राज्य करेगी। विजेता हमेशा विजितों की फूट पर ही फूलता-फलता है।"

"यह नीति बालू पर भीत उठाने के सदृश है। मेरा मत है कि हमें विजितों का भी सम्मान कर उन्हें साम्राज्य का भक्त बनाना चाहिए।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भेद करने की भावना विद्रोह उत्पन्न करती है, तथा सम्मान की भावना भक्ति।"

"मैं इस नीति पर विश्वास नहीं करता। मेरा मत है कि साम्राज्य की रक्षा के लिए विजितों को साधनहीन और पंगु बनाये रखना चाहिए। उनका इतना शोषण करना चाहिए कि वे निःश्व बन जायँ। साम्राज्य का निर्माण विजितों के शवों पर होता है।"

"जाने दीजिए इस निरर्थक विवाद को। मैं चाहता हूँ कि मेरे लाये हुए सैनिकों को गोरखों की बन्दूकों का निशाना आप न बनावें। मुझे विश्वास है कि मेरे सैनिक अपने प्राणों की बलि देकर साम्राज्य की रक्षा करेंगे। आप यदि उन्हें निःशस्त्र होकर भी कलूँगा पर धावा बोलने को कहेंगे तो वे कदम पीछे न हटाएँगे, परन्तु कुछ हमारे ऊपर भी उनके जीवन का दायित्व है।"

"युद्ध में यदि ऐसे-ऐसे हेय दायित्वों पर विचार किया जायगा, तो विजय सदैव संदिग्ध रहेगी। मेरी दृष्टि तुम्हारे ही लाए हुए सैनिकों पर है; क्योंकि वे मँजे हुए सिपाही हैं और युद्ध-कला में दक्ष हैं।"

"क्या आपने मुझे इसिलिए बुलाया था ?"

"इस विषय में आपसे परामर्श लेना आवश्यक था, क्योंकि वे आपका आदेश जान देकर भी पालन करेंगे।"

"आप मुझे धर्म-संकट में डाल रहे हैं। मैं इस विषय में मौन रहना चाहता हूँ।"

"किन्तु इस प्रकार काम नहीं चलेगा।"

"आप जनरल हैं, आपका आदेश सब पालन करने के लिए बाध्य हैं।"

"अच्छा, आज रात को समिति के समक्ष मैं अपनी नीति स्पष्ट करूँगा।"

"अवश्य। जो सर्वसम्मत अथवा बहुमत से निर्णय होगा, उसी के अनुसार कार्य किया जायगा। मैं अपना कोई वक्तव्य नहीं दूँगा क्योंकि पहले साम्राज्य है, फिर वैयक्तिक विचार। साम्राज्य के लिए हमें अपनी ईमानदारी ही नहीं, वरन् अपने आप को निछावर करना पड़ता है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"शाबाश। यही हमारी नीति होनी चाहिए। साम्राज्य पहले है, और उसके बाद हम। यदि साम्राज्य नष्ट हो गया, तब हमें नष्ट होने में विलम्ब नहीं लगेगा, और यदि वह अक्षुण्ण रहा तब हमारा देश, हमारी जाति और हमारी संस्कृति जीवित रहेगी। ईमानदारी, सच्चाई, वहीं बरती जाती है, जहाँ वैयक्तिक सम्बन्ध है, क्योंकि उनकी वहीं तक मान्यता है। साम्राज्य में इन गुणों को केवल ऊपरी दिखावे के लिए अपनाया जाता है, जबकि वस्तुतः उसके नीचे विश्वासघात, छल, प्रपंच आदि छिपे रहते हैं। हमारे साम्राज्य का विस्तार इसी नीति से हुआ है; और बराबर होता रहेगा। जिस दिन इस नीति में परिवर्तन घटित होगा उसी दिन से इसका विनाश आरम्भ हो जायगा।"

फ्रेंजर उनकी नीति पर वक्तृता सुनते-सुनते ऊब गया था। उसने उठते हुए कहा—"अब फिर रात्रि को भेंट होगी।" इतना कहकर वह चला गया, और कर्नल मावी आगे का कार्यक्रम विचारने लगे।

● • ●

## : २० :

सिर, हाथों और पैरों में चीथड़ों की पट्टियाँ बाँधे हुए जब गोवर्धन पंडित स्टीवेनसन के सम्मुख आकर खड़ा हुआ तो वह एकदम भौंचक की भाँति उसे देखने लगा। उसने कई क्षणों तक उसके सलाम का जवाब भी न दिया। उसको भौंचक देखकर गोवर्धन पंडित ने पुनः सलाम करने के बाद कहा—"आपने क्या मुझे पहचाना नहीं? मैं गोवर्धन पंडित हूँ।"

उसने तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए पूछा—"तुम्हारी यह दशा कैसे हुई?"

"हुजूर, हुक्म हो तो बैठकर सविस्तार वर्णन करूँ। पहाड़ों का

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चक्कर काटते-काटते थक कर चकनाचूर हो रहा हूँ। खड़े रहने की ताब बिल्कुल नहीं है।" कहता-कहता वह बैठ गया।

स्टीवेनसन कुछ नहीं बोला। चुपचाप उसकी ओर देखता रहा।

गोवर्धन पंडित को सहानुभूति मिलने की आशा थी। वह अनकानेक हवाई किले बनाता हुआ कलूँगा से आ रहा था। परन्तु उस पर उसकी संजीदगी से तुषारपात हो गया। वह उसकी करुणा जाग्रत करने के लिए बड़े-बड़े आँसू गिराता हुआ रोने लगा। उसके इस नाटक से स्टीवेनसन क्रुद्ध हो गया, और घुड़कते हुए बोला—"औरतों की तरह क्यों रो रहा है? रोना हो तो अपने घर जा कर रो। यहाँ मत अपने रूप दिखा।"

गोवर्धन पंडित के आँसू तुरन्त थम गए। वह उपालंभ देने के नाटकीय स्वर में बोला—"हुजूर, मैं अपनी जान जोखिम में डालकर ऐसा भेद जान कर आया हूँ, जिससे कलूँगा बिना किसी मेहनत तथा एक भी सिपाही मरे आपके अधीन हो जाय।"

"इन्हीं झूठे आश्वासनों से मेरा क्रोध उभर पड़ता है। तुम सब लोग नमकहराम हो! कम्पनी सरकार का नमक खाते हो, लेकिन सिवाय मनगढ़न्त बातों से दिलासा देने के और कुछ नहीं करते। वह हरामजादा मुल्ला मुझे सिपाहियों के बलबे का डर दिखा कर रुपया ऐंठना चाहता था। जैसे उसको दोजख भेज दिया है, वैसे ही तुझको भी भेजने का मैंने पक्का इरादा कर लिया है।"

"हुजूर-हुजूर, मैंने कोई ऐसी हरकत करने की गुस्ताखी नहीं की। मैंने हमेशा कम्पनी का नमक हलाल करके खाया है।"

"तुम्हारी चिकनी-चुपड़ी बातों में मैं नहीं आ सकता। मुल्ला डर दिखा कर रुपया ऐंठना चाहता था, और तुम फरेब से रुपया लेना चाहते हो। मकसद दोनों का एक ही है। अब तुम्हारी मरने की बारी है। बोल, क्या भेद जानकर आया है?"

"हुजूर, मुझे कलकत्ता से गवर्नर जनरल साहब ने आपके पास भेजा है। उनका सर्टिफिकेट मेरे पास है, मेरी वफादारी और मेरी कार्यकुश-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लता का। अगर मैं धोखा देने का आदी होता तो कभी का मेरा पत्ता कट गया होता। चाहे देर भले हो हो जाय, लेकिन जब भी जो बात बताऊँगा वह बावन तोला पाव रत्ती सही बताऊँगा।"

"बहुत बड़ी भूमिका न बाँधो, जो कहना हो जल्द कहो।"

"क्या हुजूर मेरा किस्सा शुरू से नहीं सुनेंगे ?"

"तुम लोग व्यर्थ समय नष्ट करते हो। यह अच्छी तरह समझ लो कि अगर तुमने मेरे दिल-बहलाव के लिए मनगढ़न्त बातें कहीं तो मैं तुम्हें जल्लादों के सिपुर्द करने में देर नहीं करूँगा। मैं इस बात की कोई परवा नहीं करूँगा कि तुम्हें गवर्नर जनरल साहब ने भेजा है या हिज मैजिस्टी ने।"

"हुजूर को पहले मेरी बातों पर यकीन लाना होगा—पीछे उसकी जाँच कीजिए, अगर सच निकले तो इनाम दीजिए, यदि वास्तव में इनाम पाने लायक काम हुआ हो, नहीं तो तलवार से गर्दन उड़वा दीजिए। मैं कोई एतराज नहीं करूँगा। अब तो आपकी दिल जमई हुई।"

"अच्छा कहो, क्या कहते हो ?"

"मैं यहाँ से रवाना होकर कलूँगा में प्रवेश करने का उपाय सोचने लगा। हुजूर, वहाँ बड़ा कड़ा पहरा था...."

"यह सब मत बको फिजूल की बातें। दुश्मन अपना इन्तजाम नहीं करेगा तो क्या तुम्हारे स्वागत के लिए अपना दरवाजा खोल देगा। बहुत संक्षेप में अपना हाल बयान करो।"

"अच्छा हजूर ! मैं अपनी तरकीब से कलूँगा के अन्दर पहुँच गया।"

"कैसे पहुँच गया ?"

"हुजूर आपने हुक्म दिया है कि संक्षेप में मैं हाल बयान करूँ।"

"ठीक है। अच्छा तुम कलूँगा गढ़ में अपनी किस तरकीब से घुस गया ? आगे बोलो।"

"मैंने अपने को तपस्वी ब्राह्मण घोषित किया, लेकिन बलभद्रसिंह के सामने पेश होने पर उन्होंने मुझे कैद में रखने का हुक्म दिया।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"नहीं तो क्या वह तुम्हें खुला छोड़ देता ?"

"वहाँ एक ही रात में मैंने अपना रंग जमा लिया। मेरी रखवाली करने के लिए जिस सैनिक की नियुक्ति हुई थी वह बातूनी और धर्मवीर था। इन पहाडी हिन्दुओं में श्रद्धा-भक्ति की भावना हम लोगों से कुछ अधिक होती है। वह मेरे जाल में फँस गया, फिर मैंने बातों ही बातों में जान लिया कि गढ़ के निवासियों के लिए जल की व्यवस्था केवल एक झरने से होती है, जिसका उद्गम कहीं बाहर की पहाड़ी के झरने से है।"

"क्या मतलब ?"

मतलब यह कि जो झरना कलूँगा को जल देता है, उसका उद्गम एक दूसरा झरना है। प्रकृति ने पहाड़ों के भीतर ही भीतर उस दूसरे झरने का जल कलूँगा पहुँचाने की व्यवस्था की है।"

"ठीक अब समझ गया। तुम कहना चाहते हो कि बाहर वाली पहाड़ी का झरना असली झरना है, जो पृथ्वी के भीतर होकर कलूँगा पहुँचता है, तथा उसी के जल के द्वारा कलूँगा-निवासी अपनी जल-पूर्ति करते हैं। क्या तुमने उस बाहरी झरने का पता लगा लिया है ?"

"जी हाँ। मैं उस बूढ़े गोरखे को चकमा देकर उस झरने को देख आया हूँ।"

"तब तो तुमने इनाम पाने का काम किया है। अच्छा आगे कहो।"

"जब उस झरने को मैंने देखा तो मेरे मस्तिष्क में यह विचार आया कि यदि इस झरने का जल काट कर किसी अन्य दिशा में बहा दिया जावे, तब कलूँगा के निवासियों को जल-कष्ट हो जायगा और वे आत्म-समर्पण करने को मजबूर हो जायेंगे। इस प्रकार कलूँगा, बिना किसी कठनाई के हमारे अधीन हो सकता है।"

"वास्तव में तुम्हारी बुद्धि ने कमाल दिखाया।"

"वह झरना क्या तुम हमें दिखा सकते हो ?"

"जी हाँ, मैं सब देख-सुन आया हूँ। इसके साथ एक सुरंग का भी पता लगा आया जिसका एक सिरा कलूँगा गढ़ में निकलता है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"और बाहर से कहाँ उसमें प्रवेश किया जा सकता है ?"

"जहाँ दूसरा बाहरी झरना है, उससे कुछ ही दूर उसका बाहरी दरवाजा है।"

"क्या उससे फौज जा सकती है ?"

"जी नहीं। वह इतनी कम चौड़ी है कि उसमें एक ही आदमी चल सकता है। उधर से आक्रमण नहीं किया जा सकता।"

"क्यों ?"

"इसलिए उसके बन्द करने की व्यवस्था है, और मेरे भाग आने से वह उसे शिला-खंडों से भर देंगे। इसके अतिरिक्त एक-एक सिपाही जाने से वे सबको भून सकते हैं।"

"यह तुमको अच्छी तरह मालूम है कि अगर हम झरने का जल कलूँगा में जाना बन्द कर दें तो किसी अन्य उपाय से वहाँ जल नहीं पहुँच सकता।"

"जी हाँ। यह झरना ही उन्हें जल देता है, इसके अतिरिक्त कोई दूसरा साधन जल प्राप्त करने का नहीं है।"

"तब तो हमारा काम बड़ा सुगम है।"

"जी हाँ, इसलिए मैं अर्ज करता हूँ कि बिना एक आदमी कटाए हम कलूँगा विजय कर सकते हैं।"

"यह तुम्हारी दशा कैसे हुई ? क्या कहीं लड़े-भिड़े थे ?"

"जी नहीं।" और वह हँसने लगा।

"हँसते क्यों हो, क्या बात है ?"

"जब मेरा बूढ़ा पहरेदार झरना दिखा रहा था, तब मैं वहाँ ठहर कर कुछ ऐसे चिह्न देखना चाहता था जिनके सहारे मैं बाहर-बाहर वहाँ पहुँच सकूँ। बूढ़े पहरेदार से अपना पिंड छुड़ाने के लिए जान-बूझकर एक खड्ड में गिर पड़ा। उसमें कुछ थोड़ी चोट अवश्य आई, लेकिन मेरा काम बन गया।"

"कैसे ?"

"बूढ़ा जब मुझे उठाने के लिए खड्ड में उतरा, मैं अचेत बनकर पड़ा रहा। गिरने से कुछ खरोंचें पड़ गयी थीं, जिनसे रक्त निकल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

था। बूढ़ा मुझे अचेत देखकर घबरा गया, और होश में लाने का प्रयत्न करने लगा। लगभग आधा घंटे तक मैं उसी प्रकार बना हुआ पड़ा रहा। जब देखा कि उसकी घबराहट बढ़ रही है, तब मैंने होश में आने का स्वांग भरा, और कराहते हुए बताया कि मैं अब पैदल चलने में असमर्थ हूँ। मैंने उसे सहायता लाने के लिए उपदेश दिया और वह चला गया। उसके जाने के बाद मैं उठकर खड्ड से बाहर आया, और झरने के अगल-बगल कुछ चिह्न लगाए तथा कुछ प्रमुख चिह्नों को समझने का प्रयत्न किया, और उसके बाद फिर खड्ड में जाकर लेट गया। लगभग एक घटे बाद वह मेरा पहरेदार दो साथियों को लेकर आया। वे लोग अपने साथ एक टिकठी बनाकर लाए थे, जिसमें लिटाकर ले जाना चाहते थे। मैंने उस पर चढ़कर जाने से इनकार किया और अपने को चलने योग्य बताया। फिर उनके सहारे से मैं पुनः कलूँगा चला गया।"

"तुम जब झरना देख चुके थे, तब चले आए होते। अब तक कलूँगा हमारे अधीन हो जाता। तुम दूसरी बार क्यों गये ?"

"अभी जानकारी अधूरी थी। मुझे उस सुरंग के दोनों दरवाजे देखना था, और यह भी जानना था कि क्या जल प्राप्त करने का कोई दूसरा साधन है ?"

"इसलिए तुम बीमार बनकर पड़े रहे।"

"जी हाँ, इसके अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय न था। छिपे-छिपे सब कार्रवाई करनी पड़ती, और कई अनुष्ठानों का भार लेकर प्रायः अकेले ही रहता था। पहरा मेरे ऊपर से उठा लिया गया था। मैं जासूस से उनका अतिथि बन गया, और आजादी के साथ घूमने-फिरने लगा।"

"तुम बाहर ही बाहर उस झरने तक पहुँच सकते हो ?"

"जी हाँ, मैं उधर से ही आया हूँ। यदि आप उसका निरीक्षण करना चाहें तो मैं अभी आप को ले जा सकता हूँ।"

"तब फिर चलकर मुझे वह जगह दिखाओ।"

"चलिए।" और वे दोनों घोड़े पर सवार होकर चल दिये।"

● ● ●

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## : २१ :

लगभग एक महीने की शान्ति के पश्चात् कलूँगा दुर्ग में पुनः युद्ध की हलचल मच गई। चार नवम्बर को गुप्तचरों ने फिरंगियों की नई कुमक कलकत्ता से आने की सूचना दी। बलभद्र सिंह ने उसी समय अपनी युद्ध-समिति की बैठक बुलवायी और स्वयं भी तत्काल मन्त्रणागृह में उपस्थित हो गए। सदस्यों को भी इसकी सूचना मिल गई थी, परन्तु उनमें घबराहट के कोई चिह्न नहीं देख पड़ते थे। सब उत्साह और उमंग से भरपूर थे, तथा आगामी युद्ध के लिए पूर्णरूप से तैयार थे।

सबके आ जाने पर बलभद्र सिंह ने कहा—"भाइयो, अब हमारी परीक्षा का समय आ गया है। फिरंगियों ने कलकत्ता से सहायता माँगी थी, अब वह दल-बल के साथ आ गई है। गुप्तचरों ने सूचना दी है कि इस बार कलकत्ता से बड़ी-बड़ी तोपें लायी गई हैं, और जबरदस्त तैयारी से कल या परसों आक्रमण कर देंगे।"

नाहर बहादुर ने कहा—"महाराज, हम तो इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उनकी नई कुमक आना निश्चित था। इससे कोई विशेष स्थिति उत्पन्न नहीं होती।"

बलभद्र सिंह—"आपका कहना ठीक है; परन्तु……।"

नाहर बहादुर—"परन्तु-वरन्तु कुछ नहीं महाराज, हमें युद्ध करना है। हम फिर पहले की भाँति घमासान युद्ध करेंगे, और एक बार फिर उनको भगा देंगे।"

मान बहादुर—"जैसी क्षति हमारे वीरों ने पहली लड़ाई में पहुँचायी थी, वैसी वे पुनः पहुँचावेंगे। इधर हम भी इस गढ़ में कैदी की जिन्दगी व्यतीत कर रहे हैं। बन्दूक चलाने के लिए हमारे हाथ खुजला रहे हैं। ईश्वर ने हमें वीरता दिखाने का पुनः अवसर दिया है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शेर सिंह—"महाराज, अभी तक हम एक गोली से एक ही शिकार करते थे, इस बार हमारी बन्दूकें दो-दो का शिकार एक साथ करेगी।"

बलभद्र सिंह—"यह सत्य है कि हमने अपने गढ़ को बहुत कुछ सुरक्षित कर लिया है किन्तु उनकी बड़ी-बड़ी तोपों की मार से वह कितने दिन ठहर सकेगा ?"

शेर सिंह—"गढ़ टूट जाने पर हम अपनी खुखड़ियों से लड़ेंगे। उनका जौहर तो अभी दिखाना बाकी है।"

मान बहादुर—"इस बीच हमने कई बार आज्ञा माँगी कि आप हमें गढ़ से बाहर निकल कर देहरा पर आक्रमण करने दें, परन्तु आप ने उस पर ध्यान नहीं दिया।"

बलभद्र सिंह—"युद्ध में कौशल काम देता है, हेकड़ी नहीं। अपनी रक्षा करते हुए शत्रु को मारना चाहिए। हमारी संख्या केवल तीन सौ है। इस संख्या से उनके बारह-चौदह हजार सैनिकों से आमने-सामने का युद्ध नहीं लड़ा जा सकता। गढ़ के भीतर से लड़ने पर हम रक्षित दशा में शत्रु पर वार कर सकते हैं। देखो, पिछले युद्ध में हमारी कोई उल्लेखनीय हानि नहीं हुई, शत्रु के ही सैनिक, अफसर, जनरल जिलेस्पी के साथ मारे गए।

मान बहादुर—"किन्तु महाराज, उस ब्राह्मण रूपधारी भेदिये के भाग जाने से हमारे गढ़ को अभेद्यता भंग हो गई है।"

बलभद्र सिंह—"एक विदेशी को स्थान देकर हमने भूल ही की थी, और पार्वती तथा गौरी की सिफारिश पर उसे खुला छोड़ दिया गया था। अब पछताने से क्या होगा ? सुरंग का द्वार हमने शिलाखण्डों से भर कर बन्द कर दिया है, अब उधर से आक्रमण नहीं हो सकता। यदि वे उधर से आक्रमण करेंगे तो हम उन्हें सहज ही मार लेंगे। सुरंग में केवल एक सैनिक ही चल सकता है, इसलिए वे यदि उधर से आयेंगे तो एक-एक की कतार में, जिनको मारने में कोई कठिनाई नहीं होगी।"

शेर सिंह—"उधर भी हमें पचास-साठ सैनिक भेजने चाहिए।"

बलभद्र सिंह—"वह सुरंग गढ़ के पिछले भाग में है; जो सैनिक उस

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भाग की रक्षा के लिये तैनात किये जायेंगे, वे ही उसके द्वार की रक्षा करेंगे। इसके अतिरिक्त उधर से न तोपों द्वारा आक्रमण हो सकता है, और न सेना ही आ सकती है।"

सभा की कार्यवाही जानने के लिए गौरी और पार्वती भी वहाँ आ गईं। उनको देखकर बलभद्र सिंह ने कहा—"अभी तुम्हारी ही बात हो रही थी।"

गौरी—"हाँ महाराज, हम लोगों ने सुना है। हम क्या जानती थीं कि वह ब्राह्मण कोई भेदिया है। महाराज, उसने मन्त्र द्वारा अग्नि प्रज्वलित कर दी थी, इससे हम सबको उसकी शक्ति पर विश्वास हो गया, और उसे योगी-महात्मा मान लिया। महाराज, आप हमें इस अपराध के लिए दंड दीजिए।"

बलभद्र सिंह हँसने लगे। फिर बोले—"तुम दोनों को दंड देकर क्या हम अपने दो चतुर निशाना लगाने वालियों को इस कठिन समय पर खो दें। वस्तुतः इसके दण्ड का भागी मैं हूँ।"

सब चकित होकर उनका मुख देखने लगे।

बलभद्र सिंह ने दोहराया—"हाँ, इसका वास्तविक अपराधी मैं हूँ, जो सेनापति होकर मैंने सेना के नियमों का उल्लंघन किया। सेनापति को कोई अधिकार नहीं है कि युद्ध-काल में किसी अपने स्वजन अथवा सम्बन्धी की सिफारिश पर कोई काम नियम-विरुद्ध करे। यह मेरी कमजोरी थी कि मैंने तुम्हारी बात मानकर उसको कैद से मुक्त कर दिया। मुझे या तो उसे कैद में ही रखना था, या फिर उसका पूरा हाल जान तथा निश्चित कर गढ़ के बाहर छोड़ना था। इन दोनों नियमों को मुझसे अवहेलना हुई है, इसलिए दण्ड का भागी मैं हूँ।"

नाहर बहादुर—"जो होना था, वह हो गया। साँप निकल जाने पर लीक पीटने से क्या होता है? महाराज, मेरा सुझाव है कि इन दोनों को भी सिंह द्वार की रक्षा पर तैनात किया जाय।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बलभद्र सिंह—"ठीक है। जनरल जिलेस्पी को पार्वती ने ही मारा है, और लेफ्टीनेन्ट ओ-हारा को गौरी ने। सिंहद्वार की कमान मान-बहादुर के हाथ में है। वे ही इनको कोई स्थान प्रदान करें।"

मान बहादुर—"महाराज, मेरा कोई सैनिक अपना स्थान देने को तैयार नहीं होगा। इनको महाराज के शरीर-रक्षक के रूप में ही काम करना चाहिए, जैसा पहली बार करती थीं।"

गौरी ने भी पार्वती का संकेत पाकर कहा—"महाराज पहले जैसी व्यवस्था से हम दोनों संतुष्ट रहेंगी। हमें शत्रुओं को मारना है; जहाँ से अच्छा वार हो सकेगा, वहाँ से हम आक्रमण करेंगी।"

बलभद्र सिंह—"भाइयो, व्यूह-रचना भी पहले जैसी रहेगी। सबको अपने-अपने स्थान पर तैनात कीजिए। इस बार हमारी वीर नारियाँ भी बहुत शिक्षित हो गई हैं। हमारी शक्ति पहले की अपेक्षा अधिक हो गई है।"

नाहर बहादुर—"इस बीच यदि महाराज अमर सिंह भी कुमक भेज दें तो फिरंगियों को आगे-पीछे से वह मार लगाएँ कि भागते रास्ता न मिले।

बलभद्र सिंह—"मैंने कई पत्र उनको लिखे हैं; किन्तु आश्वासनों के अतिरिक्त कोई सेना नहीं आयी। अपने अंतिम पत्र में उन्होंने लिखा है कि तीन सौ सैनिक वे शीघ्र भेज रहे हैं।"

शेर सिंह—"वे बार-बार ऐसे ही उत्तर लिख देते हैं।"

बलभद्र सिंह—"भाई, क्या किया जाय, उन्हें जनरल आक्टर लोनी घेरे हुए हैं। नैपाल पर आजकल युद्ध के बादल छाये हुए हैं। हमें इन्हीं थोड़े सैनिकों से फिरंगियों की विशाल सेना से लड़ना है। लड़ना ही नहीं, जीतना भी है। हमें विश्वास है कि इतने थोड़े सैनिकों से हम यहाँ भी फिरंगियों को परास्त करेंगे, और वहाँ भी। अब युद्ध-सामग्री इसी विशाल चौक में एकत्रित कीजिए और शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा कीजिए।"

सभा विसर्जित हुई और वे अपने-अपने कार्य-क्षेत्र की ओर अग्रसर हुए।

● ● ●

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## : २२ :

कार्तिक की सुहावनी रात की अँधियारी में पार्वती ने गौरी का हाथ पकड़ते हुए कहा—"गौरी, क्या तू जानती है कि मैं तुझे कितना प्यार करती हूँ ?"

"जानती हूँ पारो।"

"अच्छा, देखूँ तेरी छलाँग।"

"अपने प्राणों से अधिक।"

"फिर मुझसे कुछ छिपाएगी तो नहीं।"

गौरी नतशिर हो अँगूठे के नख से मिट्टी खरोंचने लगी।

"तू बोलती क्यों नहीं ?"

"पारो, क्यों पूछ कर दुख पैदा करती हो ?"

पार्वती अब विचार में पड़ गई।

"पारो, मैं तेरी शंका तेरे हृदय से निकाल दूँगी। गौरी से तुझे कभी हानि नहीं हो सकती।"

"और पारो से गौरी को भी कोई हानि नहीं हो सकती।"

"क्या मतलब ?"

"मुझे कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व जन्म में भी हम तुम बहिनें थीं, और साथ-साथ रहती थीं। एक दूसरे के प्रति बेहद आकर्षण था। क्षण भर का भी वियोग दुखदायी होता। मैं पहले मरी और यहाँ जन्मी। तू पीछे मरी और मेरी माता की सहेली की कोख से तूने जन्म लिया। हम दोनों की भाग्य-लिपि से तेरे माता-पिता अचानक मर गए, और तुझे मेरे साथ रहने के लिए उसने मजबूर कर दिया। मेरी माँ के दूध की भी बँटाई हो गई। अब हम लोग एक ही पुरुष से विवाह कर साथ रह सकती हैं। क्या तुझे कोई आपत्ति है ?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गौरी आश्चर्य से हक्का-बक्का होकर उसका मुंह देखने लगी।

"गौरी, क्या तुझे स्वीकार नहीं ?"

"पारो, तुझे क्या हो गया है ?"

"क्यों ?"

"ऐसी अनहोनी बातें करती है।"

"अनहोनी क्यों ? राजाओं में प्रथा है अनेक विवाह करने की। अनजानी से तो जानी-पहचानी कहीं अच्छी !"

"तू पागल हो गई है पारो।"

"और तू अपने को ही ठग रही है।"

"मैं अब सोऊँगी, मुझे नींद लगी है। तेरी बकवास मुझे अच्छी नहीं लगती।"

"फिर तू मुझे प्यार नहीं करती।"

"हाँ, नहीं करती। तू ऐसी बातें जो करती है।"

"मेरा और तेरा जिसमें दोनों का हित हो, वह कहती हूँ।"

"किन्तु मुझे यह मंजूर नहीं।"

"तू क्या मुझे भागीदार बनाना नहीं चाहती ?"

"मैं तेरी भागीदार बनना नहीं चाहती।"

"मैं अपने प्रसन्न मन से बनाना चाहूँ, तो भी नहीं ?"

"हाँ।"

"स्नेह की दुहाई देकर भी नहीं ?"

"हाँ।"

"फिर मुझे मरना ही पड़ेगा।" कहते-कहते उसका स्वर विचलित हो गया।

गौरी उससे लिपट गई, और बोली—"मेरी सौंगध पारो, तू ऐसा न कह। मेरा कलेजा विदीर्ण होता है।" और वह उसकी छाती में मुख छिपाकर फफकने लगी।

पार्वती भी चिपका कर उसे सान्त्वना देने लगी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दोनों बड़ी देर तक चुपचाप अपनी-अपनी समस्याएँ सुलझाने में व्यस्त रहीं।

बातों का रुख दूसरी दिशा में फेरने के उद्देश्य से पार्वती बोली—"अरी, गोवर्धन पंडित तो बड़ा दगाबाज निकला। वह सचमुच एक भेदिया था।"

गौरी का उद्वेग कुछ शान्त हो चुका था, किन्तु उच्छ्वास अभी निःशेष नहीं हुआ था। उसने केवल उत्तर दिया—"हूँ।"

"हूँ, हूँ क्या करती है? साफ-साफ बोल।"

"उसकी ओर से मेरा माथा पहले भी ठनकता था।"

"लेकिज तूने कभी कुछ कहा नहीं? यदि अपना सन्देह मुझे बता देती तो हमलोग कुछ सावधान हो जाते।"

"उस समय मैं भी कुछ अनिश्चित-सी थी। किन्तु उसकी लम्बी-चौड़ी बातों पर सहसा विश्वास नहीं जमता था।"

"मैंने गोविन्द दादा की बातों पर विश्वास किया।"

"वह बेचारा शर्म से अधमरा होकर बीमार पड़ गया है।"

"दादा की हालत खराब हो गई है। मुझे तो उनका बचना दुश्वार मालूम होता है।"

"लेकिन महाराज ने केवल इतना कहा कि तुम तो बूढ़े और अनुभवी थे। तुम्हें सोच-विचार कर काम करना था।"

"उनके लिए इतनी ही फटकार काफी थी।"

"सच पूछो तो अपराध मेरा ही था। मेरे और तेरे प्रेम से उन्होंने उसे छूट दे रखी थी।"

"किन्तु इसका परिणाम भयंकर होगा। वह दुष्ट हमारा सब भेद जान गया है।"

"दादा ने उसे सुरंग क्यों बताई? हमने उन्हें दुर्ग के भेद बताने को नहीं कहा था।"

"वह तेरे अनुष्ठान के लिए विशुद्ध जल की माँग करता था। दादा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तेरा कल्याण चाहते हैं। शुद्ध जल वहाँ के अतिरिक्त कहीं मिल न सकता था। अतः उसे वहाँ ले जाना पड़ा।"

"उसने मंत्रों के बल से अग्नि पैदा कर उन्हें मोहित कर लिया था।"

"अब मुझे उसमें भी उसकी कोई कारसाजी देख पड़ती है।"

"अवश्य होगी, नहीं तो ऐसी सिद्धता प्राप्त कर क्या कोई ऐसा दुष्कर्म कर सकता है?"

"इस बार यदि वह सामने पड़ जाय तो गोली मारते देर नहीं करूँगी।"

"अब वह भला हमारे सामने क्यों आवेगा? वह फिरंगियों की फौज में आनन्द मना रहा होगा। अभी तक हमारा सच्चा हाल फिरंगियों को मालूम नहीं था। अब उन्हें मालूम हो जायगा कि इस गढ में सैनिकों की संख्या बहुत कम है, और महाराजा अमरसिंह कोई सैनिक सहायता नहीं भेज रहे हैं।"

"हाँ, इससे उनका हौसला दूना हो जायगा।"

"मेरे मन में एक विचार उठ रहा है।"

"वह क्या?"

"हम दोनों वेश बदल कर फिरंगियों की सेना में चलें और उस नराधम पंडित को वहीं यमलोक पहुँचा देवें।"

"फिरंगियों की सेना में?"

"हाँ रे, फिरंगियों की सेना हमारा क्या बिगाड़ लेगी? जान के सिवाय कोई जोखिम नहीं। अगर कहीं पकड़ी गई, तो उनके कई जवानों को मार कर मर जाऊँगी।"

"मुझे कोई आपत्ति नहीं। तेरा साथ मैं अन्त तक दूँगी।"

"अकेले बन्दूक से काम नहीं चलेगा—इस काम के लिए पिस्तौल चाहिए, जो आसानी से कपड़ों में छिपाई जा सकती है।"

"पिस्तौल तो मिलने की नहीं, हमारी खुखुड़ी क्या पिस्तौल से कम है। जहाँ किसी दबसट में पड़ गई, वहाँ हमारी खुखुड़ी सहायता करेगी।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"एक पिस्तौल तो महाराज ने उनको दी है।"

"किसको ?"

"तेरे मँगेतर को, और किसको वैसा कामू अस्त्र दिया जायगा ?"

"उनसे तू ही माँग सकती है।"

"भला वह मुझे क्यों देंगे ?"

"तू महाराज से कह, वह दिलवा देंगे।"

"महाराज को सब हाल बताना होगा।"

"तब तो हम लोग जा चुके ? वह भला हमें फिरंगियों की फौज में क्यों जाने देंगे ?"

"हाँ तुम ठीक कहती हो। हमें तो चुपचाप बिना किसी को बताये चलना है, और इसी रात को।"

"किधर से निकलोगी ? सुरंग भी बन्द कर दी गयी है।"

"निकलने के बहुत रास्ते हैं। पहले यह बता कि क्या तू चलने को तैयार है ?"

"बिल्कुल। अभी सब लोग सो रहे हैं, और जो जाग रहे हैं, वे अपने-अपने कामों में लगे हैं। कोई नहीं जान सकेगा।"

"अच्छा, फिरंगियों की सेना में कैसे प्रवेश करेगी ?"

"सैनिक बन कर, नौकरी की खोज में।"

"वे बिना जाने-समझे क्या रख लेंगे ?"

"हम सैनिक क्यों बनें ? यह तो मानी बात है कि पंडित भेदिया है। वह लड़ाई में कोई भाग नहीं लेगा। वह दूर से तमाशा देखेगा। उसका पता लगाना मुश्किल नहीं होगा।"

"तू चलने को तैयार हो, तो पता लगाना मेरा काम है।"

"मैं तेरे साथ फाँसी की टिकठी पर भी चढ़ सकती हूँ।"

"तब इसमें सोच-विचार करने की जरूरत नहीं है। जो कुछ सोचेंगे, रास्ते में सोचेंगे। अभी यहाँ से चल देना चाहिए। हमारा पाप तो हमें ही ओढ़ना पड़ेगा।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"बात बिल्कुल सत्य है। यदि हम उसकी चिकनी-चुपड़ी बातों में न आतीं, तब गोविन्द दादा उसे कभी आँखों से ओझल न करते, और न वह महाराज से उसकी जिम्मेदारी लेते। मूल में हमी लोग हैं।"

"तुम्हारा चलने का निश्चय पक्का है?"

"हाँ, जब तक उस भेदिये का वध नहीं कर लेती, तब तक मुझे शांति नहीं मिलेगी। न मालूम क्यों बार-बार मेरा मन मुझे उत्तेजित करता है प्रतिशोध लेने के लिए।"

"तब चल दो, रात बहुत थोड़ी रही है।"

"जब हम कल के युद्ध में मौजूद नहीं मिलेंगी, तब सब उद्विग्न होकर हमारी खोज करेंगे।"

"हमारे न मिलने से सबको चिन्ता अवश्य होगी।"

"तब न चलो, और यहीं से जो कुछ बन पड़ेगा करेंगी।"

"यहाँ उस धूर्त छलिया को प्राणदण्ड देने का अवसर नहीं मिलेगा।"

"तू तो अजीब उलझनें पैदा कर रही है। चलने का विचार हो तो चल, नहीं तो....।"

"तेरा मन क्या कहता है?"

"मैं तो चलने को तैयार हूँ और उसे दंड देने के पक्ष में हूँ।"

"तो फिर चलो। यहाँ की चिन्ता न करनी चाहिए, इससे दिल कमजोर होता है।"

"मेरे मन में एक विचार आ रहा है कि वह धूर्त भेदिया फौज में नहीं; बल्कि देहरा में मिलेगा।"

"बहुत ठीक, अब हमें चल देना है। गढ़ के पीछे जाने का एक दूसरा गुप्त मार्ग है। एक दिन अपने पिता के साथ मैं उधर से गई थी। पिछली दीवार के पास जो कुआँ की तरह गढ़ा है, उसमें उतर कर जाना होता है। उसके नीचे से भी सुरंग चली गई है।"

"तू रास्ता जानती है?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"सुरंग है, इतना जानती हूँ। वह सुरंग कहीं न कहीं हमें ले जायेगी। और अगर बन्द हुई, या रास्ता न मिला तो वापस आ जाऊँगी।"

"तब फिर अपने अस्त्र-शस्त्र और वेश बदल कर चलो। पंजाबी बन कर चलने में सुविधा रहेगी, और फिरंगी सन्देह भी न करेंगे।"

पार्वती और गौरी अपने विचारों को कार्यान्वित करने के लिए प्रहृष्ट मन से प्रबन्ध करने के लिए घर चल दीं।

● ● ●

## : २३ :

कर्नल माबी ने युद्ध-समिति से अपनी बात मनवा ली। दूसरे दिन प्रातः काल आक्रमण करने का निश्चय हुआ। हरावल में भारतीय सिपाहियों के रखने की योजना थी, और उसके पीछे फिरंगियों का दस्ता था। कमान कर्नल माबी ने लेकर तोपचियों को आदेश दिया कि वे अट्ठारह पाउण्ड वाली तोपों से काम लें। दिन निकलने के पहले ही फिरंगी-सेना कलूँगा पहुँच गई। जहाँ-जहाँ मोर्चे लगाने थे, उनके लग जाने पर तोपें आग उगलने लगीं। कर्नल माबो स्वयं घोड़े पर सवार होकर सैन्य-संचालन करने लगे। जार्ज कारपेन्टर ने दक्षिणी पार्श्व को, केली ने मध्य भाग को और फास्ट ने वाम पार्श्व को सँभाला। भारतीय सैनिकों को भी तीन हिस्सों में विभक्त कर एक-एक भाग उन तीनों सेनापतियों के अधीन कर दिया गया।

सैनिकों को आदेश दिया गया था कि वे उस समय तक प्रतीक्षा करें, जब तक तोपें गोले बरसाती रहें, और जहाँ कलूँगा गढ़ की दीवार में प्रवेश करने लायक छिद्र बन जाय, वे तुरन्त आक्रमण कर गढ़ में प्रविष्ट हो जायँ। दुश्मनों को गोलियाँ चलाने का मौका न दें और संगीनों की मार से गढ़ में प्रवेश करें। जो घुसने में सफल हो जायँ, वे गढ़ की दीवार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

के बाहर वालों की सहायता के लिए रस्सी की सीढ़ियाँ लटका दें जिससे बाहर के सैनिक गढ़ के भीतर जा सकें।

युद्ध का आरम्भ इसी प्रकार हुआ। जब तक तोपें चलती रहीं, तब तक कलूँगा के वीर सैनिक दौड़-दौड़कर उनकी मरम्मत करते रहे; किन्तु वह स्थान जहाँ उन्होंने जान-बूझकर कमजोर रखा था, गोलों की मार से ध्वस्त होने लगा। ऐसे स्थानों के पीछे एक दूसरी रक्षात्मक दीवार बनाई गई थी, और बाहरी तथा अन्दरूनी दीवार के बीच बहुत बड़ी खाई बनाकर अनेक प्रकार के अवरोधों से उसे पूर दिया गया था, इस विचार से कि यदि शत्रु उधर से गढ़ में प्रवेश करें तो उसे रुकना पड़े, तथा उस अवसर में उनके निशानेबाज शत्रु सैन्य को मार कर भगा देवें।

ऐसी स्थिति बहुत शीघ्र आ गयी। दीवार का एक कोना गोलों की मार से ध्वस्त होकर गिर पड़ा। कर्नल माबी ने संकेत दिया और तीन ओर से कारपेन्टर, केली और फास्ट ने अपने-अपने सैनिकों को गढ़ पर सीधा आक्रमण करने के आदेश दे दिए। बहुत से सैनिक तो अवरोधों को हटाने में जुट गए, और सैकड़ों उस ध्वस्त भाग की ओर संगीनों को चमकाते हुए आगे बढ़े।

कलूँगा के सैनिक इसी की बाट जोह रहे थे। उनके तीन सौ जवानों ने एक साथ बन्दूकें दागीं, और फिरंगियों के तीन सौ सिपाही खेत रहे। अग्रसर होती हुई सेना वहीं थम गई। तोपें दगनी बन्द हो गई थीं। गोरखे सैनिक भी निडर होकर गोलियाँ चला रहे थे। केली अपने मध्य भाग के सैनिको को उत्साहित करने लगा। दक्षिण और वाम पार्श्व के सैनिकों पर कोई आक्रमण नहीं हुआ था, परन्तु अब उन पर भी गोलियों की वर्षा होने लगी। वे सिमट कर मध्य भाग में आ गए और गढ़ के टूटे हुए हिस्से में प्रवेश करने का प्रयत्न करने लगे। जब दूसरी बाढ़ बन्दूक की गोलियों की आई तब वे भी मरकर गिरने लगे। फिरंगियों की सेना बहुत थी, वे पुनः आगे बढ़े अपने घायलों और मर्दों को रौंदते हुए, और जब वे उसके समीप पहुँचे गहरी खाई देखकर स्तम्भित खड़े रह गए। गोरखे सैनिक उनके

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वागत के लिए बन्दूकों के साथ तैयार खड़े थे। सामने की मार से फिरंगी गिरने लगे। उनके पास गोली-बारूद नहीं था जिससे वे प्रत्युत्तर देते। उनकी संगीनें बेकार थीं। उनके और गोरखों के बीच एक चौड़ी खाई थी, जिसको पार करना इस समय असंभव था। गोरखे ताक-ताक कर शिकार खेलने लगे, और उनके शवों से खाई पटने लगी। सैनिकों को केली, कार-पेन्टर और फास्ट बार-बार प्रोत्साहित कर रहे थे, परन्तु वे मुफ्त में अपनी जान गँवाना नहीं चाहते थे। गोरखों ने देखा कि कई अंग्रेज अफसर वहाँ आ गए हैं। उन्होंने उन पर निशाना साधा और केली तथा कारपेन्टर आहत होकर गिर पड़े। इनके गिरते ही फिरंगी सेना में भगदड़ पड़ गई, और वे मैदान छोड़कर भागने लगे। कर्नल माबी घोड़े पर सवार पलायन का दृश्य देख कर किटकिटा रहा था, किन्तु वह कुछ करने में असमर्थ था। उसने उन्हें युद्ध करने के लिए ललकारा, परन्तु उसकी किसी ने नहीं सुनी। उसके देखते-देखते मैदान खाली हो गया। न अंग्रेज और न भारतीय सिपाही वहाँ ठहरे। गोरखों की यह दूसरी बार विजय हुई।

परास्त होकर कर्नल माबी ने वापस लौटने का बिगुल बजवा दिया। उसे सुनकर गोरखे गढ़ के भीतर हर्षोन्मत्त होकर नाचने लगे।

बलभद्र सिंह ने आकर उन्हें बधाई दी, और कहा—"तुम लोगों ने आज दूसरी बार फिरंगियों को भगाया है। तुम मातृभूमि की पुनः रक्षा करने में समर्थ हुए, इससे तुमने गोरखा जाति के यश में चार चाँद लगा दिए हैं।"

नाहर बहादुर ने आकर उनके चरणों को स्पर्श करते हुए कहा—"महाराज, पशुपतिनाथ की कृपा और आपके चरणों के प्रताप से ही असाध्य भी साध्य होकर रहा। जब तक आपका वरद हस्त हमारे ऊपर रहेगा, तब तक हम फिरंगियों को बराबर भगाते रहेंगे।"

बलभद्र सिंह ने उसे अपनी छाती से लगाते हुए कहा—"तुमने आज के युद्ध में बड़ा पराक्रम दिखाया है। अच्छा, बताओ तुमने कितने शत्रु मारे?"

"महाराज, गिना तो नहीं, लेकिन अनुमान से साठ-सत्तर से कम नहीं मारे होंगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संख्या सुनकर बलभद्र सिंह को पार्वती और गौरी की याद हो आई, जिन्होंने एक सौ आठ फिरंगी मुंडों की माला गूँथने की प्रतिज्ञा की थीं। चारों ओर देखते हुए उन्होंने कहा—"आज पार्वती और गौरी नहीं दिखाई दीं। किसी ने उन्हें देखा है ?"

नाहर बहादुर ने उत्तर दिया—"वे सदा युद्ध में अग्रिम पंक्ति में दिखाई पड़ती थीं। आज मैंने क्या, किसी ने उन्हें नहीं देखा। वे दोनों फिरकी-सी चारों तरफ घूम-घूमकर शत्रुओं का छेदन करती थीं। वे यदि होतीं तो किसी प्रकार छिपी न रहतीं।

"कहीं उन पर कोई आपत्ति न आई हो ?" उनके स्वर में चिन्ता की स्पष्ट छाप थी।

"गढ़ के भीतर अभी आशंका का कोई कारण उत्पन्न नहीं हुआ है।"

"जब शत्रु का कोई भेदिया घर देख लेता है, तब सब घड़ी आशंका है।"

"वह ब्राह्मण उनका कुछ अनिष्ट नहीं कर सकता।"

"वे दोनों अतीव सुन्दरी भी हैं। उन्हें वशीकरण मंत्र से वशीभूत कर सकता है।

"शस्त्रधारी के सम्मुख कोई मन्त्र काम नहीं करता। शस्त्र उनके सब मंत्रों का कवच है।"

"स्त्रियाँ दुर्बल स्वभाव की होती हैं। उन पर उसकी माया प्रभाव डाल सकती है।"

"वे वीराङ्गना हैं महाराज ! वीराङ्गना स्वभाव की नारी दुर्बल कभी हो नहीं सकती।"

"ठीक है, किन्तु वे हैं कहाँ, प्रश्न यह है ?"

"हाँ, उनकी खोज होनी चाहिए। उनके घर किसी को भेजकर दिखवाना चाहिए।"

"यदि वे घर पर न मिलें, तब सिपाहियों को आदेश दीजिए कि वे उन्हें ढूँढ कर लावें।"

बलभद्र सिंह दूसरी दिशा के सैनिकों से मिलने चले गए, और पार्वती तथा गौरी को सिपाही ढूँढने लगे।

● ●

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## : २४ :

कर्नल माबी स्वभाव से बड़ा चिड़चिड़ा और हठी था। जब उसका कोई हठ पूर्ण नहीं होता; वह जामे के बाहर हो जाता था। इतनी बड़ी तैयारी के बावजूद उसकी पुनः पराजय हुई थी, और वह इसकी कैसे लीपी-पोती करे, यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था। लार्ड म्बायरा उस पर कायरता का लांछन लगा चुके थे। उसके निवारण के लिए उसने इस बार पूरी कोशिश की थी, परन्तु वीर नेपालियों के सम्मुख उसकी एक न चलने पाई। बार-बार उसके मन में यह विचार आता था कि जब तीन सौ गोरखे एक पहाड़ी चौकी की आड़ से उसके शिक्षित, चतुर बारह-तेरह हजार जवानों को दो बार पछाड़ चुके तब लार्ड म्बायरा की उक्ति को सत्य मानने में किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। वह खोजता, दाँत किटकिटाता हुआ अपने शिविर में आ गया।

युद्ध समिति के दो प्रमुख सदस्य कारपेन्टर और केली भी जख्मी हो चुके थे। उनको बड़ी कठिनता से युद्ध-क्षेत्र से उठाकर लाया गया। उनकी हालत निराशाजनक नहीं थी। उन दोनों तथा अन्य अंग्रेज जवानों के उपचार का पूरा प्रबन्ध था, परन्तु घायल भारतीय अपने भाग्य पर छोड़ दिये गये थे।

कर्नल माबी ने संध्या समय फ्रेजर को बुला भेजा। उसके आने पर माबी ने कहा—"मिस्टर फ्रेजर, आप की सेना आज भी कोई पराक्रम नहीं दिखा सकी।"

फ्रेजर स्वयं उससे नाराज था। वह यह प्रश्न सुनकर कुढ़ गया, किन्तु कोई उत्तर उसने नहीं दिया। माबी भी मौन हो गया, और वे दोनों थोड़ी देर तक मौन बैठे रहे। फिर माबी ने कहा—"अब हमें क्या करना चाहिए?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फ्रेजर ने अपने क्रोध को दबाते हुए कहा--"आप जनरल हैं, आप हमसे ज्यादा अनुभवी और दूरदर्शी हैं; और आपको नीति निर्धारित करने का पूरा अधिकार है, तथा हमें आपकी आज्ञा पालन का। हम क्या बता सकते हैं ?"

मावी ने अनुभव किया कि फ्रेजर उससे रुष्ट है। उसने अपेक्षाकृत मृदुल स्वर में कहा--"मैं बड़ी विषम परिस्थिति में फँस गया हूँ। हमारी दो बार की पराजय और इतने अफसरों-जवानों की मृत्यु से ब्रिटिश साम्राज्य की प्रतिष्ठा को बड़ा धक्का पहुँचा है। आप भी इस साम्राज्य के एक अभिन्न अंग हैं, इसलिए आप कोई सुझाव दीजिए।" फ्रेजर का चढ़ा हुआ पारा नीचे उतरने लगा, किन्तु उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

मावी कुछ क्षण प्रतीक्षा कर पुनः बोला--"फ्रेजर, इन गोरखों को जैसे बने, कुचलना ही पड़ेगा, नहीं तो हमें बोरिया-बिस्तर बाँधकर इंग-लैंड वापस जाना पड़ेगा। ये लोग गजब के लड़ाकू हैं। निशाना भी इनका इतना सच्चा है कि उनका कोई वार खाली नहीं जाता। कार-पेन्टर और केली भी आहत हो चुके हैं। अब हमारे साथ केवल फास्ट रह गया है। ऐसी विपत्ति के समय सिवाय आप के अन्य कोई परामर्श देने वाला नहीं है। इसलिए आपसे पूछता हूँ कि अब हमें क्या करना चाहिए ?"

"मैं कोई सैनिक नहीं हूँ; युद्ध-कला से अनभिज्ञ हूँ; इसलिए उप-युक्त परामर्श देने में असमर्थ हूँ।"

"मुझे खेद है कि मैंने आप के परामर्श के अनुसार आक्रमण-योजना नहीं बनाई, परन्तु अब क्या हो सकता है, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत ?"

खेद प्रकाश करने से फ्रेजर का क्रोध बिल्कुल शान्त हो गया। वह बोला—"तीसरी बार आक्रमण कीजिए।"

"वह तो करना ही होगा, उसके बिना निस्तार नहीं, परन्तु किस प्रकार किया जाय, यह प्रश्न है ? दो बार सम्मुख आक्रमण मे हम बुरी तरह पराजित हो चुके हैं, हमारी क्षति भी बहुत हुई, इसलिए अब

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सैनिकों का दिल टूट जाने से वे आक्रमण करने के लिए राजी न होंगे। भयंकर रूप से अग्निवर्षा ये गोरखे करते हैं। भारतीय फौजी तो हिम्मत कर भी लेते हैं, लेकिन हमारे ब्रिटिश सैनिक दुम दबाते हैं। वे सत्य ही कायर हैं। मैं इस बार सबको बरखास्त कराने का प्रयत्न करूँगा।"

"आप किसको-किसको बरखास्त कराएँगे ? हम सब ऐसे ही हैं। असली लड़ाई तो लड़ते हैं ये भारतीय सीपाही ,किन्तु आप उन पर विश्वास नहीं करते, उन्हें किराये के समझ कर उपेक्षा करते हैं।"

"इस बार आप के भारतीय सिपाहियों ने ही क्या जौहर दिखाए हैं ? मैंने उनको हरावल में इसीलिए रखा था, परन्तु वे कहाँ गढ़ में घुस सके ?"

"मेरा तो अनुमान है कि उनके कारण कुछ देर तक युद्ध सधा रहा, नहीं तो हमारे ब्रिटिश सिपाही युद्ध-क्षेत्र से कभी भाग जाते। बात कटु अवश्य है, क्योंकि यह सत्य है। सत्य की अग्नी कुछ प्रखर होती है।"

माबी फिर कुपित हो गया, किन्तु क्रोध-प्रकाश करने का उपयुक्त अवसर न समझ कर वह मौन रहा।

फ्रेजर ने अपने कथन का सूत्र पकड़ते हुए कहा—"मैंने आपको परामर्श दिया था कि जब इन तोपों को आपने दिल्ली और कलकत्ता से मँगवाया है, तब इनसे काम लीजिए; किन्तु आपने उस पर ध्यान नहीं दिया। आप कायरता का अपवाद हटाने के लिए गढ़ को हस्तगत करना चाहते थे, अपने फौजियों के बल से। फिर उनको आपने केवल संगीनों से युद्ध करने की आज्ञा दे कर उन्हें गोली-बारूद भी नहीं दिया। उस गहरी खाई के सामने वे निहत्थे खड़े थे, गोरखा की बन्दूकों का निशाना बनने के लिए। अब आप ही बताइए, वे कैसे लड़ते ? भागने के सिवाय कोई चारा था क्या ?"

माबी ने धीमे स्वर में स्वीकार किया—"हाँ, यह गलती अवश्य हुई।"

फ्रेजर—"गलती आपने की, और बदनामी हुई ब्रिटिश फौज की।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कायरता के अपवाद से आप बचना चाहते थे, परन्तु वह और दृढ़ हो गया।"

मावी—"मैं अपनी गलती महसूस करता हूँ परन्तु अब क्या करना चाहिए, यह बताइए ?"—"आप आमने-सामने के युद्ध में नेपालियों को कभी पराजित नहीं कर सकते। वे हमसे ज्यादा पराक्रमी और वीर-साहसी हैं। जब तक उन्हें आड़ से लड़ने का मौका दिया जायगा, हमारी पराजय इसी प्रकार होती रहेगी। वे बहुत सच्चे निशानेबाज हैं, उनकी एक भी गोली खाली नहीं जाती।"

"यह सब सत्य है, परन्तु आगे कैसे लड़ाई चलाई जाय, या घेरा उठा लिया जावे।"

"घेरा उठा लेने से तो लुटिया ही डूब जायगी। हमें घेरा उठाने के विषय में सोचना ही नहीं है। सोचना यह है कि किस नीति से युद्ध किया जाय कि हमारी विजय हो।"

"क्या उनके किसी सामन्त या सेनानायक को रिश्वत देकर मिलाया नहीं जा सकता ?"

"भारतीय राजाओं की भाँति ये स्वार्थी और देश-विरोधी नहीं हैं। इन्हें अपनी मातृभूमि से प्यार है। उसकी रक्षा के लिए ये मृत्यु वरण करने में पीछे नहीं हटेंगे। उन्हें कोई पुरस्कार अथवा लोभ अपने पथ से विचलित नहीं कर सकता। हमारे अफसर उनकी रणकुशलता को भलीभाँति जान गए हैं, तभी उन्होंने इतनी बड़ी तैयारी इस छोटे से पहाड़ी राज्य को ध्वंस करने के लिए की। उन्होंने तीस हजार से ज्यादा सैनिक और अस्सी नब्बे तोपों से आक्रमण करने की योजना बनाई, और उसको चार भागों में विभक्त कर प्रत्येक की कमान अपने सबसे अधिक अनुभवी जेनरलों के सुपुर्द की थी। यहाँ से स्वयं लार्ड म्वायरा ने कम्पनी के डायरेक्टरों को इतनी बड़ी तैयारी का कारण पूछे जाने पर लिखा है—'अभी तक हमने हरिणों का शिकार किया है, यदि हमें उस युद्ध अर्थात् नेपालियों से युद्ध में प्रवृत्त होना है, तो हमें सिंहों से लड़ने की योजना बनानी पड़ेगी।' एक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इसी छोटे वाक्य में उन्होंने गोरखों के शौर्य को स्पष्ट रूप से भर दिया है। वर्तमान युद्ध इसकी पुष्टि भी करता है।"

"यह सत्य है ऐसे वहशी-जंगलियों से हमारा सामना अभी तक पड़ा नहीं था। अब जनाब, इसको कैसे पिंजड़े में बन्द किया जावे; यह बताइए।"

"सबसे पहले इनके गढ़ को अपनी तोपों से जमींदोज कीजिए। कलूँगा पर इतने गोले बरसाइए जिससे उसका एक-एक पत्थर बिखर जावे जब उनकी रक्षा का स्थान ध्वस्त हो जायगा, तब वे या तो आत्मसमर्पण करेंगे, या फिर लड़ते-भिड़ते मर-खप जायेंगे। उनके तीन सौ जवान हमारे बारह-तेरह हजार जवानों से कब तक मुकाबला कर सकते हैं?"

"शायद हमारी सेना को भी बहुत हानि उठानी पड़े?"

"उससे तो किसी प्रकार बचा नहीं जा सकता। हजार-दो हजार मर जायँगे किन्तु कलूँगा सर हो जायगा।"

इसी समय स्टीवेनसन ने प्रवेश किया। उसके चेहरे पर प्रसन्नता नाच रही थी। माबी उसे देखकर कुढ़ गया। उसका हास्यमंडित मुख जले पर नमक छिड़कने लगा। उसने कुपित वाणी में कहा—"तुम्हारे गुप्तचरों ने कोई कमाल नहीं दिखाया, और तुम....।" कहते-कहते आवेश से उसका स्वर रुद्ध हो गया।

स्टीवेनसन ने बिना उसके क्रोध पर ध्यान दिए कहा—"आप प्रसन्नता से हँसिए और नाचिए। कलूँगा सर हो गया।"

माबी और फ्रेजर ने अनुमान लगाया कि स्टीवेनसन विक्षिप्त हो गया है। वे दोनों उसकी ओर विस्फारित दृष्टि से देखने लगे।

स्टीवेनसन अब बिना आमंत्रित हुए एक खाली कुरसी पर बैठ गया, अब माबी को उसकी विक्षिप्तता पर कोई सन्देह नहीं रह गया। वह उसकी ओर घूरने लगा।

स्टीवेनसन सहज स्वर में बोला—"क्षमा कीजिएगा, मैं बहुत थक गया हूँ, इसलिए बिना आज्ञा के कुर्सी पर बैठ गया हूँ।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

माबी का सन्देह फिर भी न गया। फ्रेजर ने अनुमान कर लिया कि वह विक्षिप्त नहीं है।

उसने पूछा—"कहिए, क्या खबर लाए हैं, जिससे हंसने-नाचने को कहते हैं ?"

"इसलिए कि अब हम अपना एक जवान कटाए बिना सेंत-मेंत में कलूँगा सर कर सकेंगे। दुश्मन को एक-एक बूँद पानी के लिए तरसकर मरना पड़ेगा।"

"क्या मतलब ?"

"यह कि हमारा एक गुप्तचर ज्योतिषी पंडित के रूप में कलूँगा गढ़ में प्रविष्ट हो गया। उसने पता लगाया कि कलूँगा गढ़ के सैनिकों को केवल एक प्राकृतिक झरने से पीने का पानी मिलता है। उसने बड़ी चालाकी से यह भी जान लिया कि उस झरने में जल गढ़ के बाहर की पहाड़ी के झरने से आता है। उसने उस दूसरे झरने को भी देख लिया। वह फिर वहाँ कुछ दिन रहने के बाद एक गुप्त सुरंग से निकल कर मेरे पास आया और सब हाल बता कर मुझे वह दूसरा झरना दिखाने ले गया। कुछ हिन्दुस्तानी मजदूरों को मैंने बुलाया और झरने की धारा को दूसरी दिशा में मोड़ने का काम शुरू करवा दिया। काम शुरू करवा कर मैं आप लोगों को सूचना देने के लिए चला आ रहा हूँ।"

माबी प्रसन्नता से उछल पड़ा। उसने पूछा—"सच !"

"सच नहीं तो क्या झूठ बोलकर आपको बहका रहा हूँ।"

"मुझे उस स्थान पर ले जा सकते हो ?"

"निस्सन्देह। यदि आप अभी चलना चाहें तो भी चल सकता हूँ, यद्यपि थक कर चूर-चूर हो रहा हूँ।"

माबी—"आप आराम कीजिए। हमें पता बताइए ताकि हम कुछ सैनिक भेज कर उस स्थान को घिरवा दें, ताकि कोई हस्तक्षेप न कर सके।"

स्टीवेनसन—"इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। उस स्थान पर कोई नहीं पहुँच सकता।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फ्रेजर—"किन्तु तुम कहते हो कि वह तुम्हारा जासूस कलूँगा के गुप्त मार्ग से वहाँ पहुँचा था, तब उसी गुप्त मार्ग से कलूँगा के गोरखे वहाँ पहुँच सकते हैं।"

"हाँ, पहुँच सकते हैं, किन्तु वह मार्ग उन्होंने हमारे गुप्तचर के भाग आने के बाद बन्द कर दिया है। मैंने उसके साथ उस सुरंग में प्रवेश करने की चेष्टा की थी, परन्तु उसे पत्थरों से पाटा पाया है। अब वह रास्ता बन्द हो गया है।"

"किन्तु वे भीतर से खोल सकते हैं?"

"वे तब तक कोई कार्रवाई नहीं करेंगे जब तक पानी बन्द न होगा। अभी पानी का रुख मोड़ने में एक-दो दिन लग जायेंगे, तब तक हमारी फौज उधर अधिकार कर लेगी।"

"इसका मतलब यह है कि अभी तुम चलना नहीं चाहते, और न उसका ठिकाना बताना चाहते हो।"

"मेरा यह मतलब हरगिज नहीं है। मेरा सुझाव है कि हम रात के समय अपने चुनिंदा ब्रिटिश सिपाहियों के साथ जावें ताकि किसी हिन्दुस्तानी सैनिक को कानों-कान खबर न हो। अभी चलने से बात फूट सकती है, और काम में विघ्न पड़ सकता है।"

माबी ने प्रसन्न कंठ से कहा—"मैं तुम्हारा सुझाव स्वीकार करता हूँ। मिस्टर फ्रेजर, स्टीवेनसन ठीक कहता है, इसमें बड़ी गुप्तता बरतनी चाहिये?"

फ्रेजर—"मैं भी इससे सहमत हूँ।"

माबी—"उस जासूस से क्या तुमने कलूँगा के फौजियों की संख्या नहीं पूछा?"

स्टीवेनसन—"पूछा था, और उसने केवल २५०-३०० बताई है।"

माबी—"बस इतने कम जवानों ने हमारी हजारों की सेना को दो बार खदेड़ दिया!"

स्टीवेनसन—"उनका एक-एक जवान बेमिसाल है। अजी पुरुषों की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कौन कहे, उनकी स्त्रियाँ भी पुरुषों से ज्यादा लड़ने वाली हैं। शेर की अपेक्षा शेरनी अधिक खूँखार होती हैं, ऐसी किम्वदन्ती है।"

माबी—औरतें भी क्या बन्दूक चलाती हैं?"

स्टीवेनसन—"जी हाँ, और पुरुषों की अपेक्षा उनका निशाना अधिक सच्चा है। वह दो लड़कियों का, जिनका नाम उसने पार्वती और गौरी बताया था, जिक्र करता था कि वे निशानेबाजी में अद्वितीय हैं। उनमें से एक ने जेनरेल जिलेस्पी का प्राण हरण किया है।"

"अच्छा, जेनरेल जिलेस्पी को एक लड़की ने मारा था?"

"जी हाँ वह कलूँगा के कोटेश्वर मान बहादुर की मँगेतर है। लड़ाई के बाद उनके विवाह होने की बात है।"

"अब उनका विवाह दोजख में होगा। हमें उस लड़की को किसी-न-किसी तरह जिन्दा पकड़ना है।"

"जिंदा वह मुश्किल से हाथ लगेगी। वह भी तो प्यास से तड़प-तड़प-कर मरेगी।"

"इस तरह मरने से जेनरल की मौत का बदला चुक जायगा। स्टीवेन-सन, तुमने हमारी डूबती नाव को बचा लिया। मैं तुम्हारा सदा आभार मानूँगा।"

स्टीवेनसन—"आपकी कृपा चाहिए बस! मैं अपना कर्त्तव्य पालन कर रहा हूँ। मेरे ऊपर जो कलंक का टीका लगने वाला था, वह नहीं लगा। इतना ही यथेष्ट है।"

फ्रेजर—"अब आप जाकर विश्राम करें। मेरा भी धन्यवाद स्वीकार कीजिए।"

स्टीवेनसन उठ कर चला गया।

उसके जाने के बाद माबी ने कहा—"आइए, हमलोग उन सिपाहियों की सूची बनाएँ जिन्हें साथ में ले चलना है।"

और वे दोनों प्रहृष्ट मन से विश्वस्त और बहादुर ब्रिटिश जवानों की सूची बनाने लगे। ● ● ●

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## : २५ :

पार्वती और गौरी ने जिस दूसरी सुरंग में प्रवेश किया, वह पहले-वाली सुरंग से लगभग दो कोस दूर दाहिनी ओर एक गुफा में निकलती थी। वे अपने साथ मशाल और तेल की कुप्पी लायी थीं। थोड़ा बारूद और गोलियाँ तथा कुछ खाने का सामान भी एक छोटी पोटली में लेकर चली थीं। बन्दूकों को अपने कन्धे पर टाँगे और खुखड़ी कमर में खोंसे थीं। खूब सोच-विचार कर वे हर एक मौके का मुकाबला करने की तैयारी कर घर से निकली थीं।

जब वे उस दूसरी सुरंग के द्वार पर, जो एक कुएँ के रूप में था, पहुँची, तब उनमें वाद-विवाद होने लगा कि पहले कौन उसमें उतरे। पार्वती पहले उतरना चाहती थी, और गौरी उससे पहले। अन्त में दोनों ने साथ-साथ उतरने का निश्चय किया, किन्तु वे अपने साथ एक ही रस्सी लायी थीं। दूसरी रस्सी लेने के लिए उन्हें फिर घर जाना पड़ेगा, अथवा अन्यत्र उसे खोजना पड़ेगा। अतएव इस समस्या का हल एक ही रस्सी द्वारा उतरने से हुआ।

पहले पार्वती रस्सी पकड़ कर नीचे झुल गई, फिर गौरी भी उसके बाद उतरने लगी। कुआँ बहुत गहरा न था। ज्यों-ज्यों वे नीचे उतरती जाती थीं, त्यों-त्यों अन्धकार गहरा होता जाता था।

पार्वती ने बीच में पहुँच कर कहा—"गौरी, नीचे तल पर कहीं कोई विषधर न हो!"

गौरी खिलखिला कर हँस पड़ी और बोली—मैं कहती थी कि पहले मुझे उतरने दे, परन्तु तू ने मानी नहीं। चल-चल, हम लोग भी तो किसी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विषधर से कम नहीं हैं। वह अगर होगा तो हमारे आगमन से सरक कर दूर हट जायगा।"

"अरे, मैं तो तेरे साहस की परीक्षा ले रही थी।"

"परीक्षा में मैं उत्तीर्ण हुई या नहीं ?"

'अच्छी तरह उत्तीर्ण हुई। मैं तो जमीन छूने लगी। वहीं ठहरी रह; मैं मशाल जला लूँ तब तू नीचे उतरना।"

"वाह, मैं यों ही रस्सी पकड़े लटकी रहूँ, यह न होगा। ले, मैं भी आ गई।"

"गौरी के उतर आने पर पार्वती ने मशाल जलाई, और वे उसकी अन्दरूनी स्थिति देखने लगीं। कुएँ की दीवार देखने पर मालूम होता था कि यह पत्थर काट कर बनाई गई हैं। उसकी दीवारें जगह-जगह नोकीले पत्थरों से उभरी हुई थीं। कुएँ को उत्तर दिशा में एक पतली सुरंग थी जिसमें दोनों अपने शरीर को नोकीले पत्थरों से बचाती हुई चलने लगीं।"

गौरी ने कहा--"तू तो कहती थी एक बार छुटपने में पिता जी के साथ इसमें आई थी। उसकी कुछ याद है ?"

"आने की याद है, लेकिन यह कहाँ ले जायगी, नहीं जानती।"

"चलो आज मालूम हो जायगा।"

"हमारे अचानक गायब हो जाने से गढ़ में बावेला मच जायगा। सब लोग हैरान होंगे कि दोनों कहाँ गयीं ?"

"बड़े महाराज बहुत चिन्तित होंगे।"

"हमें एक पत्र लिखकर आना था—बड़ी भूल हुई।"

"तेरी जल्दी-जल्दी में सब भूल गई।"

"जैसे तुझे पत्र लिखने की याद थी।"

"अच्छा बक-बक न कर, चुप-चाप आगे चल।"

"देख गौरी मैं इस समय सेनापति हूँ, और तू आज्ञावाहक। इसलिए जो मैं कहूँ उसका पालन कर।"

"ठीक कहती हो, तुम राजरानी हो।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"अब अगर तू ज्यादा बदतमीजी करेगी, तो जानती है, मैं क्या करूंगी।"

"क्या करोगी ? जरा सुनूं तो।"

"तेरे कान पकड़ कर खींचूंगी और दो धौल लगाऊंगी।"

"इसका तुझे पूर्ण अधिकार है।"

"इस बार तुझे क्षमा करती हूँ, आगे से होशियार रहना। यदि फिर भी तूने शरारत की तो गोवर्धन पंडित पर पहले मैं गोली चलाऊंगी।"

"यह स्वीकार नहीं कर सकती। गोवर्धन पंडित मेरी गोली से मरेगा।"

"कह चुकी हूँ कि सेनापति मैं हूँ, इसलिए पहला वार मेरा होगा। मेरे बाद तू गोली चलाना।"

इसी समय पार्वती को एक ठोकर लगी। गौरी ने उसको थामते हुए कहा—"सीधी तरह क्यों नहीं चलती। कहीं गिर पड़ी तो घुटने फूट जायेंगे।"

"अरी, मैंने ध्यान नहीं दिया कि आगे का रास्ता चढ़ाव का है।"

"शायद हम तलहटी से निकल कर किसी ऊँची जगह पर चढ़ रहे हैं।"

"इसके बनाने में बड़ी कठिनाई पड़ी होगी। वर्षों लग गए होंगे।"

"हाँ, देख कितनी खूबसूरती से बनाया है। हवा के झोंके बराबर आ रहे हैं, इससे मालूम होता है कि इसका सिरा खुला हुआ है।"

"गौरी, यदि मैं कहीं मारी गई तो तू क्या करेगी ? तू घर लौट जाना और उनसे विवाह कर लेना।"

"क्या बकती है ? जब मृत्यु तुझे पकड़ेगी तो क्या मुझे छोड़ देगी ? हम दोनों साथ-साथ मरेंगी !"

"साथ-साथ मरेंगी।"

"साथ-साथ मरने को तैयार है, लेकिन सौत बनकर साथ रहने को तैयार नहीं है।"

"देखो पारो, सौत-पौत की बात मुझे नहीं सुहाती।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"लेकिन तू उन्हें प्यार करती है ?"

"नहीं।"

"मुझसे झूठ बोलती है।"

"पारो, अगर ज्यादा सताएगी तो मैं इसी दीवार से टकरा कर अपने सिर फोड़ डालूँगी।"

"रहने दे, देख ली तेरी बहादुरी।"

"नहीं मानती तो ले। फोड़ती हूँ अपना कपाल।"

पार्वती ने उसका सिर पकड़ लिया, जब वह टकराने वाली ही थी।

"अरे, तू सचमुच अपना सिर फोड़ने लगी थी। तू हँसी-हँसी में बुरा मानती है।"

"तुम मुझे जो अपवाद लगाती हो।"

"लेकिन इतना जान ले, कि अगर इस युद्ध में बची तो तुझे अपनी सौत बनाकर दम लूँगी।"

"तेरी सौत बनने के पहले, मैं मर जाऊँगी।"

"जब तुझे मरने दूँगी, तब तो मरेगी।"

"इन बातों के सिवाय क्या कोई दूसरा प्रसंग नहीं है ?"

"मुझे इन बातों में आनन्द मिलता है।"

"और मुझे दुख होता है।"

इस समय सुरंग बाईं ओर मुड़ गई थी। ऊँचाई भी उत्तरोत्तर बढ़ती जाती थी।

पार्वती ने कहा—"हमें रास्ते में किसी विषधर के दर्शन नहीं हुए।"

"सबसे बड़ा विषधर हमें बाहर मिलेगा, जिसका बध करने के लिए हम निकली हैं।"

"सचमुच गोवर्धन पंडित सबसे बड़ा विषधर है। जब उसकी याद आती है, तब क्रोध आ जाता है। छलिया ने कैसा स्वांग रचा था।"

अब शीतल पवन के झोंके आने लगे थे, जो बता रहे थे कि सुरंग का मुहाना समीप है। ज्यों-ज्यों ये आगे बढ़ रही थीं, त्यों-त्यों प्रातःकाल की सफेदी अन्धकार को भेदकर आने लगी थी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पार्वती ने प्रसन्न कंठ से कहा—"गौरी हमारी सुरंग की यात्रा समाप्त हो रही है।"

"हाँ पारो, मालूम ऐसा होता है। आगे चाँदनी है। मशाल बुझा दे।'

वे अब सुरग के सिरे पर पहुँच गई थीं। एक गुफा में वह समाप्त हुई, और जब उन्होंने उससे बाहर निकल देखा, तब अपने को एक पहाड़ी पर पाया।

दोनों बैठकर सुस्ताने लगीं।



## : २६ :

पार्वती और गौरी कन्दरा से निकल कर बाहर का प्रदेश देखने लगीं। वह उन्हें सर्वथा अनजाना तथा अनदेखा मालूम हुआ। वे नहीं जान सकीं कि पहाड़ियों का सिलसिला कितनी दूर तक चला गया है। यद्यपि वे इस समय एक उपत्यका के समीप थीं, तथापि उस पर चढ़ कर चतुर्दिक क्षेत्र की थाह लेना बहुत कठिन था। वे रातभर जागने तथा चलने के कारण थक भी गयी थीं। क्लान्ति तथा अवसाद से उनके नेत्र झँप रहे थे। जम्हाइयाँ लेते-लेते उनके जबड़े दर्द करने लगे थे। शीतल वायु के झोंके उन्हें सो जाने के लिए आमंत्रित करने लगे।

पार्वती और गौरी घूम-फिर कर पुनः उसी खोह में आ गईं, क्योंकि उससे अधिक सुरक्षित स्थान उन्हें उस पहाड़ी प्रदेश में दिखाई नहीं दिया।

पार्वती ने उस खोह के द्वार पर बैठते हुए कहा—"गौरी, अब तो नहीं चला जाता।"

गौरी ने अँगड़ाई लेते हुए उसके अनुमोदन में कहा—"हाँ, पारो, मैं भी थक कर चूर-चूर हुई जा रही हूँ। पैर उठते नहीं, मानों निगड़ पहना दिए गए हों।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"हाँ री, मेरा भी यही हाल हो रहा है।"

"ऐसी हालत में हम गोवर्धन पण्डित का पता भी नहीं लगा सकतीं।"

"पता लग जाने पर कुछ कर भी नहीं सकती, क्योंकि वह अकेला नहीं मिलेगा, उसके साथ कुछ फिरंगी सिपाही भी होंगे।"

"यदि स्वस्थ और दौड़ने-भागने योग्य हों, तो कुछ कर भी सकेंगी, नहीं तो मुफ्त में जान देना पड़ेगा।"

"तब फिर आओ, इसी खोह में सो जावें। इधर दुश्मन के आने की कोई सम्भावना नहीं है।"

"वे इस पथरीले क्षेत्र में आकर क्या अपना माथा फोड़ेंगे, या हाथ-पैर तुड़वायेंगे।"

"जहाँ तक अनुमान है, यह क्षेत्र कलूँगा के उत्तर में है, और जिस सुरंग को हमने गोवर्धन पंडित के जाने के बाद बंद कर दिया है, उससे बहुत दूर इसका मुहाना है।"

"ऐसा ही होगा, नहीं तो यह दूसरी सुरंग क्यों बनाई जाती। सम्भवतः दोनों सुरंगें प्रतिकूल दिशाओं में जाती हैं।"

"हाँ, कुछ ऐसी ही बात है। अच्छा, अब सो जाना चाहिए। खोह भीतर से साफ-सुथरी है कुछ धूल है, उसे झाड़-पोंछ साफ कर लें।"

"उसके बाद हम यहीं अपने कमरबंद बिछा कर लेट जावें, और स्वप्न में गोवर्धन पण्डित का पता लगावें।"

दोनों हँसने लगीं।

"पारो, कुछ खाएगी? मैं अपने साथ दो-तीन दिन का भोजन लाई हूँ।"

"मैंने भी वैसा किया है। दो-तीन दिन बाद हम गोवर्धन पंडित को नरकगामी कर कलूँगा लौट चलेंगी।"

"तब बड़ा मजा आएगा। अभी हमारे गायब हो जाने से वे न मालूम कौन-कौन शंकाएँ कर रहे होंगे।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"जब हम उन्हें अपना हाल बतायेंगी, तब प्रसन्न होकर हमारी प्रशंसा करेंगे। गोवर्धन पण्डित को मारना उतना सहज कार्य नहीं है, जितना हमने सोचा था।"

"करने वाले के लिए कठिनाइयाँ स्वतः हल हो जाती हैं, केवल काम करने की लगन चाहिए।"

"वह हम में है। अच्छा, बकवास में अब मन नहीं लगता। नींद आक्रमण कर रहा है।"

"तब फिर आओ सो जावें।"

उन्होंने जगह साफ की, और अस्त्र सिरहाने रखकर सोने का उपक्रम करने लगीं।

लगभग अपराह्न चार बजे गौरी की आँखें खुलीं। उसने करवट बदल कर देखा कि पार्वती अभी भी सो रही है। उसे तन-बदन की कोई सुध नहीं है। ऐंड़ा-ऐंड़ा कर वह अपना आलस्य मिटाने लगी। पार्वती को गहरी नींद में देख कर वह उसे जगाने का साहस न कर सकी। किन्तु अकेले चुपचाप बैठने में भी उनका मन न लगा। चारों ओर सन्नाटा था, इस समय पक्षियों का कलरव भी नहीं सुनाई पड़ता था, केवल पवन सन-सनाता हुआ बह रहा था। बहुत सोच-विचार के बाद उसने पार्वती को जगाना ही स्थिर किया। वह उसके पास खिसक गई, और उसका मुख निरखने लगी। उसने देखा कि उसके होंठ चल रहे हैं, किन्तु शब्द नहीं निकल रहे हैं। दूसरे क्षण उसके मुख से एक चीख निकली, और वह हड़-बड़ा कर उठ बैठी। भयाकुल दृष्टि से वह चारों ओर देखने लगी। गौरी ने उसको हिलाते हुए पुकारा—"पारो पारो, तू क्या कोई भयंकर स्वप्न देख रही थी?"

पार्वती ने इधर-उधर देखकर कहा—"वह कहाँ गया, अभी वह तल-वार से मारने दौड़ा था।"

"अरी कौन तुझे मारने दौड़ा था? क्या अब भी स्वप्न देख रही है? मेरे सिवाय यहाँ कोई नहीं है, और न कोई आएगा। तू अपने होश में है?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पार्वती ने उत्तर नहीं दिया। इधर-उधर देखने लगी। इस समय गुफा पूर्ण रूप से आलोकित थी।

गौरी ने उसको झकझोरते हुए कहा—"होश में आ। क्या मुझे नही पहचानती ?"

अब तक पार्वती स्वस्थ हो चुकी थी। उसने कहा—"मैं एक डरावना स्वप्न देख रही थी।"

"देख मेरा कलेजा अभी तक धड़क रहा है।" उसने गौरी का हाथ पकड़ कर अपने हृदयस्थल पर लगाया।

गौरी ने उसके हृदय की धड़कन अनुभव करने के बाद कहा—"सचमुच तू बहुत डर गई है। बता, क्या स्वप्न देख रही थी ?"

"मैं देख रही थी कि तू खड्ड में गिर गई, और गोवर्धन पण्डित तलवार से मेरा वध करने दौड़ा। बस इतना ही देख सकी कि तूने मुझे जगा दिया।"

"अरे स्वप्नों की माया बड़ी विचित्र होती है! ये राव को रंक और रंक को राव बनाते हैं। देख शाम होने आ गई, और हम सोते ही रहे।"

पार्वती ने खोह के प्रकाश को देखकर कहा—"हाँ, दिन तो ढलने लगा है। आज का दिन व्यर्थ सोने में ही कट गया। प्यास बड़े जोर की लगी है।"

"यहाँ से थोड़ी दूर एक झरना बह रहा है। चलो वहाँ, मुँह-हाथ धोवें, जिस काम के लिए हमने घर छोड़ा है, उसकी फिक्र करें।"

गौरी ने पार्वती को उठाया, और झरने के पास जाकर दोनों ने जल पिया। जल पीने से वे कुछ अधिक स्वस्थ हुईं।

गौरी ने कहा—"पारो, आज का दिन तो बरबाद गया। खोह का आश्रय छोड़ कर हम कहीं जा भी नहीं सकतीं। यह प्रदेश बिल्कुल अनजाना है, और घूमते-फिरते कहीं भटक गई तो जंगली जानवरों का आहार बनेंगी।"

"तूने पहले क्यों नहीं जगाया ?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"मैं जगाती तब जब मैं स्वयं जगाती। तेरे से कुछ ही पहले मैं जगी थी।"

"फिर अब क्या किया जाय ?"

"हम लोग वापस चलें तो कैसा रहेगा ?"

"तेरा मन हो तो तू चली जा, मैं नहीं जाऊँगी। मुझे तो गोवर्धन पंडित से बदला लेना है। बिना उसको मारे मैं घर नहीं जाऊँगी।"

"जब तू नहीं जायगी, तब मैं कैसे जा सकती हूँ ? मुझे भी तो उससे जलन है।"

"तब ठीक है। मेरा सुझाव है कि आज की रात इसी खोह में बिताई जाय, कल प्रातःकाल हम लोग रास्ता खोजेंगे। अभी शाम को चलने से कोई लाभ नहीं होगा।"

"इसके सिवाय और उपाय क्या है ?"

"शाम होने के पहले-पहले हमें एक काम कर लेना चाहिए।"

"वह क्या ?" आश्चर्य से वह उसका मुख देखने लगी।

"रात्रि को इधर जंगली जानवरों का फेरा हो सकता है, इसलिए खोह के मुहाने को हम पत्थरों से ऐसा बन्द कर देवें, जिसमें वे प्रवेश न कर सकें।"

"ठीक है। यह हमें अभी कर लेना चाहिए। पत्थरों के ढोंकों को इकट्ठा कर उनकी दीवार उठा दें। खोह का मुँह बहुत ऊँचा-चौड़ा नहीं है। कमर से कुछ ऊँची दीवार बना लेने से काम चल जायगा।"

"हाँ, मुझे मनुष्यों से उतना डर नहीं लगता, जितना जंगली जानवरों से। अब हमें पत्थर इकट्ठा करना चाहिए।"

"चलो। मैं तैयार हूँ। पहले यहीं से दो-दो पत्थर उठाकर ले चलो।" वे दोनों पत्थर इकट्ठा करने लगीं।

● ● ●

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## : २७ :

दूसरे दिन जब दोनों सो कर जागीं, तब पौ फट चुकी थी, और उषा सुन्दरी पूर्व दिशा में झाँकने लगी थी। प्रातकृत्य से निवृत्त होकर उन्होंने कलेवा किया, और भावी कार्यक्रम पर विचार करने लगीं।

इधर का प्राकृतिक दृश्य बड़ा मनोरम था। साल के गगनचुम्बी वृक्षों से वह मंडित था. परन्तु बीच-बीच में पथरीली बंजर जमीन भी पड़ी थी। विभिन्न प्रकार के पक्षी अपनी-अपनी बोलियाँ मुखरित कर रहे थे। शीतल वायु के झोंके नवस्फूर्ति उन्हें प्रदान करने लगे। पार्वती ने कहा—"गौरी, मैं कल के स्वप्न से बहुत डर गई थी। मेरी तो घिग्घी बँध गई थी। अभी भी जब उसकी याद आती है हृदय धड़कने लगता है।"

"स्वप्न में गोवर्धन पंडित से जब इतना डर गई है, तब यदि सचमुच उसका सामना हो जाय तो तेरी जान ही निकल जायगी।" कह कर वह हँसने लगी।

"वह स्वप्न था इसलिए डर गई थी। यदि वह सचमुच मेरे सामने पड़ जाय, तब मेरी भुजाली उसके दो टुकड़े कर डालेगी।"

"कहीं वह स्वप्न साकार न हो जाय।"

"कैसे ?"

"मैंने कई बुढ़ियाओं से सुना है कि स्वप्न भविष्य में होने वाली बातों की सूचना देते हैं।"

"मैंने सुना है कि स्वप्न साधारणतया झूठे होते हैं। सोते समय मन की जैसी अवस्था होती है, उसी के अनुसार स्वप्न बन जाते हैं।"

"पारो, हमें यहाँ से दूर जाने के पहले इस गुफा को चिह्नित कर देना चाहिए, तथा रास्ते के अन्य चिह्नों को याद रखना चाहिए ताकि हम

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संध्या होने पर यहाँ लौट सकें। रास्ता बीहड़ है, चारों ओर जंगल है, कहीं भटक गई, तो रात्रि किसी पेड़ पर बितानी पड़ेगी।"

"क्यों, क्या आज हम गोवर्धन पंडित का पता नहीं लगा लेंगी?"

"निश्चय रूप से हम नहीं कह सकतीं। पता लग भी सकता है और नहीं भी। संभव है कि हमें उसको खोज निकालने में कुछ दिन लग जायँ। इस वास्ते हमें इस गुफा का ध्यान रखना चाहिए, ताकि रात्रि यहाँ काट सकें।"

"इस प्रकार तो हमें कई दिन बीत सकते हैं। बहुत दिन हो जाने से गढ़ के लोग घबराएँगे।"

"तब फिर हमें लौट चलना चाहिए।"

"बिना गोवर्धन पंडित का वध किये मैं नहीं जा सकती, चाहे जो हो।"

"तब फिर हमें एक निश्चित योजना के अनुसार काम करना चाहिए।"

"तूने क्या कोई योजना बनाई है?"

"हाँ, मेरा मत यह है कि हमें एक-एक दिशा में खोज करनी चाहिए। यहाँ से पहले दक्षिण दिशा में चलें, क्योंकि देहरा यहाँ से उसी दिशा में पड़ेगा।"

"स्वीकार है।"

"किन्तु चौथे पहर तक ही हम उसे ढूँढ़े, बाद में हम उसी रास्ते से यहाँ लौटकर विश्राम करें। दूसरे दिन हम पश्चिम दिशा में प्रस्थान करें और तीसरे पहर तक ढूँढ़ें। असफल होने पर फिर वापस आ जावें। इसी प्रकार हम प्रतिदिन एक नई दिशा में खोज करें और रात्रि पड़ने पर यहाँ लौट आया करें। जब हम अपने गोवर्धन पंडित को समाप्त कर दें, तब इसी रास्ते में गढ़ में पुनः वापस लौट जावें।"

"तेरी योजना चतुराई-पूर्ण है। इस प्रकार हम किसी मुसीबत में नहीं पड़ेंगी। शाबाश, गौरी, मैंने इतनी दूर तक नहीं सोचा था।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"हमने जो रक्षात्मक दीवार गुफा के द्वार पर बनाई है, वही गुफा का चिह्न हुआ। हम जिस मार्ग जाएँ उसको भी पहचानें और कुछ अपनी ओर से भी चिह्न रखते जाएँ, जिससे लौटने में भटकना न पड़े।"

"तब हम आज दक्षिण दिशा में चलें।"

"हाँ, दक्षिण ही क्यों, पूर्व दिशा में भी चल सकती हैं। हमें एक-एक दिशा पकड़नी चाहिए।"

"पूर्व दिशा छोड़ देनी चाहिए, क्योंकि उधर फिरंगियों की सेना नहीं ठहरेगी। वह देहरों के आस-पास है। हमें दक्षिण दिशा ही में चलना चाहिए।"

दोनों ने उस स्थान से दक्षिण दिशा में प्रस्थान किया। दोपहर तक वे घूमती रहीं। मार्ग में किसी व्यक्ति के दर्शन नहीं हुए। निर्जनता देखकर पार्वती बोली—"यह कैसा क्षेत्र है, जहाँ कोई गाँव भी दिखाई नहीं देता?"

"इस पथरीली जगह में कौन बसने आवेगा? न यहाँ खेती हो सकती और न कुआँ ही खोदा जा सकता है।"

"इधर कोई यात्री भी फिरंगियों के भय से न आता होगा।"

"हमें अभी तक फिरंगियों को सेना के पड़ाव के कोई चिह्न नहीं दिखाई पड़े, इससे यह प्रमाणित होता है कि वे इधर नहीं हैं।"

"अब हमें अपनी गुफा को लौट चलना चाहिए। कल पश्चिम दिशा में चलेंगी।"

"ठीक है, आओ चलें।"

वे फिर उसी रास्ते से अपने लगाए हुए चिह्नों को देखती हुई लौट आई, और खा-पीकर सो गई।

तीसरे दिन उन्होंने पश्चिम दिशा की ओर प्रस्थान किया। लगभग दो कोस जाने के बाद उन्हें वायु तरंगों पर आते हुए मनुष्यों के स्वर सुनाई दिए। पश्चिमी वायु बड़े वेग से बह रही थी! उनके कपड़े उड़े जा रहे थे, पैर भी पीछे पड़ रहे थे। छोटी-छोटी कंकड़ियाँ वायु के साथ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उड़कर उन्हें पीड़ित करने लगीं। इसी बीच उन्हें फिर कई मनुष्यों के एक साथ हँसने का ठहाका सुनाई पड़ा। उनके सामने एक छोटी टेकरी थी। हँसी का स्वर उसके उस पार से आ रहा था।

गौरी ने पार्वती का हाथ पकड़ ठहरने का संकेत किया, और कहा—"पारो, यहाँ कुछ आदमी मालूम पड़ते हैं!"

"हाँ, मेरा भी यही अनुमान है कि हम फिरंगियों की सेना के समीप पहुँच गई हैं। लेकिन क्या गोवर्धन पंडित यहाँ मिलेगा? उसको इतने आदमियों के बीच कैसे ढूँढ़कर निकाला जावे। इस ओर तो हमने ध्यान ही नहीं दिया था।"

"उसका भी कोई रास्ता निकलेगा ही। इस पहाड़ी पर चढ़कर देखा जाये कि उस पार कौन है। सामने हम न पड़ें, इसलिए किसी आड़ की जगह से देखना चाहिए।"

गौरी आगे-आगे चढ़ने लगी। ऊपर पहुँचकर उसने जब उस पार दृष्टि डाली तो देखा कि फिरंगी कई टोलियों में बँटे हुए हँसी-मजाक कर रहे हैं।

वस्तुतः वे दोनों उस झरने के पास पहुँच गई थीं, जिस पर गोवर्धन पंडित की साजिश से गिरंगियों ने कब्जा कर उसके जल का बहाव दूसरी दिशा में मोड़कर कलूँगा गढ़ में जाने से रोक दिया था। गोवर्धन पंडित उसी गर्त में बैठा ऊँघ रहा था, जहाँ पहले झरने का जल गिरता था।

गौरी ने पार्वती का ध्यान उधर खींचते हुए कहा—"अरे, यहाँ तो फिरंगियों की सेना पड़ी हुई है। अब क्या करना चाहिए?"

पार्वती ध्यानपूर्वक देखने लगी, फिर बोली—"यहाँ उनका पूरा लश्कर नहीं मालूम होता, बल्कि कोई टुकड़ी है। शायद ये लोग इधर का रास्ता बन्द करने के लिए बैठावे गये हैं।"

"अब इनको पार कैसे किया जावे?"

"गौरी देख तो उस गर्त में कौन बैठा है। यह हिन्दुस्तानी है। क्या किसी यात्री को पकड़ कर तंग कर रहे हैं?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"उसकी पीठ हमारी तरफ है। धोती पहने है, इसलिए यह हिन्दुस्तानी ही है।"

"कौन है ? हमारा देशवासी नहीं मालूम देता।"

इसी समय गोवर्धन पंडित उठकर गर्त के बाहर निकले, और फिरंगी सिपाहियों की ओर जाने लगे।

पार्वती चिल्ला उठी—"अरे, यह तो गोवर्धन पंडित की तरह मालूम देता है। वह यहाँ कहाँ आ सकता है ?"

गौरी ने प्रसन्न कंठ से कहा—"शायद, भगवान ने हमारे शिकार को हमारे सम्मुख ला दिया।" उधर गोवर्धन पंडित फिरंगियों के समीप जा रहे थे, यह जानने के लिए कि स्टीवेंशन वहाँ आवेंगे या नहीं, और वह यदि न आवें तो उसको उनके पास जाने की अनुमति देवें। गोवर्धन पंडित को मालूम हो गया था कि वह नजर कैद में हैं। उनके हवाई महल ध्वंस होने लगे थे, और कभी-कभी उन्हें यह विचार सताने लगता कि शायद उनकी जान का खतरा है। वह कई बार छिपकर भागने की भी कोशिश कर चुके थे, परन्तु हर बार वे पकड़े जाते; और गालियाँ देकर उन्हे फिर गर्त में उतार देते थे। अभी वह फिरंगियों के पास पहुँचे भी न थे कि एक फिरंगी उन्हें गालियाँ देता हुआ उठा, और मारने दौड़ा। गोवर्धन पंडित पीछे हटकर गर्त को वापस आने लगे। इस समय उनका चेहरा स्पष्ट गौरी और पार्वती को दिखाई पड़ने लगा।

दोनों ने एक साथ कहा—"सचमुच यह गोवर्धन पंडित ही है।"

गौरी ने अपनी बन्दूक सम्भालते हुए कहा—"लगाती हूँ निशाना।"

पार्वती ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा—"नहीं, मैं निशाना लगाऊँगी। तू दूसरे फिरंगियों पर निशाना साध। मुझे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का मुँहमाँगा अवसर मिला है। अभी तक मैंने एक्यानवे फिरंगियों को मारा है, सत्रह मुंड मेरी माला में घटते हैं। आज उनको पूरा करने का समय आ गया है।" कहते हुए उसने बन्दूक का घोड़ा दबा दिया। गोली गोवर्धन पंडित का हृदय विदीर्ण करती हुई निकल गई। वह एक हाथ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करके गिर पड़ा, और तत्काल उसके प्राण शरीर-पिञ्जर को छोड़ कर उड़ गए। उसी के साथ उसके हवाई महल भी धराशायी हो गए।

बन्दूक की आवाज सुनकर फिरंगी सैनिक चौकन्ने हुए। इधर गौरी बोली—"पारो, गोवर्धन पंडित को चल बसे, अब इन फिरंगियों को भी लेना चाहिए। हममें से एक बन्दूक भर-भर कर देती जावे, और दूसरी बन्दूक चलावे।'

"ठीक है, अभी मुझे सत्रह फिरंगियों को मारकर अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अधूरी माला पूर्ण करनी है।"

"एक तो मुझे मारने दे। फिर मैं बन्दूक भर-भर कर देती जाऊंगी, और तुम अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर लेना। बहुत से तो हैं चाहे जितने गिन-गिन कर मारो। वे यहाँ तक शीघ्र पहुँच नहीं सकते। अगर इस टेकरी पर चढ़ने का प्रयत्न करेंगे, तब उनका मारना और सुगम हो जायगा।" कहते हुए उसने बन्दूक दाग दी, और उनमें से एक फिरंगी गिर पड़ा।

कुछ क्षणों तक फिरंगियों को मालूम न पड़ा कि कौन कहाँ से गोलियाँ दाग रहा है। जब उनके कई जवान गिर पड़े, तब उनमें खल-बली मच गई, और इधर-उधर भाग कर ओट लेने लगे, परन्तु पार्वती के निशाने से बच न सके। कुछ देर बाद उन्हें ज्ञात हुआ कि गोलियाँ सामने की टेकरी की ओर से आ रही हैं। उनके अफसर ने टेकरी पर आक्रमण करने के लिए ललकारा और जेनरेल जिलेस्पी की भाँति वह अकेला ही पहाड़ी पर चढ़ने लगा।

पार्वती ने बन्दूक चलाना बन्द करते हुए कहा—"हमें थोड़ी रुक जाना चाहिए, जिसमें कई फिरंगी यहाँ पहुँचने का साहस कर सकें।"

जब गोलियों का आना बन्द हो गया, तब फिरंगियों को टेकरी पर चढ़ने की हिम्मत हुई। उनके दस-बारह जवान एक साथ टेकरी पर कई दिशाओं से चढ़ने लगे। अब गौरी तथा पार्वती को निशाना साधना सुगम हो गया। जवान के बाद जवान धराशायी होने लगे। पार्वती प्रत्येक फिरंगी का गिरना गिन रही थी। अभी उसकी पूर्ण संख्या में दो अवशेष थे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एक-एक फिरंगी के गिरने से उन्होंने समझ लिया था कि बन्दूक चलाने वालों की संख्या बहुत अल्प है। वे साहस कर आगे बढ़ते गए, और ज्यों-ज्यों वे आगे चढ़ते त्यों-त्यों उनकी संख्या कम होती जाती। अपने जवानों को मरते देख कर कितने ही मैदान छोड़कर भागने लगे। क्षण भर में मैदान साफ हो गया। किन्तु अब भी चढ़ने वाले सिपाहियों में चार अवशेष रह गए थे। पार्वती ने कहा—"गौरी, इन दो को तू ले और मैं इन दोनों को भून देती हूँ।"

गौरी ने उन दोनों को मार गिराया। उनके शव लुढ़कते हुए टेकरी के नीचे चले आ रहे थे।

पार्वती ने कहा—"इनको और ऊपर आने दे हम लोग भुजालियों से इनका काम तमाम करेंगी।"

वे दोनों अपनी मंजिल पूरी करके ऊपर आ गए। उनके समीप आते ही वे अपने छिपने की जगह से निकलीं, और खुखुड़िया चमकाती हुई उनपर टूट पड़ीं। दूसरे क्षण वे भी कट कर दो-दो खंडों में गिर पड़े। इधर फिरंगियों के दूसरे अफसर ने उन्हें ललकारा और टेकरी के चारों ओर घेर कर आक्रमण करने का आदेश दिया। अब गौरी और पार्वती को उन्होंने देख लिया था, और अपनी बन्दूकों की गोलियों से उन्हें वेधने का यत्न करने लगे।

गौरी ने कहा—"पारो, अब हमारा काम हो गया। आओ भाग चलें। पुरानी कहावत के अनुसार—खाकर पढ़ रहो और मार कर टर रहो।"

पार्वती—"ठीक है। दौड़ में वे हमें नहीं पा सकते।"

वे दोनों भागने लगीं। जब तक फिरंगी टेकरी के ऊपर पहुँचे, वे आँखों से ओझल हो चुकी थीं। फिरंगी बिखर कर बन्दूकें छुड़ाते हुए इधर-उधर ढूँढ़ने लगे, किन्तु पहाड़ी प्रदेश में उन दोनों को दौड़ने का अभ्यास था, इसलिए पकड़ने की कौन कहे, उसकी छाया भी फिरंगियों को दिखाई न पड़ी। घन्टे भर तलाश करने के बाद जब वे थक गए तब निराश होकर वापस चले गए।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस गड़बड़ी में गौरी और पार्वती अपना रास्ता भूल गईं। वे बराबर भागती जाती थीं, परन्तु इस बार न इनको अपनी खोह मिली और न कहीं अपने बनाए हुए चिह्नों को उन्होंने देखा। फिरंगियों की बन्दूकों के दगने का शब्द वे बराबर सुन रही थीं, इसलिए कहीं ठहर कर स्वस्थ मन से ढूँढ़ भी नहीं सकती थीं। वे उत्तरोत्तर बिना दिशा का ध्यान किये भागती चली गईं।

दौड़ते-दौड़ते जब वे थक गईं और फिरंगियों की बन्दूकों का शब्द भी सुनाई न पड़ने लगा, तब वे एक आड़ की जगह में ठहर गईं।

गौरी ने कहा—"हमें अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने का अवसर तो मिला, किन्तु रास्ता भूल गई हैं। अब हमें भटकना पड़ेगा। सबसे मुश्किल बात यह है कि हम अपना भोजन भी खोह में रख आई हैं।"

पार्वती बहुत प्रसन्न थी, क्योंकि उसकी प्रतिज्ञा पूर्ण हो गई थी। उसने मुस्कराते हुए कहा—"अरी पगली, जंगली फलों की कमी नहीं है। गोवर्धन पंडित को यमलोक पहुँचा दिया और अब एक सौ आठ फिरंगियों की मुंडमाला भी पूरी कर दी है। अब यदि प्राण चले भी जायँ तो मुझे कोई दुःख नहीं है।"

"अब तो जीने की और इच्छा हो रही है।"

"क्यों नहीं होगी ? तुझे तो मेरी सौत बनना है न।"

"फिर वही अनर्गल बात ! क्या तू चाहती है कि मैं अपनी आत्म-हत्या कर लूँ ?"

"आत्महत्या करें तेरे दुश्मन और फिरंगी। तू तो राजरानी बनेगी !"

"पारो, तुम नहीं मानोगी ?"

"मान तो गई, अब क्या फिक्र है।"

"मुझसे हँसी मत किया कर।"

"मैं हँसी नहीं करती। सच कहती हूँ कि तुझे मैं अपनी सौत बनाकर दम लूँगी।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इसी समय कुछ दूर बहुत से आदमियों की पगध्वनि और बातचीत का शब्द सुनाई पड़ने लगा। उनके कान खड़े हो गए, और गौरी बोली- "ले, फिरंगियों की कोई फौजी टुकड़ी आ रही है।"

"हमी लोगों को ढूँढ़ने आ रही होगी। चलो भाग चलें।" दोनों उठकर प्रतिकूल दिशा में भागने लगीं।

● ● ●

## : २८ :

उस समय घोर आतंक तथा नैराश्य की काली छाया कलूँगा के जन-जन के मुख पर प्रस्फुटित होने लगी, जब उन्होंने देखा कि झरने का पानी सूख गया है। झरने के नीचे कुंड में जो कुछ एकत्रित जल था, वही उनके जीवन का आधार रह गया था। वे सब कुंड के चारों ओर इकट्ठे होकर अनेकानेक अटकलें लगाने लगे। कोई-कोई उसे दैवी प्रकोप समझ कर अपने-अपने इष्टदेवों को मानने लगे। उनके मन में यह शंका उत्पन्न ही-नहीं हुई कि शत्रुओं की काररवाई से झरना सूखा है। स्वयं बलभद्र सिंह इसी परिणाम पर पहुँचे कि यह दुर्घटना किसी मानवी कार्रवाई से घटित नहीं हुई। उन्होंने जल बाँटने की समुचित व्यवस्था करने तथा समस्या पर विचार के लिए परिषद की बैठक बुलवाई।

अभी तक पार्वती और गौरी के अन्तर्धान हो जाने से जनता त्रस्त थी ही, अब इस नई विपत्ति के आजाने से वे अर्धमृत से हो गए। सब भावी परिणाम की कल्पना से दुखित होने लगे। भयावह वातावरण में परिषद की बैठक आरम्भ हुई।

बलभद्र सिंह ने कहा—"भाइयों, आपने जिस शौर्य का परिचय दिया है, वह इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जायगा। अपने दो बार शत्रुओं की विशाल सेना को सफलता के साथ खदेड़ दिया है, और आशा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

है कि हम उनको उतने बार खदेड़ेंगे; जितनी बार वे आक्रमण करेंगे। परन्तु शायद दैव की कुछ और ही इच्छा है। झरने के सूख जाने से हमें जलकष्ट का सामना करना पड़ेगा, जो हमारी शक्ति से बाहर है। अब अपना भावी कार्यक्रम स्थिर करना है।

मानबहादुर ने कहा—"यह स्पष्ट है कि हम प्यासे बहुत दिन अपने शत्रु का मुकाबला यहाँ गढ़ के अन्दर बैठे रहकर नहीं कर सकते। अब हमें इस गढ़ को परित्याग कर किसी अन्य दुर्ग में आश्रय लेना पड़ेगा।"

बलभद्र सिंह—"बाहर निकलकर अन्यत्र जाने का मार्ग बन्द है। शत्रुओं की विशाल सैन्य शक्ति हमें चारों ओर घेरे हुए है। अब हमारे सामने दो ही विकल्प हैं—प्रथम यह कि शत्रुओं को मारते हुए निकलने का प्रयत्न करना, और दूसरा आत्म-समर्पण करना। आप लोग कौन सा रास्ता पकड़ने का परामर्श देते हैं?"

शेरसिंह—"हम आपके सुझाए हुए पहले मार्ग को वरण करते हैं, अर्थात् शत्रुओं को काटते हुए निकल जाने का।"

बलभद्र सिंह—"हम दो सौ हैं, और नारियों को मिलाकर तीन सौ के लगभग हो जायेंगे। हम लोग शत्रु की दाढ़ों के बीच से निकल जाने की क्षमता रखते हैं, परन्तु हमारी नारियाँ तो हमारा अनुकरण नहीं कर सकेंगी। यहाँ से वे बखूबी लड़ सकती हैं, परन्तु बर्बर फिरंगियों से सामने सामने होकर नहीं लड़ सकतीं। इसका क्या हल आप बताते हैं?"

थोड़ी देर के लिए परिषद् में सन्नाटा छा गया। सब इस कठिन समस्या का समाधान सोचने लगे।

थोड़ी देर बाद नाहर बहादुर ने कहा—"महाराज, हम लोग राजपूत क्षत्रिय हैं, और अपनी परम्परा के अनुसार हमें कार्य करना चाहिए।"

"वह क्या?

"पहले जब मुसलमान बादशाह किसी राजपूत के किले को घेर लेते जब तक साधन रहते वे युद्ध करते थे; और जब परिस्थिति नियंत्रण के बाहर हो जाती तब उनकी वीराङ्गनाएँ जौहर व्रत का अनुष्ठान करतीं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तथा अपने को अग्नि के समर्पण कर देतीं। उसी परम्परा का यहाँ भी अनुसरण होना चाहिए।"

"अर्थात् हम भी केशरिया पहन कर युद्ध-क्षेत्र में जावें, और हमारी नारियाँ जौहर व्रत के अनुसार अपने को जला देवें।"

"हाँ, महाराज। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय नहीं है।"

बलभद्र सिंह विचारमग्न हो गए।

थोड़ी देर बाद कहा—"सत्य ही इसके अतिरिक्त और कोई उपाय अपने मान-सम्मान को अक्षुण्ण बनाए रखने का नहीं है। हम लोग मरने के लिए ही जन्म लेते हैं, और देर-अबेर अवश्य मरेंगे। सम्मान सहित मरना कलंकित जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा कहीं श्रेयस्कर हैं, परन्तु स्त्रियाँ क्या इस मार्ग का अवलम्बन करेंगी?"

"क्यों नहीं? क्या वे राजपूत वीराङ्गनाएँ नहीं हैं? जिस दूध से हमारा पालन-पोषण हुआ है उसी से उनका हुआ है। यदि हम शत्रु से लड़ते-लड़ते अपने प्राण विसर्जन कर सकते हैं, वे क्यों नहीं अपनी आहुति अग्निचिता पर दे सकती हैं? उनके लिए तो क्षण भर की पीड़ा है, और हमारा भविष्य अन्धकारपूर्ण और अनिश्चित है। मेरा अनुमान है कि वे सहर्ष अपने सम्मान की रक्षा के लिए अग्निकुण्ड में आश्रय लेना स्वीकार करेंगी।"

शेरसिंह—"मेरा सुझाव है कि जब तक हमारे पास जल है, तब तक हम सब शत्रुओं से बराबर लड़ते रहें। जल का अभाव हो जाने पर भी उस समय तक लड़ें, जब तक प्यासा रहने की हममें शक्ति है। जौहर व्रत अन्तिम अवस्था में ही होना चाहिए।"

बलभद्रसिंह—"हम इस प्रस्ताव को स्वीकार करें?" और वह एकत्रित नर-नारियों का मत जानने के लिए उनकी ओर देखने लगे।

नारियों ने एक स्वर में उत्तर दिया—"हमें जल कर प्राण त्यागना स्वीकार है। हम जीवन रहते अपनी राजपूती शान में बट्टा नहीं लगाएँगी।

बलभद्रसिंह—"नारियों का उत्तर आ गया। वीर राजपूत पुरुष हो अथवा नारी—कोई अपनी आन गवाँ कर जीवित रहना स्वीकार नहीं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करेगा। हमारे देश की यही परम्परा रही है, और रहेगी। हम टूट सकते हैं, लच नहीं सकते।"

नाहर बहादुर—"महाराज, अब तो कोई दुश्चिन्ता नहीं रही।"

इसी समय शत्रुओं की तोपें कलूँगा को ध्वंस करने के अभिप्राय से अट्ठारह पाउन्ड के गोले उगलने लगीं। उनका भयंकर रव पहाड़ियों से टकरा कर कलूँगा के वीरों के साहस की परीक्षा लेने लगा।

बलभद्रसिंह ने कहा—देखिए, शत्रु ने वार कर दिया। इस बार शायद वे केवल तोपों से ही गोला-बारी करेंगे। चलिए हम लोग भी अपने-अपने स्थान ग्रहण करें।"

नाहर बहादुर—"उनके पास जो साधन हैं, उनका उपयोग करेंगे ही। हमें भी ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए जिससे जो तोपों के गोलों से क्षति हो उसे हम तुरन्त मरम्मत करते जाएँ।"

बलभद्रसिंह—"ठीक कहते हो नाहर बहादुर। हमें इतनी दृढ़ता दिखानी चाहिए जिससे शत्रु को यह आभास न मिलने पावे कि हमें जल-कष्ट है।"

नाहर बहादुर—"ऐसा ही होगा महाराज। जब मुसलमानों के पीर-पैगम्बर इमाम हुसेन नौ दिन तक प्यासे रहकर लड़ सकते थे, तब क्या हम कुछ दिनों तक नहीं लड़ सकते? यदि मुसलमानों का करबला इराक में बना तो राजपूतों का कलूँगा में बनेगा। इतिहास तो हमें स्मरण करेगा—हम रहे-रहे या न रहें, ऐसे रहें याद रहें।"

बलभद्रसिंह—"मैं तुम्हारा अनुमोदन करता हूँ। नारियाँ प्रत्येक स्थान पर चूना तथा मसाला लिये उपस्थित रहें और पुरुषगण तुरन्त टूट-फूट मरम्मत करने में लग जायँ।"

नाहर बहादुर—"परन्तु महाराज, चूना सानने के लिए जल चाहिए, जिसका अभाव है।"

बलभद्रसिंह—"पहले रक्षा-कार्य के लिए जल इस्तेमाल होगा, फिर पीने के लिए।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नाहर बहादुर--"इतना तो निश्चित है कि टूट-फूट की मरम्मत करने से हमारी विपत्ति दूर नहीं होगी। यह संभव है कि एक-दो दिन की देर गढ़ के पतन में हो जाय। प्यासे रहते हुए हमें आगे शत्रु से लोहा लेने में कठिनाई होगी, अतएव मेरा सुझाव है कि जब तक जल रहे तब तक लड़ें, और बाद में गढ़ का फाटक खोल कर शत्रु-सेना में पिल पड़ें।"

"तुम्हारा मतलब है कि गढ़ की रक्षा करने में जल का उपयोग न किया जावे, उसको पीने के लिए बचाया जावे।"

"जी हाँ, हमें एक-एक बूँद जल का उपयोग दुर्ग की रक्षा के लिए नहीं, वरन मानव-जीवन की रक्षा के लिए करना चाहिए।"

"तुम्हारा प्रस्ताव उपयोगी है अवश्य, परन्तु मेरा सुझाव था कि दुर्ग की रक्षा अधिक से अधिक दिनों तक करनी चाहिए, ताकि महाराजा अमर सिंह की भेजी सैनिक सहायता आ जावे, जिसकी हम प्रतीक्षा कर रहे हैं। जब नई कुमक आजावे तब हम भी गढ़ से बाहर निकल कर शत्रु को आगे-पीछे से दाब लेवें। मुझे विश्वास है कि हमारी सेना आ जाने से शत्रुओं के छक्के छूट जायँगे, और वे भाग खड़े होंगे। फिरंगी डरपोक हैं, वे केवल छिप-छिपा कर लड़ सकते हैं आमने-सामने नहीं। हमारी खुखुड़ियों की मार के आगे वे कदापि नहीं ठहर सकते।"

"यदि आप का ऐसा विचार है, तब यही किया जावे।"

"पार्वती और गौरी का कोई पता नहीं चलता। न मालूम वे आकाश में उड़ गईं, और न-मालूम वे पृथ्वी में समा गईं। बुद्धि कुछ काम नहीं करती। चारों ओर विपत्ति ही विपत्ति है।"

मान बहादुर जो अभी तक चुप होकर उनकी मंत्रणा सुन रहा था, उठा और बोला—"महाराज शत्रु गोले बरसा रहा है, हमारे गढ़ की दीवारें टूट रही हैं। हमें अनुमति दीजिए कि हम भी शत्रु पर गोलियाँ बरसावें।"

"मान बहादुर, तुम्हारा कहना समय के उपयुक्त है। परन्तु हमारी बन्दूकों की गोलियाँ न उन तक पहुँच सकती हैं और न उनकी कोई हानि कर सकती हैं। वे हमारी मार के बाहर हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"किन्तु महाराज इस प्रकार हाथ पर हाथ धरे बैठा भी नहीं जा सकता। मेरा सुझाव है कि हमें तुरन्त आक्रमण कर देना चाहिए। परिणाम जो तब होगा, वह अब होगा।"

बलभद्र सिंह ने मत जानने के लिए पुनः सबकी ओर देखा। वे सब कानाफूसी करने लगे।

शेर सिंह ने कहा—"महाराज कहावत है कि 'जब तक साँस तब तक आस।' अतएव शीघ्रता करने में भी कोई लाभ प्रत्यक्ष नहीं है।"

नाहर बहादुर—"अन्त में हमें गढ़ छोड़कर उनसे लड़ना है। साँई के सौ खेल होते हैं। संभव है कि एक-दो दिन में महाराजा अमर सिंह की भेजी सहायता पहुँच जाय, उस समय हम द्विगुणित शक्ति से लड़ सकेंगे, और अभी के मुकाबले में कहीं अधिक शत्रुओं का हनन करेंगे।"

बलभद्र सिंह—"क्यों मान बहादुर, क्या कहते हो ?"

मान बहादुर—"पंचों की यदि यही राय है तो मैं उसके विपरीत नहीं जा सकता। किन्तु अब हमें सभा विसर्जित कर गढ़ की रक्षा का उपाय करना चाहिए।"

अब तक कई गोले दीवारों से टकरा चुके थे। इतने जोर से गोला-बारी हो रही थी कि बातें नहीं सुनी जा सकती थीं।

बलभद्र सिंह ने सबको युद्धस्थल पर चलने और अपना-अपना निश्चित कर्त्तव्य पालन करने का आदेश दिया।

● ● ●

## : २९ :

दो दिन लगातार तोपों के प्रहार से कलूँगा अर्धनग्न अवस्था में अब भी खड़ा था। फिरंगियों की तोपें इतनी तेजी से गोले फेंक रही थीं कि मरम्मत करने का कोई अवसर नहीं मिलता था, किन्तु फिर भी सैनिक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तथा नारियाँ उनके बनाने में जुटी पड़ी थीं। उनमें से कितने ही गोलों के शिकार होकर प्राण त्याग चुके थे, और कितने ही घायल अवस्था में दम तोड़ रहे थे।

जलकष्ट की आन्तरिक पीड़ा थी। लगभग पाँच सौ निवासी कब तक उस कुंड के जल से निर्वाह कर सकते थे? त्याग की जीवित मूर्ति-नारियों ने करीब-करीब जल पीना अपने-अपने पतियों तथा सैनिकों के लिए छोड़ दिया था। सैनिक स्वयं न पीकर घायलों की सेवा-शुश्रूषा में उसका उपयोग करते थे। प्यास से सबके कंठ सूखकर फूल गए थे, जीभ तालू से चिपक गई थी और बोलने में असमर्थ हो चुके थे। दोपहर की धूप अभी भी चट्टानों को तपाकर अग्नि तुल्य करती थी। उस उष्मा से परित्राण केवल शीतल जल से होता था, अब उसके एक-एक बूँद के लाले पड़े हुए थे। चारों ओर त्राहि-त्राहि मची थी। अन्धविश्वासी आशा लगाए बादलों के आने की राह देखते थे। उन्हें आशा थी कि ऐसे कठिन अवसर पर भगवान अवश्य उनकी सहायता करेंगे। अपना कष्ट निवारण करने के लिए वे रात भर प्रार्थनाएँ करते, भजन गाते, और अनेक प्रकार के टोने-टोटके करते, परन्तु कोई सफल नहीं होता था। न तोपों के प्रहार बन्द होते और न झरने से जल आता था।

परिश्रम करने से प्यास की अधिकता होती है, और प्यासे परिश्रम भी नहीं होता, अतएव दीवारों की मरम्मत भी नहीं हो रही थी। उसमें इतने प्रवेश द्वार से छेद बन गए थे कि शत्रु-सेना बड़ी आसानी के साथ घुसकर उनका सफाया कर सकती थी। इतनी बरबादी होने पर भी फिरंगियों को दुर्ग के समीप आने का साहस नहीं होता था। वे उनकी बन्दूकों की मार से दूर रहकर दुर्ग के विध्वंस होने का दृश्य देख-देख प्रसन्न हो रहे थे। कर्नल माबी अपने पैशाचिक कांड को घोड़े पर चढ़ा हुआ देख रहा था, परन्तु उसे भी साहस नहीं होता था कि वह अपने फिरंगी सैनिकों को गढ़ पर आक्रमण करने के लिए ललकारे। उसने हिन्दुस्तानी सैनिकों को देहरा वापस कर दिया था, इस भय से कि कहीं वे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उसके पैशाचिक कृत्य से आवेश में आकर विद्रोह न कर देवें, और जीती-जिताई बाजी हार जाय। इस समय केवल ब्रिटिश फौज घेरा डाले थी। वे भी अपने मालिक की प्रसन्नता में अपना योगदान दे रहे थे।

घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते कर्नल मावी भी थककर प्यासा हो गया था। उसने जीन से बँधी हुई पानी की बोतल खोली और उन प्यासों के सामने गटक-गटक पीने लगा। दुर्ग के कंगूरों से प्यासे गोरखे सैनिक उसके इस कृत्य को देख रहे थे। मान बहादुर अपने को रोक न सका, और उसने उसका निशाना साधकर गोली चलाई, परन्तु वह वहाँ तक न पहुँच सकी, और एक चट्टान से टकराकर कुछ दूर जाकर गिर पड़ी। कर्नल मावी ने धुएँ और बन्दूक की आवाज से अनुमान लगाया कि यह प्रहार उसी पर किया गया है। वह उसकी असफलता पर अपनी पूरी शक्ति से अट्टहास करने लगा। शायद उसकी पैशाचिक हँसी का शब्द मान बहादुर तक भी पहुँच गया। उसने अपनी असफलता पर कुढ़कर दुबारा गोली चलाई, परन्तु उसका भी वह परिणाम हुआ। कर्नल मावी ने अट्टहास करते हुए कहा—"अभी प्यास से लड़ो, फिर हमसे लड़ना।" किन्तु उसका वह व्यंग्य आकाश में गूँजता रहा और मान बहादुर तक न पहुँच सका।

दूसरा दिन भी प्राणों की खींच-तान में बीत गया। कलूँगा के सैनिकों की संख्या उत्तरोत्तर कम होती जा रही थी। उनकी नारियों की स्थिति उनसे भी ज्यादा नाजुक थी। कितनी ही साहसी नारियाँ दुर्ग की दीवार मरम्मत करने में अपने प्राणों की बलि दे चुकी थीं और जो बचीं थीं वे प्यास की पीड़ा से मुमूर्षुवत् थीं। उनके तालू और कंठ सूखकर काष्ठखंड के समान कड़े हो गए थे। किसी-किसी की जिह्वा लार के अभाव में बिल्कुल ऐंठ गई थी। आँखें किसी की बंद थीं, किसी की बाहर निकलने का उपक्रम कर रही थीं। कितनों की दृष्टि चली गई थी। कितने निर्जीव होकर प्यास की पीड़ा से मुक्ति पा चुके थे। चारों ओर युद्ध-क्षेत्र से भी भयंकर दृश्य वहाँ देख पड़ता था। जीवट से जीवट के मनुष्य उस स्थिति को देखकर काँप उठते। बलभद्र सिंह और अन्य सत्तर सैनिक अपने साहस

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

के कारण अभी तक चलने फिरने योग्य रह गए थे, शेष या तो मर चुके थे, या दाम तोड़ रहे थे।

ठंडी रातों के कारण उन्हें कुछ-कुछ राहत मिलती थी, परन्तु प्यास की भीषणता से उनका भी अब धैर्य और साहस जवाब देने लगा था। सबको एकत्रित कर बलभद्र सिंह ने कहा—"बताइए, अब हमें क्या करना चाहिए ?"

सब मौन थे। उनमें से कितने ही बोलने योग्य भी न थे। मानबहादुर ने खुखड़ी घुमाते हुए बहुत धीमें स्वर में कहा—"इससे मारते-काटते निकल चलिए।"

बलभद्र सिंह—"हाँ, अब यही एक रास्ता है। परन्तु इन स्त्रियों को क्या यों ही छोड़ दिया जावे ?"

नाहर बहादुर—"लगभग सब मर चुकी हैं, और जो नहीं मरीं वे कुछ ही घंटों की मेहमान हैं।"

"इनकी चिता लगवाना है।"

"अब इतनी सामर्थ्य हममें नहीं है। रणक्षेत्र में कौन दाह-कर्म होता है ?"

"ठीक है, इनको यों ही मरने के लिए छोड़ दिया जावे। मृत्यु उनकी निश्चित है। उसके आने में घंटों की देर हो सकती है, किन्तु वह आवेगी अवश्य।"

मानबहादुर ने कहा—"सूर्योदय के साथ ही हमें इस दुर्ग को छोड़ देना चाहिए।"

बलभद्र सिंह—"हाँ। हम चोर नहीं हैं जो रात्रि के अँधेरे में निकल भागें। हम उनके सीने पर पैर रखकर जायेंगे। मृत्यु हमारी सहेली है, उसके साथ खेलते हुए और शत्रुओं के शवों का आहार उसको देते हुए हमें निकलना है।"

सबने संकेतों से अपनी-अपनी स्वीकृति दी।

उसी के अनुसार सूर्योदय के समय बलभद्र सिंह अपने सत्तर जवानों के साथ गढ़ छोड़ने के लिए तैयार होकर सिंहद्वार पर आए। बड़ी कठि-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नता से वह खुला। फिर वे एक-एक की कतार में चलने लगे। उनके पगों में धीरता थी, मुख पर भय का कोई चिह्न नहीं था। उनके साहस को देखकर ब्रिटिश जवान चकित रह गए। वे सकते की हालत में खड़े के खड़े रहे। ये सब मन्त्रमुग्ध-से उनका आगमन देखने लगे। वे अपने अस्त्र-शस्त्र चलाना भूल गए। उनमें से किसी ने न कोई प्रश्न किया और न कोई रुकावट डालने का साहस किया।

सबसे आगे बलभद्रसिंह, उनके पीछे मान बहादुर और फिर दूसरे सैनिक चल रहे थे। सबके हाथों में नंगी खुखड़ियाँ थीं। सब धीरे-गंभीर सिंह के समान निडर हो कर जा रहे थे। शत्रु उन्हें अवश-से होकर देख रहे थे परन्तु उन्हें कोई ललकार नहीं रहा था। जिस प्रकार सेना को जाते हुए मौन आतंकित जनता देखती है, उसी प्रकार वे भी उन पुरुष सिंहों को देख रहे थे। ब्रिटिश सैनिक उनके मार्ग से हट कर उन्हें जाने की सुविधा भी देने लगे। बलभद्र सिंह तथा अन्य गोरखे सैनिकों ने भी कोई छेड़-छाड़ नहीं की। वे सीधे नीचे के झरने पर पहुँच कर चुल्लुओं से पानी पीने लगे। सबने छक कर शीतल जल पिया। पानी पीते हीं उनकी सहज स्फूर्ति पुनः आ गई। उन्होंने पूरी शक्ति से अपने इष्टदेव पशु-पतिनाथ की जय बोली, और कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद साल वृक्षों के जंगल में प्रविष्ट हो गए। घने जंगल ने उन्हें अपने विशाल क्रोड़ में छिपा लिया।

उनके जाने के बाद फिरंगियों की मोहनी भंग हुई। वे हकबका कर एक दूसरे को देखने लगे। कर्नल मावी अभी अपने शिविर में आराम कर रहा था। जब बलभद्र सिंह के निकल जाने की उसे सूचना मिली, वह दौड़ता हुआ आया और अपने अफसरों को डाँटने लगा। उसने उनका पीछा करने का आदेश दिया, परन्तु कोई सैनिक टस से मस न हुआ।

इसी समय मिस्टर फ्रेजर भी बलभद्र सिंह के निकल जाने की खबर सुन वास्तविक हाल जानने के उद्देश्य से वहाँ आ गए। उस समय कर्नल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

माबी क्रोध से लाल-पीला होता हुआ उनको कोर्ट-मार्शल करने की धमकी दे रहा था।

फ्रेजर को देखते ही उसने कहा—"मिस्टर फ्रेजर, इन बेवकूफों ने दुश्मन को निकल जाने दिया। इनको फौजी अदालत के सिपुर्द क्यों न किया जावे ?"

फ्रेजर ने कहा—"कलूँगा तो सर हो गया।"

"लेकिन हमारा जानी दुश्मन बलभद्र सिंह तो निकल भागा। वहीं नहीं अकेले गया बल्कि अपने साथ कई जवानों को भी ले गया।"

"जाने दीजिए; हमें वीरों का सम्मान करना चाहिए। उन प्यासों को मारने से ब्रिटिश साम्राज्य की प्रतिष्ठा में धक्का पहुँचता। हम सभ्य संसार में मुँह दिखाने योग्य न रहते।"

एक ब्रिटिश अफसर ने कहा—"हम कैसे बतावें कि हमें काठ मार गया था ?"

"ठीक है, आखिर मानव हम भी हैं—यद्यपि हमारे कृत्य शैतानी हैं, तथापि बीच-बीच में मानवता झाँक पड़ती है। चलिए कर्नल साहब, हम लोग गढ़ पर कब्जा करें।"

कर्नल माबी का क्रोध अभी तक उतरा नहीं था। उसने कड़क कर कहा—"मिस्टर फ्रेजर, आपकी दस्तन्दाजी मैं पसन्द नहीं करता। मैं बलभद्र सिंह को जीवित या मृत पकड़ना चाहता था। उसके निकल भागने से ब्रिटिश-प्रतिष्ठा को धक्का लगा है। हम सैनिक हैं, सिविलियन नहीं जो दया, ममता, व्यवहार, आचरण की दुहाई देकर शत्रु को बिना हनन किए छोड़ दें। आप क्या सोच सकते हैं कि बलभद्र सिंह के जीवित निकल जाने से हमारी कितनी हानि हुई है ? वह हमें पुनः परेशान करेगा।"

"यदि वह परेशान करेगा, हम पुनः उससे लोहा लेंगे। यदि सेना के लिए कुछ नियम है, तो शूरवीरता की भी कुछ विशिष्ट परम्पराएँ हैं। अधमरों को मारना कभी सैनिक नियम के अनुकूल नहीं है। जो हमारा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मुकाबला करे, उसको भी वहीं तक हानि पहुँचाना उचित है जहाँ तक वह पराजित नहीं होता है।"

कर्नल माबी ने कोई उत्तर नहीं दिया, वह भुन-भुन करता रहा।

मिस्टर फ्रेजर उसे वहीं छोड़, अकेले ही कलूँगा दुर्ग की दुर्दशा देखने के लिए रवाना हो गए।

● ● ●

: ३० :

फ्रेजर के पीछे-पीछे कर्नल माबी भी ताव-पेंच खाता अपने सैनिकों के साथ रवाना हुआ। फिरंगी सैनिकों के मन पर अब भी भय छाया हुआ था। वे सशंकित थे और इधर-उधर ताकते-झाँकते इस प्रकार मंदगति से चल रहे थे जैसे चोरों का दल चारों तरफ की आहट लेता हुआ चलता है। पग-पग पर उन्हें आशंका हो रही थी कि कहीं कोई छिपा-दुबका गोरखा जवान उन्हें अपनी गोली का शिकार न बना देवे। वे उनकी अचूक निशानेबाजी के कायल हो चुके थे। उनके नैतिक साहस का सर्वथा अभाव हो चुका था। उनकी पगध्वनि पाकर जब गृद्धों और चीलों का झुंड घबराकर फड़फड़ाता हुआ आया, तब भी सहम कर पीछे लौट कर भागने लगे। कर्नल माबी उनकी भीरुता देख कर कुढ़ता हुआ बोला—"ठहरो, भीरुता का आरोप लगा कर तुम सबको फौजी अदालत में पेश करूँगा।"

परन्तु भागते हुए फिरंगी भीरुओं का दल फिर भी न रुका। आदेश सुनकर भी उन्हें ठहरने का साहस न हुआ।

कर्नल माबी घोड़ा दौड़ाता हुआ उनके पास पहुँचा, और अपनी पिस्तौल से सबसे आगे भागने वाले सैनिक को मार गिराया। इस

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कठोरता का प्रभाव यह पड़ा कि जो सैनिक जहाँ था, वहीं पाषाणवत् ठहर गया।

कर्नल माबी ने उन्हें पंक्तिबद्ध होने का आदेश दिया। सैनिक दोनों ओर से आतंकित थे। एक ओर वे प्रतिक्षण गोरखों के आक्रमण की आशंका कर रहे थे और दूसरी ओर कर्नल माबी के पैशाचिक प्रतिशोध का।

मिस्टर फ्रेजर कलूँगा के सिंह द्वार पर खड़े यह दृश्य देख रहे थे। उसे भी फिरंगियों की भीरुता पर रोष आ रहा था। उसे लार्ड म्वायरा का लगाया हुआ आरोप अक्षरशः सत्य प्रमाणित होने लगा। उसके मन ने प्रश्न किया—"क्या सत्य ही हम भीरु हो गए हैं?"

वह भी कुपित होकर उनके समीप दौड़कर गए और उन्हें धिक्कारने लगे। उनके कंठस्वर में उत्तेजना के साथ ढाढ़स भी था, धिक्कार के साथ पुचकार भी थी, और दंड के आतंक के साथ आशा तथा प्यार भी था, जैसा नटखट बालक के प्रति पिता का होता है।

सैनिकों के मन कुछ-कुछ स्थिर होने लगे।

फ्रेजर अपने कथन का प्रभाव देखकर बोला—"भय की अब कोई बात नहीं हैं। गोरखों ने अपने दल के साथ गढ़ छोड़ दिया है। इस समय उनका कोई जवान एक तो मौजूद नहीं है, जो एक-दो जीवित भी हैं, वे प्यास से अधमरों से ज्यादा पंगु हो चुके हैं। उनमें इतनी सामर्थ्य नहीं है कि अब वे तुम्हारा विरोध कर सकें अथवा बन्दूक चला सकें। तुम स्वयं चलकर देखो और यदि आगे चलने में तुम्हें कोई धोखा या सन्देह होता हो, तो आगे-आगे मैं चलता हूँ और मेरे पीछे तुम सब आओ।"

कर्नल माबी भी वहाँ आ गया। उसने पिस्तौल तान रखी थी। सैनिक उसकी विकराल मूर्ति को देखकर थर-थर काँप रहे थे।

फ्रेजर ने बीच-बचाव के उद्देश्य से कहा—"कर्नल माबी, आइए, हम लोग पहले गढ़ में प्रवेश कर इन गुमराह जवानों को विश्वास दिला देवें कि गढ़ बिल्कुल खाली है। किसी प्रकार के आक्रमण की आशंका नहीं है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कर्नल माबी फ्रेजर का प्रभाव देख कर और कुपित हो गया। उसने उद्धतस्वर में कहा—"मिस्टर फ्रेजर, मैं पहले भी आप को मना कर चुका हूँ कि मेरे प्रबन्ध में दस्तन्दाजी न करें, किन्तु आप····।" आगे वह बोल न सका।

फ्रेजर ने मृदु मुस्कराहट के साथ कहा—"कर्नल माबी, मैं तो आप की सहायता कर रहा था।"

"यह मैं किसी भाँति बरदास्त नहीं कर सकता कि आप बार-बार मेरी हुकूमत में खलल डालते हैं। ये मेरे अधीनस्थ सिपाही हैं। इनको मेरा आदेश पालन करना होगा।"

"वही तो मैं कह रहा हूँ। आप क्रोध न कीजिए। जरा-सोच विचार कर स्थिति समझने का भी कष्ट करें। हमारे ब्रिटिश सैनिकों के मन पर गोरखों का भय छा गया है। जब तक उनका भय दूर नहीं किया जायगा, वे अपने आपे में नहीं आ सकेंगे।"

"ये बुजदिल हैं, और बुजदिलों की सजा मौत है। यह आप भी जानते हैं, और जिनकी आप वकालत कर रहे हैं वे भी जानते हैं।"

"बुजदिलों को भी दिलेर बनाया जा सकता है····।"

कर्नल माबी को उपदेश सुनने की ताब नहीं थी। उसने आवेश के साथ कहा—"आप लार्ड म्वायरा के भेजे हुए आए हैं, इसलिए आप का लिहाज करता हूँ। आप अपनी सीमा के भीतर रहिए। बस मेरी यह अंतिम चेतावनी समझिए। आप जैसी रिपोर्ट गवर्नर जेनरेल को देना चाहें, दीजिए, लेकिन मेरे अनुशासन में दखल न दीजिए, नहीं तो इसका परिणाम····।"

फ्रेजर को भी रोष आ गया। उसने उसे शमन करते हुए कहा—"एक ब्रिटिश होने के नाते मुझे भी अपने ब्रिटिश सैनिकों की प्राणरक्षा का उतना ही अधिकार है जितना आपको है। हमें इन्हीं के भरोसे आगामी युद्ध करना है। दरअसल, आपका अकारण क्रोध स्पष्ट बता रहा है कि लार्ड म्वायरा ने जो कुछ आपको लिखा है, वह नितान्त सही है, क्योंकि बुजदिल ही खतरा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निकल जाने पर अचानक साहसी बनकर अपनी कलंक-कालिमा धोने का प्रयत्न करता है।"

इतना कह कर फ्रेजर वहाँ से जाने लगा। उसके अन्तिम शब्दों ने मावी के क्रोधानल को प्रज्वलित कर दिया। उसके मन में आया कि फ्रेजर का वहीं काम तमाम कर दे, और उसने अपनी पिस्तौल उठायी भी, परंतु उसका हाथ उठा का उठा रह गया। फ्रेजर ने उलटे पैरों लौटकर कहा—"कर्नल मावी, मुझे मार कर भी तुम अपनी बुजदिली का कलंक नहीं मिटा सकते। तुम में इनका साहस कदापि नहीं है कि तुम आमने-सामने वार करो। तुम केवल धोखे से मार कर अपनी शूरता बघार सकते हो। मैं निःशस्त्र खड़ा हूँ तुम्हारे सामने, यदि साहस हो तो गोली चलाओ।"

फ्रेजर सीना तान कर मावी के सामने खड़े हो गए। कर्नल मावी उनसे आँख नहीं मिला सका। उसे कोई उत्तर भी न सूझा। पिस्तौल अपनी जेब में डालकर चुपचाप कलूँगा गढ़ में प्रविष्ट हो गया।

फ्रेजर ने सिपाहियों से कहा—"बुजदिली मत दिखाओ। जाकर इस गढ़ को धूल धूसरित कर दो, और कर्नल मावी का आक्रोश शान्त करो।" और वह मन्थर गति से चले गए।

उनके जाने के बाद फिरंगी सैनिक भी गढ़ में प्रविष्ट हो गए।

कर्नल मावी अपने होंठ चबाता हुआ कलूँगा गढ़ में प्रविष्ट हुआ। गढ़ यद्यपि ध्वस्त हो चुका था, उसकी मोटी-मोटी दावारें गिर पड़ी थीं, तथापि उसका आतंक अभी तक शेष नहीं हुआ था। यत्र-तत्र-सर्वत्र मृत स्त्री-पुरुषों के शव बिखरे पड़े थे, जो अपनी विकराल मुखमुद्रा से कर्नल को डराने लगे। किसी की आँखें निकल पड़ी थीं, किसी की जिह्वा ऐंठकर मुख के बाहर निकल आयी थी, किसी का आधा धड़ गोलों की मार से क्षत-विक्षत पड़ा सडांध फैला रहा था, किसी की मुखाकृति प्यास की पीड़ा को दमन करते हुए डरावनी हो गयी थी। गिद्धों और कुत्तों के झुन्ड लोथड़ों को शवों से पृथक् करने में जुटे थे। कर्नल को देखकर वे एक शव से उड़कर दूसरे कुछ दूर पड़े हुए शव पर जा कर बैठने लगे। उस बीभस्त दृश्य को

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देख कर कर्नल माबी का क्रोध काफूर हो गया। वह अपनी सहज अवस्था में आ गया। उसने अपने छाती पर लटकते हुए 'क्रास' को चूमा और कहा—"यीशू तूने मेरी लाज रख ली। इन गोरखों ने तो अंग्रेजी राज्य की प्रतिष्ठा भग करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी-दो बार इन मूर्दों ने हमारी सेनाओं को पीछे ढकेल दिया, और हमारे जेनरेल जिलेस्पी तथा अन्य अफसरों को मार डाला। किन्तु अब इस गढ़ के ध्वस्त होने के साथ हमारा प्रतिशोध पूर्ण हुआ, और ब्रिटिश सैन्य शक्ति की प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त हुई। मैं इसका नाम-निशान मिटा कर दम लूँगा।"

उसके सैनिक सिंहद्वार पर खड़े उसके आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसने एक अफसर को बुलाकर कहा—"स्मिथ, अपने सैनिकों को आदेश दे दो कि वे इस गढ़ का एक-एक पत्थर उखाड़ कर फेंक दें।"

मेजर स्मिथ ने कर्नल का आदेश प्रचारित कर दिया। सैनिकों की भीरुता अन्तर्हित हो चुकी थी। उसके स्थान पर उनकी चिरसंगिनी शैतानी प्रवृत्तियाँ चैतन्य होकर अपना अधिकार जमाने लगीं। कर्नल के मन से अपनी भीरुता मिटाने के लिए वे जीन-जान से गढ़ को गिराने लगे। शवों के साथ वे पैशाचिक कृत्य करने लगे। किसी छाती पर खड़े होकर वे नाचते, किसी के शव को कई मिलकर फुटबाल की तरह ठोकरें मारते, किसी के गुह्यांगों में संगीनें घुसेड़ देते, किसी की निकली हुई जिह्वा को फौजी बूटों से दबाकर उसके मुख पर ठोकरें लगाते, किसी नारी को विवस्त्र कर उसके अंगों का मुआयना करते, गर्ज कि वे सभी प्रकार के घृणित, निन्दनी कृत्य कर प्रसन्न होने लगे। उन कृत्यों को यदि शैतान को देखने को सशरीर उपस्थित हो जाता, तो वह भी लजा कर अपना मुख छिपा लेता, और कहता—"मनुष्य मुझे नाहक बदनाम करता है जब वह कुकर्मों में मुझसे भी कहीं अधिक है। मैं केवल जीवित मनुष्यों को ही गुमराह करता हूँ, परन्तु ईश्वर का बनाया इन्सान अपने मुर्दों को भी अछूता नहीं छोड़ता।"

कर्नल माबी जब गढ़ की परिक्रमा करते हुए सूखे झरने के पास पहुँचे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उनकी बाँछें खिल गयीं। वह घोड़े से उतर कर उसके समीप पहुँचा और बोला—"यह विजय केवल तेरे कारण हुई है। मैं इस स्थान पर जेनरेल जिलेस्पी की समाधि बनवा कर तुझे अमर कर दूँगा।" उसने क्रास पुनः चूमा और सिर-आँखों से लगाया।

कर्नल मावी ने मेजर स्मिथ को बुलाकर कहा—"यहाँ कोई सुरंग है, जो उस स्थान पर जाती है, जहाँ से इस झरने में पानी आता था। मैं उस स्थान का निरीक्षण स्टीवेनसन के साथ बाहर ही बाहर से कर आया हूँ। वहाँ हमारे सैनिकों का एक प्लाटून पड़ा हुआ है। सुरंग का दरवाजा खोलकर उन सबको इधर बुला लो। दोनों मिलकर शाम तक इसको केवल पत्थरों के ढेर में परिणत कर दो। एक भी मकान, दीवार साबित न बचे।"

मेजर स्थिम आदेश पालन कराने के लिए जाने लगा, किन्तु कर्नल ने उसे पीछे बुलाकर कहा—"वह सुरंग इधर से बंद कर दी गई है। उसके द्वार पर जरूर पत्थरों का ढेर लगा होगा। ध्यान से देखने पर तुरन्त तुम्हें उसका पता चल जायगा। बहुत शीघ्र उसे साफ कराओ, मैं स्वयं उधर जाऊँगा।"

स्थिम ने अपने सैनिकों को कर्नल का आदेश सुना दिया। वे शैतानी कृत्य छोड़कर सुरंग का द्वार ढूँढ़ने लगे। थोड़ी ही देर में उन्होंने उसे ढूँढ़ निकाला। तुरन्त ही उसकी सगाई आरम्भ हो गई। लगभग एक घंटे के प्रयास से वह साफ हो गई। जब कर्नल मावी को इसकी सूचना दी गई, तो उसके अपना घोड़ा एक सैनिक को पकड़ा कर स्वयं सुरंग में प्रवेश किया। अपने पीछे उन सबको आने का आदेश दिया।

●

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

: ३१ :

कर्नल माबी डोल-डौल से लम्बा-चौड़ा व्यक्ति था। सुरंग में कुछ दूर चलने के पश्चात् उसके शरीर के कपड़े नोकीले पत्थरों से टकरा कर फटने लगे। फौजी बूटों के कारण उसे चलने में कष्ट होने लगा। ऊबड़-खाबड़ जमीन से अँधेरे में ठोकरें लगने लगीं। उसका आगे चलना मुश्किल हो गया, किन्तु पीछे लौटने से उसके अहंकार को धक्का लगता। सुरंग बनाने वालों को गालियाँ देता हुआ वह सँभल-सँभलकर चलने लगा। किन्तु जब सुरंग का मार्ग ऊपर को ओर चढ़ने लगा, वह भरभरा कर गिर पड़ा। उसके कपाल पर चोट आई, और पीड़ा से व्याकुल होने लगा। उसके पीछे मेजर स्मिथ चल रहा था। कर्नल के गिरने से उसने अपने को रोकने की चेष्टा की, परन्तु वह समर्थ न हो सका, तथा कर्नल पर गिर पड़ा। पीड़ा से तो वह व्याकुल हो हो रहा था कि स्मिथ के गिर जाने से वह दवा और पत्थर का दूसरा आघात उसके कपाल पर लगा। वह तिलमिला उठा, और कुपित होकर गालियाँ देने लगा। जगह इतनी सँकरी थी कि स्मिथ से शीघ्र पृथक् हुआ भी न गया। कर्नल की तोंद पर भी चोट लगने लगी, क्योंकि स्मिथ ज्यों-ज्यों उठने का प्रयत्न करता, त्यों-त्यों उसका तोंद दबती, तथा दम भी घुटता था।

कर्नल बैल की तरह गों-गों करता हुआ बोला—"जल्दी उठता क्यों नहीं ?" और भद्दी-भद्दी गालियाँ देने लगा।

पीछे अनुसरण करने वाले सिपाहियों को कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। कर्नल और स्मिथ के गिरने का शब्द उन्होंने सुना अवश्य था, परन्तु वास्तविकता से बिल्कुल अनभिज्ञ थे, इसलिए वे भी सावधान न हो सके और उठते हुए स्मिथ से लड़खड़ा कर एक सैनिक उस पर गिर पड़ा। कर्नल को

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उनकी बाँछें खिल गयीं। वह घोड़े से उतर कर उसके समीप पहुँचा और बोला—"यह विजय केवल तेरे कारण हुई है। मैं इस स्थान पर जेनरेल जिलेस्पी की समाधि बनवा कर तुझे अमर कर दूँगा।" उसने क्रास पुनः चूमा और सिर-आँखों से लगाया।

कर्नल माबी ने मेजर स्मिथ को बुलाकर कहा—"यहाँ कोई सुरंग है, जो उस स्थान पर जाती है, जहाँ से इस झरने में पानी आता था। मैं उस स्थान का निरीक्षण स्टीवेनसन के साथ बाहर ही बाहर से कर आया हूँ। वहाँ हमारे सैनिकों का एक प्लाटून पड़ा हुआ है। सुरंग का दरवाजा खोलकर उन सबको इधर बुला लो। दोनों मिलकर शामतक इसको केवल पत्थरों के ढेर में परिणत कर दो। एक भी मकान, दीवार साबित न बचे।"

मेजर स्थिम आदेश पालन कराने के लिए जाने लगा, किन्तु कर्नल ने उसे पीछे बुलाकर कहा—"वह सुरंग इधर से बंद कर दी गई है। उसके द्वार पर जरूर पत्थरों का ढेर लगा होगा। ध्यान से देखने पर तुरन्त तुम्हें उसका पता चल जायगा। बहुत शीघ्र उसे साफ कराओ, मैं स्वयं उधर जाऊँगा।"

स्थिम ने अपने सैनिकों को कर्नल का आदेश सुना दिया। वे शैतानी कृत्य छोड़कर सुरंग का द्वार ढूँढ़ने लगे। थोड़ी ही देर में उन्होंने उसे ढूँढ़ निकाला। तुरन्त ही उसकी सगाई आरम्भ हो गई। लगभग एक घंटे के प्रयास से वह साफ हो गई। जब कर्नल माबी को इसकी सूचना दी गई, तो उसके अपना घोड़ा एक सैनिक को पकड़ा कर स्वयं सुरंग में प्रवेश किया। अपने पीछे उन सबको आने का आदेश दिया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## : ३१ :

कर्नल माबी डील-डौल से लम्बा-चौड़ा व्यक्ति था। सुरंग में कुछ दूर चलने के पश्चात् उसके शरीर के कपड़े नोकीले पत्थरों से टकरा कर फटने लगे। फौजी बूटों के कारण उसे चलने में कष्ट होने लगा। ऊबड़-खाबड़ जमीन से अँधेरे में ठोकरें लगने लगीं। उसका आगे चलना मुश्किल हो गया, किन्तु पीछे लौटने से उसके अहंकार को धक्का लगता। सुरंग बनाने वालों को गालियाँ देता हुआ वह सँभल-सँभलकर चलने लगा। किन्तु जब सुरंग का मार्ग ऊपर को ओर चढ़ने लगा, वह भरभरा कर गिर पड़ा। उसके कपाल पर चोट आई, और पीड़ा से व्याकुल होने लगा। उसके पीछे मेजर स्मिथ चल रहा था। कर्नल के गिरने से उसने अपने को रोकने की चेष्टा की, परन्तु वह समर्थ न हो सका, तथा कर्नल पर गिर पड़ा। पीड़ा से तो वह व्याकुल हो हो रहा था कि स्मिथ के गिर जाने से वह दवा और पत्थर का दूसरा आघात उसके कपाल पर लगा। वह तिलमिला उठा, और कुपित होकर गालियाँ देने लगा। जगह इतनी सँकरी थी कि स्मिथ से शीघ्र पृथक् हुआ भी न गया। कर्नल की तोंद पर भी चोट लगने लगी, क्योंकि स्मिथ ज्यों-ज्यों उठने का प्रयत्न करता, त्यों-त्यों उसका तोंद दबती, तथा दम भी घुटता था।

कर्नल बैल की तरह गों-गों करता हुआ बोला—"जल्दी उठता क्यों नहीं ?" और भद्दी-भद्दी गालियाँ देने लगा।

पीछे अनुसरण करने वाले सिपाहियों को कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। कर्नल और स्मिथ के गिरने का शब्द उन्होंने सुना अवश्य था, परन्तु वास्तविकता से बिल्कुल अनभिज्ञ थे, इसलिए वे भी सावधान न हो सके और उठते हुए स्मिथ से लड़खड़ा कर एक सैनिक उस पर गिर पड़ा। कर्नल को

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुनः चोट लगी। वह आशंकित होकर चिल्लाने लगा। उसके मन में यह सन्देह उत्पन्न हुआ कि उसके रुष्ट सैनिक उसे इसी सुरंग में मार डालना चाहते हैं। सवेरे उसने उनको कोर्ट मार्शल करने की धमकी दी थी, इसी से वे प्रतिशोध निकालने का प्रयत्न कर रहे हैं। वह उनके चंगुल से निकलने का यत्न करने लगा, और हाथों के सहारे धीरे-धीरे आगे सरकने लगा। स्मिथ ने अपने ऊपर गिर हुए सैनिक का भार उठाकर कर्नल को आगे सरक जाने का अवसर दिया। क्षत-विक्षत कर्नल किसी प्रकार उस दबसट से निकल कर भैंस की तरह हाँफने लगा। उसके मन में आया कि वह पिस्तौल से एक-दो को आहत कर दे, किन्तु यह सोच कर कि वे सब मिल कर उसका कचूमड़ निकाल देंगे, इसलिए उसने अपने मनोभाव को दमन करते हुए कहा—"बेवकूफों, तुम लोग मशाल क्यों नहीं लाये ?"

स्मिथ पर गिरा हुआ सिपाही बहुत घबरा गया था। उठने का प्रयत्न वह बार-बार करता परन्तु घबराहट उसे इजाजत नहीं देती थी। उससे छुटकारा पाने के लिए उसने उसे बलपूर्वक उठाकर आगे की ओर फेंक दिया। खड़े हुए कर्नल की तोंद से वह टकराया। उसका धक्का लगने से कर्नल गिरा तो नहीं; किन्तु सुरंग की दीवार से उसका सिर टकरा गया। पहले कपाल का अगला भाग छक्ष-विक्षत हुआ था, अब दाहिना भाग भी आहत हो गया। एक नोकीला पत्थर उसकी कनपटी में घुस गया। वह ऊँट की तरह एकदम बलबला उठा और सामने की ओर जी छोड़कर भागा। अब उसे निश्चय हुआ कि सिपाहियों की साजिश उसको इसी सुरंग में मार डालने की है। ऊपर की ओर चढ़ती हुई सुरंग उसे पग-पग पर बाधा पहुँचाने लगी। उसके चारों ओर घटाटोप अन्धकार था; हाथ तक सुझाई नहीं देता था। उसे अपने देश के किसी कवि की वे पंक्तियाँ याद आने लगीं जिनमें नारकीय अन्धकार का वर्णन है। वह पिस्तौल हाथ में थामे हुए आगे बढ़ने लगा।

स्मिथ के द्वारा उछाला हुआ सैनिक कर्नल की तोंद से टकराकर गिरा किन्तु उसे चोट कम आई, और वह उठ खड़ा हुआ। स्मिथ भी खड़ा हो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गया। पीछे आने वाले सैनिक दम साधे खड़े थे, और वे कर्नल की चिल्लाहट से घबरा कर एक दूसरे से कानाफूसी करने लगे।

एक ने पूछा—"क्या हुआ ? कर्नल क्यों चिल्ला रहा है ?

दूसरे ने जवाब दिया—"कोर्ट मार्शल करवा रहा है।"

तीसरे ने कहा—"कोर्ट मार्शल नहीं करायेगा, वह हमें इसी सुरंग में दम घुटवा कर मार डालेगा।"

चौथा बोला—"वह अकेला ही तो है, क्यों न उसको यहीं समाप्त कर दो।"

पहले वाले ने कहा—"चुप, अगर उसके कान में भनक पड़ गई तो ……।"

चौथा—"अरे, इस जगह पर वह हमारा कर्नल नहीं है, हम उसके……।"

दूसरा—"चुप। पहले पता करो कि क्या घटित हुआ है ? फिर अनर्गल बकना।"

पहला—"हुआ क्या, कर्नल गिर पड़ा मालूम होता है। चोट लगने से चिल्ला रहा है।"

तीसरा—"मरा तो नहीं ?

पहला—"मरा होता तो चिल्ल-पों कैसे मचाता ?"

चौथा—"आगे बढ़ता क्यों नहीं ? अँधेरे में दम घुट रहा है।"

दूसरा—"हमारा दम घोंटने के लिए ही तो वह हमें यहाँ लाया है।"

जो सिपाही पीछे थे, वे चिल्लाए—"आगे बढ़ो ?"

स्मिथ अब तक अपने घुटनों को सहलाता हुआ उठ खड़ा हुआ था। उसने आदेश दिया—"सावधान, कर्नल साहब गिर पड़े हैं। अभी मेरे ऊपर कौन गिरा था ? कैप्टन ब्राउन कहाँ है ?"

स्मिथ पर गिरने वाले का नाम था ब्राउन। उसने कराहते हुए कहा—"मैं यहाँ हूँ, आपके आगे, किन्तु मैं उठ नहीं सकता, मेरे घुटने फूट गए हैं। आपने मुझे उठाकर इतनी जोर से फेंका था कि कर्नल साहब की तोंद

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

से टकरा गया, जिससे चोट कम लगी, फिर भी मेरे घुटने चुटीले हो गए हैं।"

स्मिथ ने आगे बढ़, उसको टटोलते हुए कहा—"अकस्मात् कर्नल के गिर जाने से यह दुर्घटना हो गई। सावधानी से तुम लोग बढ़ना। सुरंग ऊपर की ओर जा रही है। ब्राउन क्या मैं तुम्हें सहारा दूँ ?"

ब्राउन ने उठने की चेष्टा करते हुए कहा—"उठ रहा हूँ।"

स्मिथ—"तुम मुझे आगे बढ़ने का रास्ता दो।"

ब्राउन—"आप कैसे निकल सकेंगे ? सुरंग इतनी चौड़ी नहीं है कि आप निकल सकें।"

स्मिथ—"दीवार से चिपक कर खड़े हो, मैं निकल जाऊँगा।"

ब्राउन—"आइए, अगर इस बिल में फँस गये तो हम दोनों को बहुत चोट आयेगी।" स्मिथ आगे बढ़ा और ब्राउन को रगड़ता हुआ निकलने का प्रयत्न करने लगा, परन्तु उसका मोटा शरीर उसे आगे बढ़ने की इजाजत नहीं दे रहा था। दोनों के पेट एक दूसरे से रगड़ने लगे।

स्मिथ ने कहा—"ब्राउन, साँस भीतर की ओर खींचकर अपना पेट सिकोड़ो।"

ब्राउन आदेश पालन करने लगा, परन्तु वह फिर भी न निकल सका।

स्मिथ जब थक कर हार गया, तब उसने दूसरे सैनिकों को पुकार कर कहा—"एक आदमी आगे बढ़ कर ब्राउन का हाथ पकड़ कर अपनी ओर घसीटो, और ब्राउन तुम भी पीछे हटने का प्रयत्न करो।"

ब्राउन—"इस तरह तो मेरी दुर्दशा हो जायगी। मुझको ही आगे चलने दीजिए।"

स्मिथ ने हाँफते हुए कहा—'अच्छा, तुम ही आगे चलो।'

बड़ी कठिनाई से ब्राउन पृथक् हुआ, और लँगड़ाता हुआ आगे चलने लगा।

उधर कर्नल माबी अपने प्राणों की रक्षा के लिए जितना शीघ्र हो सकता सुरंग से बाहर निकलने की चेष्टा में भाग कर जाने लगा।

● ● ●

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## : ३२ :

जब कर्नल माबी सुरंग के द्वार पर पहुँचा, उसने अधाकर साँस ली, यद्यपि अभी तक उसका भय पूर्णतः दूर नहीं हुआ था। रास्ते भर वह प्रत्येक क्षण किसी सैनिक की पिस्तोल अथवा बन्दूक की गोली का निशाना बनने की आशंका कर रहा था, इसलिए वह दायें-बायें होकर चलना चाहता था; परन्तु उस सँकरी सुरंग में इसकी गुंजायश नहीं थी। प्रत्येक क्षण उसका मानस-पाप उसे अनेक रूपों में डरा रहा था। जितना ही उससे छुटकारा पाने का यत्न करता उतना ही वह उग्र हो रहा था। उसकी आशंका जब निर्मूल प्रमाणित हुई तब उसे शान्ति मिली, और वह निडरता का चोगा धारण करने लगा। आशंका का कारण निवृत्त हो जाने पर कापुरुष भी निर्भीकता का भान कराने से नहीं चूकता।

इस समय कर्नल माबो के कपाल फूट जाने से जो पीड़ा भय के कारण दबी हुई थी, वह उभर कर उसे पीड़ित करने लगी। उसने रूमाल से अपना सिर पोंछा, वह रक्त से भर गया। उसने अपने कपड़ों पर दृष्टि डाली, वे भी रक्त से लथपथ थे। भय दूर हो जाने से उसका अफसरी का भाव जीवित हो गया, और उसने कड़क कर कहा—"स्मिथ, तुम्हारे सिपाही क्या कर रहे हैं, बाहर क्यों नहीं निकलते ?"

कर्कश कंठस्वर सुरंग में गूँज गया। स्मिथ की दशा कर्नल माबी से अधिक शोचनीय थी। उसके घुटने छिल गये थे, पैण्ट फट गई थी, और उसके वस्त्र लहूलुहान थे। कर्नल के स्वभाव से वह परिचित था। उसने उत्तर दिया—"हुजूर आ रहा हूँ। सैनिकों के गिर जाने से हमारी गति में बाधा पड़ी है। हम सब आ रहे हैं।"

कर्नल को वह किञ्चित् विलम्ब भी सह्य नहीं हुआ। उसने पुनः आदेश

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दिया—"शीघ्र निकलो। तुम सब बुजदिल हो। मैं सबको फौजी अदालत के सिपुर्द करूँगा।" अन्तिम वाक्य उसने अपेक्षाकृत धीमे स्वर में कहा।

स्मिथ के आगे ब्राउन था, जो बुरी तरह से चुटा गया था। उसको ठेलते हुए स्मिथ ने कहा—"ब्राउन, जल्दी चलो, नहीं तो जेनरेल खीजा हुआ है, वह कोई नई विपत्ति खड़ा करेगा। वह भी बहुत घायल हो गया है।"

ब्राउन ने कराहते हुए कहा—"मेरी कमर और पैरों में गहरी चोट लगी है। मुझे यहीं छोड़कर आप आगे चले जाइये।"

"गोरखे बदमाशों ने सुरंग भी बनवाई तो इतनी सँकरी, जिसमें एक आदमी ही जा सकता है। यदि हम दोनों दुबले पतले होते तो किसी तरह दब-दबाकर निकल जाते, लेकिन हमारा मोटापा बीच में अड़ जाता है।"

"तब फिर क्या किया जावे ?"

"क्या तुम धीरे-धीरे नहीं चल सकते ?"

"कोशिश करता हूँ, लेकिन पैर उठते नहीं। कमर टूटी जा रही है।"

"तब आओ तुम्हें पीठ पर चढ़ा कर ले चलूँ। सुरंग से इसी तरह बाहर निकल सकते हैं।"

"पीछे लौट कर मुझे छोड़ दो। मैं भी उन मृतकों के पास पड़ा रहूँगा।"

पीछे लौटना बिल्कुल असंभव है।"

"तब मुझे सहारा दीजिए। मैं आगे बढ़ने का प्रयत्न करूँगा।"

कराहता हुआ ब्राउन आगे बढ़ा।

इसी समय कर्नल का आदेश पुनः सुनाई दिया। यथासम्भव शीघ्रता से वे लंगड़ाते हुए आगे बढ़े।

कर्नल को मालूम था कि यह सुरंग वहीं खुलती है, जहाँ से झरने का पानी कलूँगा के झरने में आता है। इस समय वह तृषा-पीड़ित था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उनके आने की प्रतीक्षा न कर जल पीने के लिए वह झरने की ओर बढ़ा। उसे। यह भी विचार सूझा कि वहाँ के पहरेदार सिपाहियों की सहायता से सुरंग के सैनिकों को बाहर निकलवावे। अतएव वह खोह से बाहर निकल कर झरने को ढूँढने लगा।

थोड़ी दूर जाने पर उसे कई फिरंगी सैनिक आहत तथा मृत दिखाई पड़े उनको देखते ही उसका माथा ठनका और उसने अनुमान किया कि यहाँ पर गोरखों ने आकर युद्ध किया है। वह विकलता से छटपटाने लगा। वह दुर्घटना का हाल जानने के लिए एक सैनिक के पास बैठ गया, परन्तु वह मृत था। निराश होकर वह ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता, त्यों-त्यों उसको मृत सैनिक दिखाई पड़ने लगे। धीरे-धीरे वह झरने के पास पहुँच गया। जिधर झरने का पानी बहाया गया था, वह उसी ओर बह रहा था, और खड्ड के किनारे गोवर्धन पंडित का शव पड़ा था। आतंक से उनका हँस-मुख चेहरा आश्चर्य, विषाद और भय से विकृत हो गया था। जिस पाप को जाग्रत अवस्था में वह बड़े यत्न से छिपाए था, अब उसकी कालिमा मुखरित हो रही थी। उसकी भयानकता से कर्नल मावी भी एक बार डर कर अपने चारों देखने लगा।

अब तक स्मिथ और ब्राउन सुरंग से बाहर निकल कर सुस्ता रहे थे। उसके दूसरे सैनिक भी आ गए थे।

कर्नल को वहाँ न देखकर स्मिथ ने सिपाहियों को उसको ढूँढने का आदेश दिया। ब्राउन को वहीं सुरंग के द्वार पर बैठाकर वह भी कर्नल को खोजने लगा।

इन फिरंगी सैनिकों को झरना बन्द करने का भेद ज्ञात नहीं था। जब उन्होंने अपने देशवासियों को मृतावस्था में देखा, वे घबराए और एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

इसी समय कर्नल का कर्कश स्वर सुनाई पड़ा—"कोई सिपाही जीवित हैं या सब मारे गए?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्मिथ, जो सैनिकों के पीछे-पीछे आ रहा था, कर्नल का कंठस्वर सुन कर बोला—"यह मामला क्या है ? यहाँ भी लड़ाई हुई है क्या ?"

एक सैनिक ने उत्तर दिया—"लक्षण तो ऐसे ही मालूम होते हैं।"

वास्तविकता यह थी कि पार्वती और गौरी की निशानेबाजी से पहरे से सैनिक भाग कर इधर-उधर की खोहों, खड्डों में छिप गए थे। कर्नल माबी की आवाज पहचान कर वे अपने-अपने छिपने के स्थानों से बाहर निकले और भय विह्वल अवस्था में एकत्रित होने लगे।

कर्नल ने कर्कश स्वर में प्रथम आगन्तुक से पूछा—"यहाँ क्या हुआ है ?"

उसने डरे हुए स्वर में उत्तर दिया—"हम लोग पहरे पर तैनात थे कि अचानक उस पहाड़ी की ओर से गोलियों की बौछार होने लगी। हम लोग किसी प्रकार के आक्रमण की शंका नहीं कर रहे थे, इसलिए पहले ही आक्रमण में हमारे जवान खेत रहे। हममें से कई पहाड़ी पर उनको मारने के लिए झपटे, लेकिन उनकी संख्या हमसे कहीं अधिक थी, इसलिए पीछा करनेवाले भी मारे गए।"

कर्नल माबी की भौंहें खिंच गईं। वह अपने होंठ काटने लगा। अब उसे महसूस हुआ कि बलभद्र सिंह के साथियों को बिना मारे हुए अछूता निकल जाने से यह दुर्घटना घटी है। उसने उन सिपाहियों को सम्बोधित करते हुए कहा—"देखो, अपनी नपुंसकता का परिणाम ! तुमने बलभद्र सिंह को अछूता छोड़कर अपने ही साथियों को मरवाया है। शत्रु के साथ दया करना अपनी मौत को आमंत्रित करना होता है।"

फिर पहरे के सिपाही से पूछा—"घटना को घटे कितनी देर हुई होगी ?"

उसने जवाब दिया—"हुजूर, अभी मुश्किल से पन्द्रह-बीस मिनट बीते होंगे। अधिक से अधिक आधा घंटा !"

कर्नल माबी ने सभी सैनिकों को पंक्तिबद्ध होने का आदेश दिया। इस नई दुर्घटना से सब क्रुद्ध थे। वे जब पंक्ति में खड़े हो गए और गिनती

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बोलने लगे, तो उनकी संख्या सबको मिलाकर सत्तर निकली। उसने उनको सम्बोधित करते हुए कहा—"भाग्य से हम लोगों की संख्या सत्तर है। दुश्मन के सैनिक भी सत्तर हैं। बराबरी का जोड़ है। वे भूख और प्यास से पीड़ित हैं, उनको मारना अति सहज कार्य है। सामने की पहाड़ी पर चढ़ कर उनको ललकारो और अपने साथियों का प्रतिशोध लो।"

आदेश पाकर वे सब पहाड़ी पर चढ़ने लगे, और गोरखों की खोज में रवाना हो गए।

● ● ●

## : ३३ :

पार्वती और गौरी आशंकित होकर चारों ओर देखने लगीं। दोपहर का सूर्य मस्तक पर चमचमा रहा था। पठार के पत्थर तप्त होकर पैरों को झुलसा रहे थे।

पार्वती ने विकलता से कहा—"गौरी, हम अब बचकर नहीं निकल सकतीं। फिरंगियों की संख्या बहुत अधिक है। वे हमें घेरकर मार डालेंगे।"

"हमें अब मृत्यु से क्यों भय होना चाहिए? हमने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर ली, और गोवर्धन पंडित को यमलोक पहुँचा दिया। तूने भी अपनी मुन्डमाल पूरी कर ली, अब यदि हम मर भी जायँ तो कोई दुःख की बात नहीं है।"

"मैं मृत्यु से नहीं डरती। यदि लड़ते-लड़ते मारी जाऊँ तो मुझे बहुत खुशी होगी, किन्तु चूहों की भाँति पकड़े जाकर मरना नहीं चाहतीं।"

"जब तक हमारे पास अस्त्र हैं तब तक हम पकड़ी नहीं जा सकती।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"मुझे तो उनके कई सौ सैनिक आते हुए मालूम होते हैं। वे हमें यदि जीवित पकड़ना चाहें तो पकड़ सकते हैं। मुझे इसी का भय है।"

"आओ, तब हम भाग चलें।"

"देखती नहीं पैर कटकर लहू-लुहान हो रहे हैं। मार्ग हम अलग भूल गए हैं। इस समय दोपहर होने के कारण दिशा का भी ज्ञान नहीं हो रहा है। आगे का क्षेत्र वृक्षों से शून्य है। यदि गहरा जंगल होता तो छिपा जा सकता था, परन्तु इसका अभाव होने से हम कुछ ही देर में पकड़ ली जायँगी।"

"अरे हाँ, पारो, भागने की अपेक्षा सामने वाले साल वृक्ष पर हम दोनों छिप कर बैठ जायँ तो कैसा ?"

"वह तो एक प्रकार से अपने को कैद में डालने के समान होगा। हम बहुत शीघ्र किसी की बंदूक का लक्ष्य बन जायँगी।"

"यदि कोई उनमें ने देख ले तब। और यदि उन्होंने न देखा, या कतरा कर कहीं दूर से निकल गए, तो हम साफ बच सकती हैं।"

"इस उपाय में सभी बातें संदिग्ध हैं।

"जो निर्णय करना हो, शीघ्र करो। उनकी पदचाप नजदीक होती जा रही है।"

"तेरा मन क्या कहता है ?"

"मेरा मन पेड़ पर छिप जाने को कहता है। सेंत-मेंत में तो मरेंगी नहीं, दो चार को मारकर ही मरेंगी।"

"ठीक है, मेरी भी अब यही राय होती है। या तो मरेंगी, या बच जायँगी, किन्तु शत्रु के हाथ में जीवित न पड़ेंगी।"

"इतना तो निश्चय समझो, कि हमें वहाँ आसानी से आत्महत्या करने का अवसर मिल सकेगा, यदि कभी घटनाओं तथा परिस्थितियों से उसके लिए विवश होना पड़ा।"

पगध्वनि उत्तरोत्तर समीप आती जा रही थी। पार्वती और गौरी पेड़ पर चढ़ने के लिए आगे बढ़ीं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पेड़ के समीप पहुँच कर गौरी ने कहा—"पारो, मुझे एक दूसरी बात सूझी है, वह यह कि हम दोनों एक ही पेड़ पर न चढ़कर अलग-अलग पेड़ों पर चढ़ें, जिसमें घेरनेवालों को हम दोनों मार सकें। एक ही पेड़ पर चढ़ने से हम दोनों साथ-साथ पकड़ी जा सकती हैं, और उन पर निशाना लगाने में असुविधा रहेगी।"

"हाँ, तेरा सुझाव ठीक है। तू उस पेड़ पर चढ़ जा, और मैं इसी पर चढ़ती हूँ।"

पार्वती चढ़ने लगी और गौरी उसके समीप वाले पेड़ पर चढ़ने का उपक्रम करने लगी।

गौरी ने चिल्ला कर कहा—"पारो, तू पेड़ों पर चढ़ने में कच्ची है। पत्तियों से बीच में अपने को किसी ऊँची डाल में छिपा लेना।"

पार्वती ने एक डाल पर बैठते हुए कहा—"गौरी, यहाँ से बहुत दूर तक देखा जा सकता है। देख तो, कुछ दिखाई पड़ता है?"

गौरी ने चतुर्दिक् देख कर कहा—"अरे, ये लोग तो हमारे ही सैनिक मालूम पड़ते हैं। तुझे दिखाई पड़ा। अपनी दाहिनी ओर देख।"

"हाँ, यह तो गोरखे सिपाही ही मालूम होते हैं। फिरंगियों की कोई चाल तो नहीं है? कहीं अपने हिन्दुस्तानी सैनिकों को हमारे देश की वेश-भूषा पहना दी हो?"

"पारो-पारो, अपनी बाईं ओर तो देख, फिरंगियों का भी एक प्लाटून इसी ओर आ रहा है।"

"हाँ, ये तो फिरंगी ही मालूम पड़ते हैं। यह क्या माजरा है, कुछ समझ में नहीं आता। इधर से हमारे सैनिक आ रहे हैं, और उधर से फिरंगियों के सैनिक। दोनों में मुठभेड़ होगी।"

"फिरंगियों की सेना आने की बात तो समझ में आती है, परन्तु हमारे सैनिक क्यों और कैसे आ गए? क्या कलूँगा खाली कर दिया?"

"महाराज अमर सिंह के भेजे हुए सैनिक भी हो सकते हैं, जो हमारी सहायता के लिए कलूँगा जा रहे हों।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"परन्तु इधर से क्यों जायेंगे ? इधर कलूँगा का पिछवाड़ा है। हम भी उसके पिड़वाड़े से आई हैं और फिरंगी सिपाही भी हमारा पिछा करते हुए उधर से आ रहे हैं।"

"हाँ, इसमें कोई भेद मालूम पड़ता है। संभव है, हमारे सैनिक सुरंग के रास्ते से गढ़ में प्रवेश करना चाहते हों, क्योंकि सामने फिरंगियों की सेना पड़ी हुई है। उनसे लड़े बिना वे नहीं जा सकते।"

"कुछ ऐसी ही बात मालूम पड़ती है। अब तो दोनों ही सेनाएँ बहुत समीप आ गई हैं, और फिरंगियों ने उन पर आक्रमण कर दिया है।"

"अरे, हमारे सैनिकों ने भी प्रत्याक्रमण कर दिया। अरी देख, दोनों ओर के सैनिक भिड़ गए हैं। हमारे सैनिक किस खूबी से खुखुड़ियों से फिरंगियों को काट रहे हैं। फिरंगियों की संगीनें कोई करतब नहीं दिखा रही हैं।"

"पारो, जरा गौर से देख, हमारे जिस सैनिक ने अभी-अभी उस लालवर्दी बाले फिरंगी के दो टुकड़े किए हैं, वह मुझे कुछ-कुछ पहचाना मालूम पड़ता है।"

"अरी गौरी, यह तो महराज बलभद्र सिंह जी मालूम पड़ते हैं।"

"वेष-भूषा तो वही है। शक्ल-सुरत भी उसने मिलती है। यदि वह उनका कोई साग भाई नहीं है, तो वह गढ़ छोड़कर यहाँ कैसे आ गए ? इस प्रश्न का क्या समाधान है ?"

"मेरी समझ में भी कुछ नहीं आता ?"

"पारो, और देख, उनके दाहिने जो दो-दो फिरंगियों से दोनों हाथों में भुजाली लिए लड़ रहा है, वह तो तेरा मंगेतर मालूम पड़ता है। उन्होंने दोनों को मार गिराया, और तीसरे से भिड़ गए हैं। अब साफ-साफ चेहरा दिखाई पड़ने लगा है। पारो वही हैं, वही है। पहचाना क्या ?"

"व्यर्थ क्यों बक-बक करती है। इनमें कुछ हमारे कलूँगा के सैनिक है, और शेष दूसरे हैं, जिनको पहचान नहीं सकती। वे हमारे लिए पूर्णतः अपरिचित हैं, संभवतः महराज अमर सिंह की भेजी कुमक के सैनिक है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"तब हमको भी युद्ध में प्रवृत्त होना चाहिए।"

"निस्सन्देह उतरो, हम भी फिरंगियों को मारें?"

"पारो, अभी उतरो नहीं, यहीं से फिरंगियों का आखेट करो।"

"उतनी दूर तक हमारी बन्दूक की गोली नहीं पहुँच सकती।"

"युद्ध वहीं स्थिर नहीं रहेगा। उनमें से कुछ जान बचाने के लिए इधर भाग कर आएँगे। हम क्यों न यहीं से आखेट करें। जब हमारी बन्दूक की मार में आ जावें, हम उन्हें भून डालें।"

"हाँ यह उपाय सर्वोत्तम है। हमारे अचानक पहुँच जाने में संभव है, कि उनका ध्यान बट जावे, और शत्रु को अवसर मिले भाग जाने का। हम इनमें से एक को भी जीवित जाने नहीं देंगी।"

"अरे, फिरंगी मैदान छोड़ कर भागने लगे। इनमें कोई दम नहीं है। भगोड़े हैं भगोड़े। जहाँ इनके दो-चार सैनिक मरे, वहाँ उनकी हेकड़ी पानी भरने लगती है। किन्तु हम उन्हें भाग कर प्राण बचाने नहीं देंगी। जब तक वे कटेंगे नहीं, तब तक उनकी संख्या कैसे घटेगी?"

"देखो, महाराज बलभद्र सिंह पर वह फिरंगी पीछे से वार कर रहा है।" "अब तेरा मँगेतर वहाँ पहुँच गया, और उन्होंने खुखुड़ी से उसका हाथ ही काट गिराया। संगीन मय हाथ के नीचे गिरी, और वह गिरकर छटपटा रहा है।"

"मैं होती तो उसका काम तमाम कर देती। मैं शत्रु को भी छटपटाते नहीं देख सकती। शत्रु को मौत के घाट उतार कर ही दम लेती हूँ।"

"अब यह विद्या अपने मँगेतर को भी सिखा देना।" गौरी ठहाका मार कर हँस पड़ी।

"अरी, इस मौके पर तो हँसी-मजाक से बाज आ।"

"जब अपने पर बीती तो चिटकने लगी।"

"बकवास न कर। देख महाराज ने एक साथ दो-दो फिरंगियों को मार गिराया है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"महाराज के पीछे अब नाहर सिंह आ गया है। वह भी अपने हाथ दिखा रहा है। देखो, किस सफाई से उसने फिरंगी की संगीन के नीचे घुसकर उसका पेट फाड़ डाला। बन्दूक और संगीन लिए हुए वह धूल चाटने लगा।"

"यह तो बता, हमारे कलूँगा गढ़ के सब सैनिक कैसे आ गए?"

"इसका क्या उत्तर दूँ, मैं स्वयं नहीं जानती, और यह पहेली मैं सुलझा नहीं सकती।"

"मेरा अनुमान है कि जब महाराज को कुमक आने का समाचार मिला होगा, तब वह उनको गढ़ में ले जाने के लिए हमारी वाली सुरंग से अथवा किसी अन्य सुरंग से आए होंगे, और....।"

"तेरी बात ठीक जँचती है। ऐसा ही कुछ हुआ है।"

"किन्तु एक बात है कि इतने आदमी क्यों उन्हें लेने आवेंगे। गढ़ को जैसी हालत में हमने छोड़ा था, उससे महाराज गढ़ नहीं छोड़ सकते थे। यही काम किसी अन्य विश्वासी भृत्य से बखूबी करवा सकते थे।"

"हमें तो महाराज, तेरा मँगेतर, नाहर सिंह, शेर सिंह, खड्ग बहादुर सभी योद्धा दिखाई दे रहे हैं। कोई गहरा रहस्य है? क्या गढ़ छोड़ दिया, अथवा....।"

इसी समय पार्वती ने चिल्ला कर कहा—"गौरी देख, वह फिरंगी इधर ही आ रहा है। मैं निशाना साधती हूँ।"

"पारो, तू ठहर मुझे मारने दे।"

उसके पहले ही पार्वती ने बन्दूक दाग दी। प्राणरक्षा के लिए भागता हुआ फिरंगी सैनिक अपनी प्राण-रक्षा नहीं कर सका। पार्वती के अचूक निशाने से वह मुँह के बल गिरा और तत्क्षण मर गया।

गौरी ने चिढ़े हुए स्वर में कहा—"मेरी बात तूने नहीं मानी। स्वयं गोली मारकर उसे गिरा दिया। अब सबको तू ही अकेले मार, मैं गोली नहीं चलाऊँगी।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"अरी बिगड़ती क्यों है। दूसरा भी तो इधर ही भागा आ रहा है। तू इसे बीन ले।"

"इसे भी तू ही मार, मैंने बन्दूक चलाने की सौगन्ध ले ली है।"

"मैं बन्दूक चलाती हूँ, फिर मुझे दोष न देना।"

"कह दिया कि मैं बन्दूक नहीं चलाऊँगी।"

पार्वती ने फिर लक्ष्य वेध किया, और वह किरंगी भी भूलुंठित हुआ।

पार्वती बन्दूक भरने लगी।

गौरी रूठ कर पेड़ से नीचे उतरने लगी। पार्वती ने उसे उतरते देख कर पूछा—"नीचे क्यों उतर रही है?"

गौरी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

पार्वती ने फिर पूछा—"गौरी, जवाब क्यों नहीं देती?"

"किस बात का उत्तर पूछती हो?"

"सुना नहीं, क्या? मैं पूछती हूँ कि तुम नीचे क्यों उतर रही हो?"

"क्या वहाँ बैठे-बैठे तमाशा देखूँ?"

"तमाशा क्यों देखेगी? शत्रुओं को क्यों नहीं मारती?"

"तू मुझे बन्दूक चलाने नहीं देगी। अकेले तू ही गोली चलाती है; मुझे अवसर ही नहीं देती।"

"मैंने कहा था कि दूसरे पर गोली चला। जब तूने बन्दूक नहीं चलाई तब मुझे मारना पड़ा।"

"मैं नीचे जाकर खुखड़ी से लड़ूँगी, तू बैठे-बैठे गोली चला।"

"तब मैं भी उतरती हूँ"

अब तक गौरी उतर कर भूमि पर आ गई थी। पार्वती भी शीघ्रता से नीचे उतरने लगी, किन्तु पेड़ों पर चढ़ने-उतरने का अभ्यास न होने के कारण, उसका पैर उस समय चूक गया, जब पृथ्वी से थोड़ा ही फासला रह गया था, और वह गिर पड़ी। गिरने के शब्द से दौड़कर जाती हुई

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गौरी ने मुड़कर पीछे देखा और पार्वती को भूमि पर पड़ी देखकर उलटे पैरों वापस आई। पार्वती को मूर्छित देख वह हाय-हाय करती हुई वहीं बैठ गई।

○ ○ ○

## : ३४ :

बलभद्र सिंह और उनके सैनिकों ने जब छक कर पानी पिया, उनकी मुरझाई हुई शक्ति उसी प्रकार चैतन्य होने लगी जैसे कुम्हलाया नागवल्लरी का पत्ता जल से हरा-भरा हो जाता है। उन्होंने मान बहादुर की ओर देखते हुए पूछा—"कहो, अब क्या इरादा है ? युद्ध करोगे ?"

"मैं तैयार हूँ। आपका क्या विचार है ?"

"नाहर सिंह, तुम क्या कहते हो ?"

"जो महाराज की आज्ञा हो।"

बलभद्र सिंह विचारमग्न हो गए। शेष सब उनका मुख निहारने लगे। थोड़ी देर बाद बलभद्र सिंह बोले—"हमारा धर्म तो यही कहता है कि हम युद्ध करें, और इसी इरादे से हमने गढ़ छोड़ा है। परन्तु हमें अन्य बातों पर ध्यान देना उचित है। प्रथम यह कि हम पलायन नहीं कर रहे हैं। शत्रु को छाती पर पैर रखते हुए आए हैं, और हमें रण में ललकारने का उन्हें साहस नहीं हुआ। इसलिए इसे पलायन नहीं कहा जा सकता। दूसरे यह कि हमने न पराजय मानी और न किसी प्रकार दीनता दिखाई है। अर्जुन की भी यही प्रतिज्ञा थी–'न दैन्यं न पलायनं।" हमने उसका पूर्णतः निर्वाह किया है, अतएव इन दोनों अपवादों से हम सर्वथा मुक्त हैं।"

यह कह वह अपने साथियों का मुख निरखने लगे। मान बहादुर ने कहा—"महाराज, हम तो अब भी युद्ध करना चाहते हैं। इन थोड़े फिर-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गियों को हम कुछ ही पलों में यमालय पहुँचा देने की शक्ति रखते हैं। आप आज्ञा दीजिए, फिर हमारी भुजाली के करतब देखिए।"

वलभद्र सिंह ने धीमे स्वर में कहा--"मान बहादुर, युद्ध केवल वीरता से नहीं जाते जीते। कौशल की भी उतनी ही आवश्यकता होती है, जितनी वीरता की।"

मान बहादुर—"महाराज, आमने-सामने के युद्ध में कौशल तो रण में शत्रुओं को मार कर ही दिखाया जा सकता है। किसी अन्य प्रकार के कौशल की बात मेरी समझ में नहीं आती।"

वलभद्र सिंह—"नहीं मान बहादुर, कौशल परिस्थितियों के अनुसार दिखाया जाता है। प्रत्येक परिस्थिति से लाभ उठाने का नाम कौशल है। यह ठीक है, हम लड़कर अपना युद्ध-कौशल दिखा सकते हैं, किन्तु यह भी देखना चाहिए कि लड़कर क्या हम पूर्ण विजय प्राप्त कर सकते हैं?"

मान बहादुर— 'इन मुट्ठी भर फिरंगियों को काट डालना हमारे बाएँ हाथ का खेल है। एक ही घड़ी में हम पूर्ण विजय प्राप्त कर लेंगे।"

"मैं तुम्हारे उत्साह को भंग नहीं करना चाहता, किन्तु क्या यह विजय पूर्ण विजय होगी?"

"इनको हाथों-हाथ मार कर हम 'जयंतक' दुर्ग की ओर चल देंगे।"

"क्या तुम्हारे सैनिकों का नाश नहीं होगा?"

"हो सकता है। अधिक-से-अधिक दस-बीस सैनिक खेत रहेंगे।"

यही अन्तिम युद्ध नहीं है। अभी तो युद्ध का श्रीगणेश ही हुआ है। फिरंगियों ने हमारे देश पर चार दिशाओं से चढ़ाई की है। उनके सैनिकों की संख्या भी हमारे देश की समग्र सैन्य शक्ति से चार गुनी है। हमारे पास अस्त्र-शस्त्रों की भी बहुत कमी है। हमारा बल केवल मनुष्य और उनकी वीरता का है। अतएव उसकी रक्षा करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है।"

मानबहादुर ने रूठे हुए स्वर में कहा--"क्षमा कीजिएगा महाराज,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यदि युद्ध न कर उनकी अधीनता स्वीकार कर लें, तब हमारे सभी सैनिक बचे रहेंगे तथा किसी अन्य अवसर पर वे काम आएँगे।"

मान बहादुर की कटूक्ति सुनकर बलभद्र सिंह मुस्कराने लगे।

वह बोले--"मान बहादुर, तुम उत्तेजित हो और युवा होने के कारण तुम में सभी प्रकार के आवेगों का बहुलता से समावेश है, इसलिए नीति और युक्ति का स्पष्ट दर्शन तुम नहीं कर रहे हो। हमारा ध्येय फिरंगियों को पराजित करना है। वे पराजित तभी हो सकते हैं, जब उनकी शक्ति क्षय हो जाय। शक्ति उनकी क्षय होगी, कई वर्षों के अनवरत परिश्रम तथा धैर्य और लगन से। युद्ध में जितने धैर्य की आवश्यकता होती है, उतनी किसी अन्य उद्योग में नहीं। परिश्रम करनेवाले मनुष्य ही हो सकते हैं। मानव शक्ति ही सर्वोत्तम शक्ति है, अतएव उनकी यथासंभव रक्षा करना सेनापति का परम धर्म है।"

"परन्तु महाराज.....।"

"जरा ठहरो, अपनी बात तुम बाद में कहना। इस समय सेनापति होने के कारण मेरा धर्म है कि शत्रु का हनन करते हुए हम जितने अपने सैनिक बचा सकें उतने ही समय तक उनसे युद्ध कर सकेंगे। हमारे तीन सौ जवानों में इस समय केवल सत्तर बचे हैं। जलकष्ट से हमारी दो-तिहाई सेना मारी गई है। इस समय लड़कर हम उनके थोड़े सिपाही मार सकेंगे, और यह भी निश्चय है कि उनकी सहायता के लिए दूसरे हजारों फिरंगी आ जायेंगे। परिणाम आत्मघात के अतिरिक्त और कुछ नहीं होगा। वस्तुतः यह युद्ध नहीं आत्मघात होगी, इसीलिए हमें जब भगवान ने अवसर दिया है निकल जाने का, तब क्यों न उससे लाभ उठाया जाय। मान बहादुर अब तुम अपना सन्देह निवारण कर सकते हो।"

मान बहादुर—"आपके कथन में औचित्य है, परन्तु लोकलाज का भी ध्यान रखना चाहिए। संसार यही कहेगा कि सत्तर गोरखे जान बचाने के लिए युद्ध से मुख मोड़ कर भाग गए।"

बलभद्र सिंह--"ठीक है, लोकलाज का भय तब होना चाहिए जब हम रण से मुँह मोड़ रहे हैं। किन्तु हम विषम परिस्थितियों से निकल कर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुनर्युद्ध के लिए तैयार हो रहे हों। फिरंगियों से हार कर हम कोई सन्धि नहीं कर रहे हैं। तोप के गोलों से बचने के लिए यदि सैनिक भाग कर किसी रक्षा-स्थान में जाता है, तो क्या वह भीरुता कहलाएगी? तुम्हारे कथनानुसार क्या तुम अपनी सेना को तोप के मुख में झोंक देने को वीरता कहोगे?"

मान बहादुर निरुत्तर होकर पृथ्वी की ओर देखने लगा।

बलभद्र सिंह ने मान बहादुर को सान्त्वना देने के उद्देश्य से कहा—"जय-पराजय मस्तिष्क की वस्तु है। जब तक हृदय पराजय स्वीकार नहीं करता, वह मृतप्राय हो जाने पर भी पराजित नहीं कहा जा सकता। उद्योग करके वह पुनः विजयी हो सकता है। अनवरत संघर्ष से अग्नि प्रज्वलित होती है। यदि हम अपनी रक्षा यहाँ से बिना लड़े-भिड़े कर लेते हैं, तो हम पराजित नहीं हुए और न इसमें हमें लोकलाज का भय होना चाहिए। इसे तो विज्ञ जन चातुर्य की संज्ञा देंगे।"

मान बहादुर—"मेरी समझ में आ गया। आप आज्ञा दीजिए हम सब उसका यथावत् पालन करेंगे।"

बलभद्र सिंह—"हमारे साहस और शौर्य से फिरंगी अप्रतिभ हो गए हैं। वे अब भी हमारे ऊपर आक्रमण नहीं कर रहे हैं। इसे मैं पशुपतिनाथ की माया मानता हूँ। उन्होंने फिरंगियों को सम्मोहित कर हमें साफ निकल जाने का अवसर प्रदान किया है। यह बड़ा शुभ लक्षण है। इससे संकेत मिलता है कि अन्त में हमारी ही विजय होगी।"

मान बहादुर—"तब हम लोग सामने के जंगल में प्रविष्ट हो कर 'जयंतक' दुर्ग की ओर प्रस्थान करें।"

"अवश्य! आओ ब्रह्माण्ड के स्वामी पशुपतिनाथ की जयकार करते हुए हम प्रस्थान करें। यदि शत्रु हमें ललकारता है, तब हम अवश्य युद्ध करेंगे, और यदि वह इसी प्रकार मन्त्रमुग्ध रहता है, और कोई छेड़छाड़ नहीं करता, तब हम आगे प्रस्थान करेंगे।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पशुपतिनाथ की जयकार के साथ ही बलभद्र सिंह अपनी खुखुड़ियों को सूर्य के प्रकाश में चमकाते हुए वन-प्रदेश में प्रवेश कर अदृश्य हो गए।

○ ○ ○

## : ३५ :

जंगल के गुह्य भाग में प्रवेश करने पर एक झरने को बहता देखकर सब पुनः अपनी प्यास बुझाने के लिए ठहर गए। जल पीने के बाद बलभद्र सिंह ने कहा—"मित्रो, हम लोग तीन दिनों से भूखे भी हैं। आगे का मार्ग बड़ा जटिल है। सूखा पहाड़ी प्रदेश है, जहाँ खाद्य वस्तुओं का सर्वथा अभाव है। यह प्रदेश कंद मूल-फलों से परिपूर्ण है। शुद्ध जल की भी प्रचुरता है। यहीं पर हम लोग विश्राम करें, और जो वस्तुएँ खाने योग्य मिल सकें, एकत्रित कर उदर भर लेवें। कहिए, आप लोगों का क्या मत है?"

नाहर सिंह ने तुरन्त इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया। दूसरों ने भी अपनी स्वीकृति प्रदान की।

किन्तु मान बहादुर ने कहा—"अभी हम बहुत दूर नहीं आए हैं, संभव है कि शत्रु हमारा पीछा करता हुआ आ जाय।"

बलभद्र सिंह—"प्रथम तो वे आएँगे नहीं। और यदि आ भी जाते हैं, तो हम युद्ध करेंगे। इस गहन वन तक उनका पहुँचना लगभग असंभव-सा है। फिरंगी मैदानों में ही लड़ सकते हैं—अपनी तोपों की सहायता से।"

मान बहादुर—"जी हाँ, उनकी तोपें यहाँ नहीं आ सकतीं।"

बलभद्र सिंह—"जब तोपें नहीं आ सकतीं, तब वे भी नहीं आ सकते। हमारी इस भूमि पर हमें कोई पराजित नहीं कर सकता। गगनचुम्बी वृक्ष, कँटीली झाड़ियाँ, पथरीली भूमि हमारी तोपें हैं, जिनके समक्ष वे उसी प्रकार निरुपाय हैं, जैसे हम तोपों के सम्मुख रहते हैं।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मान बहादुर—"बेशक वे इस क्षेत्र में प्रवेश करने का साहस भी नहीं कर सकते।"

बलभद्र सिंह—"फिर भी युद्ध-नीति कहती है कि हमें अपनी रक्षा का प्रबन्ध कर लेना उचित है। कभी-कभी इसमें किञ्चित् भी असावधानता विजय को पराजय में परिणत कर देती है।"

मान बहादुर—'बहुत उचित बात है। हमें नाकों पर सिपाहियों को दृष्टि रखने के लिए बैठा देना चाहिए।"

बलभद्र सिंह—"सैनिकों की संख्या अल्प है, और खाद्य भी अपने जवानों के अनुपात से संग्रह करना है, इसलिए जिधर से हम लोग आए हैं, अर्थात् दक्षिण दिशा में ही अपने सैनिकों का पहरा बैठा देना पर्याप्त होगा।"

मानबहादुर ने उस परामर्श के अनुसार दक्षिण दिशा में पहरे का प्रबन्ध कर दिया, और उन सैनिकों को, जिन्हें वनस्पति तथा कन्द-मूल पहचानने का ज्ञान था, खाद्य संग्रह करने के लिए भेज दिया। शेष जल-कुंड के चारों ओर बैठकर आगामी कार्यक्रम पर मंत्रणा करने लगे।

अभी खाद्य-सामग्री इकट्ठा हो रही थी कि एत्तर दिशा में कई व्यक्तियों की पगध्वनि तथा वार्तालाप का स्वर सुनाई पड़ा। ऐसा प्रतीत होता था कि कई सौ व्यक्ति आपस में बातें करते तेजी से चले आ रहें हैं। वायु-तरंगें यद्यपि शब्दों की झंकार उन तक पहुँचा रही थीं किन्तु भाषा अस्पष्ट थी। बलभद्र सिंह के कान खड़े हुए और उन्होंने विकल स्वर में कहा—"मानबहादुर, मेरा अनुमान गलत निकला। शत्रु आ पहुँचा।"

मानबहादुर ने कमर कसते हुए कहा—"दो-दो हाथ लड़ने के लिए हमारे भी हाथ खुजला रहे हैं। अभी सब सैनिकों को बुलाता हूँ।"

"मानबहादुर, अभी अधीर न हो। किसी को भेजकर पता लगाओ कि आगन्तुक कौन है। उत्तर से आनेवालों में या तो जेनरेल आक्टरलोनी के सैनिक, या महाराजा अमर सिंह के भेजे हुए सैनिक हो सकते हैं, जो हमारी सहायता के लिए आ रहे हों।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"वे चाहे जो भी हों, हमें मुकाबले के लिए तैयार रहना चाहिए।"

"ठीक है, सावधानी आधी विजय है।"

मान बहादुर ने कुछ चतुर और फुर्तीले सैनिकों को उत्तर दिशा की ओर दौड़ा दिया। वे पेड़ों पर चढ़कर उन्हें देखने के प्रयत्न में लग गए।

वस्तुतः वे महाराणा अमर सिंह के भेजे हुए सैनिक थे, जो कलूँगा गढ़ की रक्षा के लिए जा रहे थे।

थोड़ी ही देर में निर्णय हो गया। टोह लेने वाले सैनिकों ने बताया कि वेश-भूषा से आगन्तुक गोरखे मालूम पड़ते हैं।

बलभद्र सिंह का मुख उद्दीप्त हो गया। समवेत सैनिकों ने पशुपति-नाथ की जय-जयकार की।

अब तक आगन्तुक भी वन-प्रदेश में प्रवेश कर चुके थे। जहाँ उन्होंने पशुपतिनाथ की जयकार सुनी, वे भी प्रत्युत्तर में जयकार करने लगे।

बलभद्र सिंह ने मान बहादुर से कहा—"अब हमारा सन्देह-निवारण हो गया, सत्य ही महाराजा की भेजी कुमक आ गई। सबको एकत्रित कर उनके स्वागत के लिए हमें तुरन्त चल देना चाहिए।"

अपनी की हुई जयकार का प्रत्युत्तर पाकर बलभद्र सिंह के सैनिकों में में-नवोत्साह प्रवाहित होने लगा। वे खाद्य सामग्री इकट्ठा करना भूल गए और उनके स्वागत के लिए चल दिये। रास्ते भर वे पशुपति नाथ की जय बोलते जाते थे, उन्हें और उसका उत्तर बराबर मिल रहा था। जब वे दिखाई देने लगे तथा बलभद्र सिंह ने ठेठ गोरखाली में पूछा—"आप लोग कहाँ से आ रहे हैं, और किधर जा रहे हैं?"

उनमें सबसे आगे चलने वाले व्यक्ति ने बलभद्र सिंह का चरण स्पर्श किया और कहा—"आप क्या मुझे पहचानते नहीं? मैं महाराजा अमर सिंह का अनुचरण विक्रम सिंह हूँ। मुझे तीन सौ सैनिकों के साथ महा-राजा ने आप की सहायता के लिए भेजा है। कहिए आप लोग कैसे आ गए? क्या कलूँगा.....?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बलभद्र सिंह ने उत्तर दिया—"हाँ भाई, कलूँगा ध्वस्त हो गया हमें मजबूरन उसे छोड़ना पड़ा ?"

"कलूँगा ध्वस्त हो गया !"

"हाँ भाई, कलूँगा ध्वस्त हो गया। हमारे दो सौ से अधिक सैनिक और कई सौ स्त्रियाँ तथा बच्चे भी प्यास से तड़प-तड़प कर कालकवलित हुए, किन्तु हम फिर भी पराजित नहीं हुए। उनके व्यूह के मध्य से हम साफ निकल आए, और अब हम लोग जयंतक दुर्ग की ओर जा रहे हैं।"

"प्यास से पीड़ित होकर मरने की बात समझ में नहीं आती।"

बलभद्र सिंह ने अपनी कहानी सुनाकर कहा—"जब हमारे जीवन की कोई आशा नहीं रह गई, हम जान पर खेल गढ़ का सिंह द्वार खोलकर बाहर निकले, और गढ़ के नीचे बहने वाले झरने में प्यास बुझाई, और शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा करते रहे। जब शत्रु ने हम पर आक्रमण नहीं किया, तब हमने जयंतक दुर्ग की ओर प्रस्थान कर दिया। फिरंगियों ने न कोई रुकावट डाली और न हममें से किसी को छेड़ा ही। वे मन्त्रमुग्ध की भाँति हमें टुकुर-टुकुर देखते रहे। जब उन्होंने छेड़छाड़ नहीं की, तब हमने भी उन्हें नहीं ललकारा और चले आए। हम भागे नहीं, अपनी चाल से चल कर आये हैं।"

रणविक्रम सिंह और उनके सैनिक सब हाल सुनकर चकित रह गए।

मान बहादुर ने कहा—"मेरी इच्छा थी कि शत्रुओं को कुछ मजा चखाते चलें, परन्तु महाराज की अनुमति नहीं मिली।"

रणविक्रम सिंह ने उत्तर दिया—"महाराज का परामर्श सर्वथा उचित था। हमें इस समय अधिक से अधिक सैनिकों की आवश्यकता है। मैं महाराजा अमर सिंह का सन्देश लेकर आया हूँ कि हमें कलूँगा छोड़ देना चाहिए, और फिरंगियों को पहाड़ों में प्रवेश करने का मार्ग दे देना चाहिए, ताकि हम उन्हें घेर कर मार सकें। पहाड़ी प्रदेश में उनकी तोपें चढ़ाई नहीं जा सकतीं, और इस प्रकार उनको तोपों की सहायता के बिना लड़ने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"यदि आप तीन दिन पहले पहुँच जाते, तो हमारे सैनिक बच जाते।"

"उधर आक्टरलोनी हमें दबाता हुआ चला आ रहा है। उसने कई पहाड़ी राजाओं को मिला लिया है। महाराजा ने भी इसी नीति को ग्रहण किया है। जब फिरंगियों का दबाव नालगढ़ और तारागढ़ में बढ़ गया, वह रामगढ़ अपने सैनिकों के साथ चले गए और वहाँ युद्ध कर रहे हैं। दो बार फिरंगियों को भगा चुके हैं, और इस प्रकार जब उनका खतरा दूर हो गया, तब उन्होंने हमें आपकी सहायता के लिए इस सन्देश के साथ भेज दिया।"

"अब हमें कहाँ जाने का आदेश मिला है, जयतक दुर्ग अथवा और कहीं?"

"आप लोगों को अब यहाँ से सीधे बनारस होते हुए काठमांडू जाना है। मार्ग में हमें सुलीवान उड और मारले की सेनाओं से भी टक्कर लेनी है।"

"ठीक है, हम उधर ही चलेंगे, गढ़वाल प्रदेश की रक्षा का क्या प्रबन्ध किया है?"

महाराजा ने गुमान सिंह की मातहती में एक हजार जवानों को श्रीनगर भेज दिया है। चूंकि बनारस और गोरखपुर की तरफ फिरंगियों का दबाव अधिक है, इसलिए उनको रोकने के लिए आपको और मुझको आदेश दिया है।"

"बहुत ठीक, हम यहाँ से पूर्व दिशा की ओर प्रस्थान करेंगे। हम लोग तीन दिन से भूखे-प्यासे हैं। पानी तो हमने जी भर पी लिया है, और खाने के लिए कन्द-मूल इकट्ठा करवा रहे थे कि आप आ गए। वन की प्रसादी लेकर हम आगे बढ़ेंगे। आइए आप भी....।"

"हम लोग भोजन कर चुके हैं। हमारे पास पर्याप्त मात्रा में प्याज तथा रोटियाँ हैं। यदि अन्न खाने की इच्छा हो तो खाइए।"

"अवश्य। आगे किसी गाँव में.....।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"आप फिक्र न कीजिए। भगवान् पशुपतिनाथ जब सहायक हैं, तब सब प्रकार का प्रबन्ध अपने आप होता जाएगा। आइए, भोजन कीजिए।"

भोजन करते समय वे अपना कार्यक्रम विचारते रहे। लगभग आध घंटे बाद वे बनारस की ओर रवाना हो गए।

● ● ●

## : ३६ :

पार्वती की चेतना बहुत शीघ्र वापस आ गई। चोट कोई सांघातिक नहीं थी, केवल शरीर के कुछ अंगों में सहसा गिर जाने से ठसका लगा था, और उसी के कारण वह कुछ क्षणों के लिए स्तंभित-सी हो गई थी। किन्तु गौरी उसको अचेत देख कर सहम गयी थी।

पार्वती को आँखें खोलते देखकर गौरी के होश-हवास जो गुम हो गए थे, अपनी स्वाभाविकता पर आ गए। उसने उसकी पीठ सहलाते हुए कहा—"क्या हो गया था तुझे ?"

पार्वती ने उठते हुए कहा—"उतरते समय न-मालूम कैसे पैर फिसल गया, और सँभलने के पहले ही सहसा गिर पड़ी।"

"कहीं चोट लगी ?"

"कमर में कुछ दर्द मालूम पड़ता है।"

"तू कमर के बल गिरी है, इसलिए वह दर्द करती है। उठाऊँ, चल तो सकेगी ?"

पार्वती अपने अंगों को घुमा-फिरा कर देखने लगी। थोड़ी देर बाद कहा—"कमर में कसक तो है ही, किन्तु चल सकूँगी।"

"यदि दौड़ने का अवसर आ पड़े, तब ?"

"शायद दौड़ भी सकूँगी, लेकिन·····।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"लेकिन क्या ? लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, उठ, बहुत बन नहीं। अपने मँगेतर को देखकर ···।"

"चुप कलमुँही। सावन के अन्धे को सदैव हरेरी ही सूझती है। ऐसा मालूम होता है कि मेरा मंगेतर तेरे ध्यान में बसा हुआ है, जो तू उन्हें बार-बार मेरे मिस से याद करती रहती है।"

गौरी ने उसकी पीठ पर धौल लगाते हुए कहा—"तू भी मुझे पाप लगाने में नहीं चूकती। मैं कोई अवैध प्रसंग तो नहीं उठाती ?"

"मैं कब कोई अवैध बात कहती हूँ। कह तो चुकी हूँ, तुझे अपनी सौत बना कर दम लूँगी।"

इसी समय बन्दूक दगने का शब्द हुआ। दोनों चौंक कर चारों ओर देखने लगीं।

इसी अन्तर में पाँच-छ बार बन्दूकें दगीं।

गौरी ने पार्वती को ठेलते हुए कहा—"उठ, मालूम होता है शत्रु की नयी कुमक आ गयी है, जो हमारे सैनिकों पर आक्रमण कर रही है।"

"हाँ, मालूम तो ऐसा ही होता है।"

"उठो, हम भी इसमें भाग लें। सुन, सुन, हमारे सैनिक भी बन्दूक का उत्तर बन्दूक से दे रहे हैं।"

बन्दूकों के चलने से वह पठार कोलाहलमय हो गया। पशु-पक्षी भयभीत होकर भागने लगे। पार्वती उत्तेजित होकर उठी और गौरी से बोली—"आओ हम दोनों भी इस पुण्ययज्ञ में भाग लेवें।"

"इतने फिरंगियों को मार कर भी तेरा जी नहीं भरा ?"

"बक-बक न कर चली आ।"

दोनों युद्धक्षेत्र की ओर अग्रसर हुईं। एक पत्थर के पीछे खड़ी हो कर वह युद्ध देखने लगीं। कर्नल माबी के कुछ सैनिक जो अन्य दिशाओं में गौरी और पार्वती को ढूँढ़ने गए थे, युद्ध के हा-हाकार तथा पशुपतिनाथ की जयकार सुनकर आ गए थे, और साथियों की सहायता में जुट गए थे। जहाँ गौरी और पार्वती खड़ी थीं, वहाँ से युद्ध का दृश्य स्पष्ट दिखायी पड़ता था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गौरी ने पार्वती का हाथ दबाते हुए कहा—"पार्वती, तू इस गोरे को मार जो अपनी बन्दूक इधर कोने में भर रहा है, और उसके समीप-वाले को मैं लेती हूँ।"

पार्वती और गौरी ने निशाने साधे तथा एक साथ बन्दूकें दाग दीं। दूसरे क्षण वे दोनों भू-लुंठित होने लगे।

अब फिरंगियों ने देखा कि उनके पीछे से भी आक्रमण आरम्भ हो गया है। वे प्राणरक्षा के लिए उधर ही भागने लगे, जिधर से आए थे।

पार्वती ने आड़ की जगह छोड़ते हुए कहा—"जल्दी आओ, हम इनका पीछा करें। इनमें से एक भी जीवित न जाने पाए।"

वे पुनः दौड़ने लगीं। जब वे गोली की मार में आ गए, पार्वती ने, जो इस अवसर में दौड़ते हुए अपनी बन्दूक भर चुकी थी, सबसे पीछे वाले फिरंगी को मार गिराया।

पार्वती बन्दूक भरने लगी। गौरी बोली—"अब बन्दूक से काम नहीं निकलेगा। आओ हम लोग भुजाली से लड़ें।"

"अरी मूर्ख, पहले तू अपनी बन्दूक तो भर ले। दूर की मार में तो बन्दूक ही काम आएगी। भगोड़ों को कहाँ तक दौड़-दौड़ कर मारा जायगा। चल, जल्दी कर।"

दोनों अपनी-अपनी बन्दूकें भरने लगीं। बन्दूकें भरती हुई भी उनकी दृष्टि रणक्षेत्र पर थी।

पार्वती ने कहा—"गौरी, मैदान तो खाली हो गया करीब-करीब केवल दस-बारह फिरंगी शेष बचे हैं।"

गौरी ने चिल्ला कर कहा—"अरी पारो देख, देख। वे सब मिल-कर महाराज पर आक्रमण कर रहे हैं। तू इस लाल कुर्तावाले को ले जो निशाना साध रहा है महाराज पर, और मैं उसके समीप वाले को लेती हूँ।"

गौरी की चेतावनी समाप्त भी नहीं हुई थी कि दोनों की बन्दूकें एक साथ दगीं, और दोनों भूमि पर लोटने लगीं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बन्दूक चलाने के बाद ही गौरी रण-क्षेत्र में प्रविष्ट होने के लिए दौड़ने लगी। पार्वती ने भी उसका अनुसरण किया। वें दोनों उस समय पहुँचीं जब दो फिरंगी अपनी किरिचों से बलभद्र सिंह को वेधने के लिए आगे बढ़ रहे थे। मान बहादुर दूसरे फिरंगियों को मारने में जुटा था।

रणचंडी की भाँति हुँकारते हुए पार्वती और गौरी ठीक उस समय पहुँचीं, जब वे बलभद्र सिंह को दो ओर से अपनी किरिचों द्वारा विद्ध करने जा रहे थे। उन दोनों ने पशुपतिनाथ की जय बोलते हुए उनकी भुजाओं को अपनी-अपनी खुखुड़ियों से काट कर गिरा दिया।

बलभद्र सिंह अपने प्राणरक्षकों को देखकर क्षण भर के लिए स्तंभित-से हो गए और बोले—"कौन, पुरुषवेष में क्या गौरी और पार्वती हैं ?"

दोनों उनके चरणों में प्रणाम करती हुई बोलीं—"हाँ, महाराज।"

"तुम यहाँ कैसे ठीक उस समय प्रकट हुईं, जब शत्रु मेरे प्राण····।"

पार्वती ने उत्तर दिया—"महाराज, आपने हम दोनों को अपने शरीर-रक्षक के पद पर प्रतिष्ठित किया था। भगवान् ने आपकी शरीर-रक्षा का अवसर हमें दिया, और हमारी लाज रख ली।"

बलभद्र सिंह ने उन दोनों की पीठ सहलाते हुए कहा—"किन्तु यह तो बताओ कि तुम दोनों कहाँ और कैसे अन्तर्धान हो गई थीं ?"

पार्वती ने उत्तर दिया—"महाराज, हम लोग उस जासूस को मारने के लिए कलूँगा के बाहर कुँए वाली सुरंग से निकली थीं। दो दिन तक भटकती रहीं। आज प्रातः काल हमने उनको ढूँढ़ निकाला।"

"वह कहाँ मिला ?"

"महाराज, वह उस झरने के पास मिला, जिसका जल पहाड़ियों को भेदता हुआ, कलूँगा के झरने में आता है। उसने फिरंगियों को उसका भेद बता कर पानी कटवा दिया था।"

"अरे, तभी हमारा झरना सूख गया था।"

"क्या ·····?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"हाँ, उस झरने में पानी न आने से हम प्यासों मरने लगे। दो दिनों तक प्यास से पीड़ित होते हुए हमने कलूँगा खाली नहीं किया। तीसरे दिन, यानी आज प्रातःकाल हमने अपने शेष सत्तर आदमियों के साथ कलूँगा छोड़ा और नीचे के झरने में जाकर जी भर पानी पिया। फिरंगी पलटन हमें टुकुर-टुकुर देखती रही। भूखे व्याघ्रों को छेड़ने का साहस उन्हें नहीं हुआ। हम थोड़ी देर उनके ललकारने और आक्रमण करने की प्रतीक्षा करते रहे, जब उन्होंने कोई छेड़-छाड़ नहीं की, हमने भी जंगल का रास्ता पकड़ा। बिना ललकारे हुए हम गोरखे युद्ध नहीं करते। हम बहुत धीरे-धीरे चलते रहे, लेकिन उन्होंने कोई शब्द नहीं कहा, और पाषाणवत् जहाँ के तहाँ खड़े रहे। मार्ग में हमें महाराज अमर सिंह की भेजी हुई कुमक मिली, और हमें आदेश मिला है कि हम लोग बनारस और गोरखपुर होते हुए काठमांडू जावें। हमने पूर्व का रास्ता पकड़ा। जंगलों से हम बाहर निकले थे कि इन फिरंगियों ने हम पर आक्रमण कर दिया, और युद्ध होने लगा। अब तो मैदान साफ हो गया है। हमारे साथियों ने सबको बीन-बीनकर मार डाला। मैं भी फिरंगियों से लड़ रहा था कि तुम लोगों ने देवी चंडिका की भाँति प्रकट होकर मेरी प्राणरक्षा की है।"

"महाराज आपके आशीर्वाद से हम दोनों ने पहले उस जासूस को समाप्त किया, और फिर फिरंगियों को मारा जो उस झरने पर पहरा दे रहे थे। महाराज, जब कलूँगा के झरने का पानी बंद हो गया था, तब आपने इसका कारण जानने का प्रयत्न नहीं किया? यदि आप उस सुरंग को खुलवा कर जिसे आपने जासूस के भागने के बाद बंद करवा दिया था, कारण ढूँढ़ते, तब आपकों प्यास से दुखित न होना पड़ता।"

"बेटी, 'विनाश काले विपरीत बुद्धिः' की लोकोक्ति के अनुसार हमने झरने का पानी बंद होने का कारण दैवी प्रकोप समझा था। हमारे किसी भी साथी को यह न सूझा कि फिरंगियों ने उसे बंद कर दिया है।"

"महाराज....!"

"बेटी, अब उस पर पश्चात्ताप या विचार करना अनावश्यक है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जो होनहार था वही हुआ। इसमें भी भगवान् का कोई रहस्य है। जो गत हो गया है, उस पर माथा-पच्ची करने से कोई लाभ नहीं। अब यह बताओ कि तुम्हारी प्रतिज्ञा पूर्ण हुई ?"

पार्वती ने बलभद्र सिंह के चरण स्पर्श करते हुए कहा—"आपके आशीर्वाद से फिरंगियों के एक सौ आठ मुण्डों की माला पूर्ण हो गई और लगभग आठ-दस अधिक हो गए हैं। यही मेरी गुरु-दक्षिणा आपके चरणों में समर्पित है।"

बलभद्र सिंह ने उसके सिर को सूँघते हुए स्निग्ध स्वर में कहा—"बेटी, इसे गुरुदक्षिणा न कह कर यदि वर-दक्षिणा कहा जाय तो अधिक उपयुक्त होगा। जो नैपाल अभी तक अपने वीर-पुरुषों के लिए विख्यात था, वह अब नारियों के शौर्य के लिए भी वन्दित होगा। जिस प्रकार महिषासुरमर्दिनी शक्ति-रूपिणी दुर्गा ने असुरों का विनाश किया था, उसी प्रकार तुमने इन फिरंगियों का वध किया है। तुम हमारे लिए सदैव वन्दिता रहोगी और तुम्हारी वन्दना नैपाल की जनता युगों-युगों तक करेगी। यही मेरा आशीर्वाद है, और देवाधिदेव पशुपतिनाथ की प्रत्यक्ष प्रेरणा है। जय पशुपति नाथ की !"

अब तक सभी गोरखे सैनिक उनके चारों ओर एकत्रित हो गये थे। उन्होंने भी पशुपतिनाथ की जयकार में मुक्तकंठ से योग दिया। समवेत निनाद वायु की तरंगों पर लहराता, कर्नल मावी को उसके पैशाचिक कृत्यों के प्रतिशोध की चेतावनी देता हुआ आकाश में व्याप्त हो फिरंगियों के पतन की सूचना देने लगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai